www.terapanthinfo.com

इस अंक में

अहिंसक-नैतिक चेतना का अग्रदूत पाक्षिक

अणुव्रत

वर्ष : 55 ■ अंक : 15 ■ 1-15 जून, 2010

संपादक : डॉ. महेन्द्र कर्णावट
सहयोगी संपादक : निर्मल एम. रांका

अणुव्रत में प्रकाशित रचनाकारों द्वारा व्यक्त विचारों से संपादक/प्रकाशक की सहमति आवश्यक नहीं है।

❑ सदस्यता शुल्क :

- एक प्रति : बारह रु.
- वार्षिक : 300 रु.
- त्रैवार्षिक : 700 रु.
- दस वर्षीय : 2000 रु.

❑ विज्ञापन सहयोग :

- द्वितीय मुख पृष्ठ 'रंगीन' : 10,000 रु.
- तृतीय मुख पृष्ठ 'रंगीन' : 10,000 रु.
- चतुर्थ मुख पृष्ठ 'रंगीन' : 10,000 रु.
- साधारण पृष्ठ 'पूरा' : 3,000 रु.
- साधारण पृष्ठ 'आधा' : 2,000 रु.

❑ सम्पर्क सूत्र :
अणुव्रत महासमिति
210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग,
नई दिल्ली--110002

दूरभाष : (011) 23233345
फैक्स : (011) 23239963

E-mail : anuvrat_mahasamiti@yahoo.com
Website : anuvratinfo.org

◆ महाप्रज्ञ : मेरी दृष्टि में	*आचार्य तुलसी*	4
◆ मौन हुआ मानवता का साधक		8
◆ सजल नेत्रों से दी अंतिम विदाई		9
◆ मानवता के हित चिंतक	*गुलाब कोठारी*	10
◆ एक युग बीत गया	*प्रो. दयानंद भार्गव*	11
◆ महानिर्वाण		12
◆ अंत तक अहिंसा का संदेश	*डॉ. सोहनलाल गांधी*	13
◆ लोकप्रियता के धनी	*डॉ. सोहनराज तातेड़*	14
◆ साथ जीने की राहों का अन्वेषण	*डॉ. निज़ामउद्दीन*	16
◆ ऐसो कौन मनुज जग माँहि	*सुरेश पंडित*	18
◆ विद्या वारिधि	*युवाचार्य महाश्रमण*	20
◆ शब्दातीत, विचारातीत, तर्कातीत व्यक्तित्व	*साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा*	21
◆ प्रज्ञा प्रवर को प्रणाम	*अमृत जैन*	22
◆ पुण्य स्मरण	*इकराम राजस्थानी*	22
◆ मर कर भी अमर	*जयनारायण गौड़*	25
◆ मानवता को प्रकाशित करने वाला महासूर्य	*विजयराज सुराणा*	26
◆ बड़े शौक से सुन रहा था जमाना	*मुनि दीपकुमार*	28
◆ हिंसा पर नियंत्रण के सफल उपक्रम	*मुनि जयंतकुमार*	29
◆ महावीर, महात्मा गांधी एवं महाप्रज्ञ	*निर्मल एम. रांका*	30

■ स्तंभ

◆ संपादकीय	2
◆ शुभाशीर्वाद	3
◆ श्रद्धा–सुमन	15, 23, 24
◆ श्रद्धांजलि	12, 25, 30
◆ कविता	27, 28
◆ अणुव्रत आंदोलन	31-40

www.terapanthinfo.com

संपादकीय

अंतिम प्रणाम

अध्यात्म विज्ञानी अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाप्रज्ञ नहीं रहे। 8 एवं 9 मई 2010 को सरदारशहर में आयोजित अणुव्रत चिंतन गोष्ठी में अणुव्रत संस्थानों के इतिहास, दर्शन एवं भावी व्यवस्थाओं को उद्घाटित कर यकायक वे लम्बी यात्रा पर प्रस्थान कर गये। दो दिवसीय अणुव्रत चिन्तन गोष्ठी में अणुव्रत के भविष्य को लेकर अणुव्रत अनुशास्ता ने जो कहा, जो निर्देश दिये एवं स्थितियों का जिस तरह से विश्लेषण किया उससे यह बात प्रमाणित हो गई कि **हर महापुरुष ने अपने जीवन के समापन काल में अद्भुत-महत्त्वपूर्ण बातें बोली हैं। इनमें से कुछ ने तो मृत्यु से परिचित करवाया, कुछ ने जीवन को परिभाषित किया और कुछ ने सत्य की व्याख्या की।** *आचार्य महाप्रज्ञ ने महाप्रयाण यात्रा पर जाने से पूर्व कहा*

''नैतिकता के बिना धर्म अधूरा है। अणुव्रत नैतिकता का आंदोलन है। चिंतन कहूं या चिन्ता। मेरी चिंता सुनो गृहस्थ जीवन में अणुव्रत का माँ-बाप कौन है? दफ्तरीजी एवं देवेन्द्र के बाद कौन? संस्थाओं के लिए निर्वाचित व्यक्तियों पर विश्वास नहीं।''

''हर व्यक्ति जीने की चाह रखता है, लेकिन बिन बुलाए दुःख आ जाता है और मृत्यु आ जाती हैं। अनंत सुखानुभूति करनी है तो भीतर देखना सीखो। भीतर अनंत दर्शन, अनंत ज्ञान, अनंत आनंद और अनंत शक्ति है। उस सुख का अहसास करने वाला बाहर के क्षणिक सुखों में नहीं उलझता। आत्मा ही सुख-दुःख की कर्ता है। न किसी के द्वारा दुःख दिया जाता है और न ही सुख। सुख-दुःख की संवेदना चेतन से होती है। अचेतन पदार्थ संवेदन नहीं करता है।''

आचार्य महाप्रज्ञ ने महाप्रयाण से पूर्व जो कहा उसका सार है अनुकूल-प्रतिकूल परिस्थितियों में अध्यात्म के साथ रहते हुए, समस्याओं का समाधान करो। ऐसा करते ही जीवन के साथ जन्म व मृत्यु दोनों सध जाएंगे।

मेरा सौभाग्य रहा कि बचपन पूज्यश्री की आँखों के सामने गुजरा। उन्हीं की सन्निधि में बैठ मैंने अध्यात्म का क ख ग सीखा। उनकी सरलता, निर्मलता, करुणा, वात्सल्य का एक बार नहीं अनेकों बार प्रसाद पाया। मेरी हर भूल पर उनका एक ही वाक्य निकला अभी बालक है, समझता नहीं है। मेरे पत्रों के संदर्भ में आपके पास शिकायतें पहुँची पर वही मौन वात्सल्य भाव रहा। मेरे में क्या देखते थे मैं आज तक नहीं समझ पाया पर आपके एक वाक्य ने मेरे जीवन की दिशा निर्धारित कर दी 'राजा का पुत्र राजा होता है, व्यापारी का बेटा व्यापारी होता है पर अणुव्रती का बेटा अणुव्रती होता है ऐसा देखने में बहुत कम आया है। देवेन्द्र का बेटा महेन्द्र याने अणुव्रती का बेटा अणुव्रती।' इस ब्रह्म वाक्य ने जीवन का मर्म बता, मुझे अणुव्रत मार्ग पर चलने को तत्पर कर दिया।

जाते-जाते विदा वेला में भी कुछ ऐसा ही आशीर्वाद मुझे दे गये। 8 मई 2010 की प्रातःवेला में (9 बजकर 15 मिनट पर) अणुविभा के अध्यक्ष तेजकरण सुराणा द्वारा कही गई बात पर पूज्यश्री ने मेरी ओर देखते हुए कहा 'यह बैठा है! यह बोलेगा और लड़ेगा। अणुव्रत का इतिहास महेन्द्र जानता है।' पूज्यप्रवर के इस वाक्य को सुन न सिर्फ मैं वरन् तेजकरणजी, निर्मलजी भी चौंके। गुरुदेव ने ऐसा क्या सोच कर कहा, मैं नहीं जानता। पर आज जब विचारता हूँ तो लगता है महापुरुष का कहा गया हर वाक्य अद्भुत होता है, किसी लक्ष्य को लिए हुए होता है। आपका यह अंतिम आशीर्वाद मेरी व्यक्तिगत निधि है जिसे जीवन के अंतिम क्षणों तक याद रखूँगा और अणुव्रत के लिए ही बोलूंगा-लड़ूंगा-मिटूंगा, यह विश्वास आपको दिलाता हूँ गुरुदेव! विदावेला में मेरा अंतिम प्रणाम धर्मपिता, ऋषि पुरुष, आचार्य महाप्रज्ञ को।

● **डॉ. महेन्द्र कर्णावट**

www.terapanthinfo.com

शुभाशीर्वाद

नथमल-नामगं सीसं, महापण्णं समप्पियं।
आयरियो तुलसी हं, उत्तराहिगारमप्पेमि।।1।।

मैं आचार्य तुलसी अपने महाप्रज्ञ और समर्पित शिष्य मुनि नथमल को अपना उत्तराधिकार सौंपता हूं।

णाणेणं दंसणेणं य, पेहाझाणेण संतयं।
विगासं कुणमाणो सो, चिरं अच्छउ सासणे।।2।।

ज्ञान, दर्शन और प्रेक्षा-ध्यान के द्वारा सतत विकास करते हुए युवाचार्य महाप्रज्ञ धर्म-शासन में दीर्घजीविता प्राप्त करें।

सतो दंतो सुई दक्खो, ओयंसी सुपइट्ठिओ।
गहीयनव्वदाइत्तो, चिरं अच्छउ सासणे।।3।।

शान्त, दान्त, शुचि, दक्ष, ओजस्वी और सुप्रतिष्ठित युवाचार्य महाप्रज्ञ अपने नए दायित्व को स्वीकार कर धर्म-शासन में दीर्घ-जीविता प्राप्त करें।

साहुणो साहुणीओ य, सावगा साविया तहा।
सम्मं आसासयंतो सो, चिरं अच्छउ सासणे।।4।।

साधु-साध्वियों और श्रावक-श्राविकाओं को पूर्ण रूप से आश्वस्त करते हुए युवाचार्य महाप्रज्ञ धर्म-शासन में दीर्घ-जीविता प्राप्त करें।

संघे णवणवायामा, नवुम्मेसा णवक्कमा।
णिच्चं उग्घाडयंतो सो चिरं अच्छउ सासणे।।5।।

धर्मसंघ में सदा नए-नए आयामों, उन्मेषों और अभिक्रमों का उद्‌घाटन करते हुए युवाचार्य महाप्रज्ञ धर्म-शासन में दीर्घ-जीविता प्राप्त करें।

● आचार्य तुलसी ●

(युवाचार्य श्री महाप्रज्ञ को पट्टाभिषेक के समय प्रदत्त आशीर्वाद)

www.terapanthinfo.com

एक व्यक्ति अपने समर्पण, अपने संकल्प और अपनी साधना से कितना बदल जाता है और कहां से कहां पहुँच जाता है, इसका प्रत्यक्ष निदर्शन है हमारे युवाचार्य महाप्रज्ञ, जिनकी इस यात्रा का प्रारम्भ मुनि नथमल के रूप में होता है।

महाप्रज्ञ : मेरी दृष्टि में

आचार्य तुलसी

दृष्टि वह पारदर्शी स्फटिक है, जिसके सामने से गुजरने वाला हर व्यक्ति अपना प्रतिबिम्ब वहां छोड़ देता है। बार-बार छोड़े गए बहुरूपी प्रतिबिम्ब एक रंग-बिरंगे गुलदस्ते के रूप में स्थिर हो जाते हैं और उनके आधार पर व्यक्ति के व्यक्तित्व का स्वाभाविक विश्लेषण होता रहता है। युवाचार्य महाप्रज्ञ का व्यक्तित्व भी मेरी दृष्टि पर इस प्रकार से अंकित हो चुका है, जिससे लगभग पाँच दशकों के संस्मरण अपनी व्यापक प्रस्तुति के लिए उतावले हो रहे हैं। उन सबका व्यक्तिकरण या लिपिकरण न तो सम्भव है और न अपेक्षित ही है। फिर भी मेरे मन में जिस स्थिति की अमिट छाप है, वह है 'अचिन्तित रूपान्तरण।' एक व्यक्ति अपने समर्पण, अपने संकल्प और अपनी साधना से कितना बदल जाता है और कहां से कहां पहुँच जाता है, इसका प्रत्यक्ष निदर्शन है हमारे युवाचार्य महाप्रज्ञ, जिनकी इस यात्रा का प्रारम्भ मुनि नथमल के रूप में होता है।

मुनि की भूमिका

वि.सं. 1987, शीतकाल का समय, मर्यादा-महोत्सव का उल्लास और माघ शुक्ला दशमी का दिन। स्वर्गीय गुरुदेव पूज्य कालूगणीजी ने एक साढ़े दस वर्षीय बालक नथमल को दीक्षित कर मुझे सौंप दिया। यह सौंपना एक शैक्ष मुनि को साधु-जीवन का प्रारम्भिक अवबोध कराने या अध्ययन कराने की दृष्टि से ही नहीं था, इसमें निहित थी जीवन के सर्वांगीण विकास की सम्भावनाओं को उभार देने की एक व्यापक दृष्टि। उस दिन से लेकर अब तक मुनि नथमलजी एक समर्पित शिष्य के रूप में मेरे पास रहे और मैं भी उनके सर्वात्मना समर्पित जीवन के रेखाचित्र में अपेक्षित रंग भरता रहा। मुनि नथमलजी की ग्रहणशीलता और मेरी सृजनधर्मिता के अन्योन्याश्रित संयोग ने उनको युवाचार्य महाप्रज्ञ की भूमिका तक पहुँचा दिया, जिसकी मैंने उस समय कोई कल्पना ही नहीं की थी।

कालूगणी की कृपा

महाप्रज्ञ अपने मुनि जीवन के प्रारम्भिक वर्षों में बहुत भोले थे। इन्होंने अपने खाने-पीने, घूमने-फिरने, बैठने-सोने, पहनने-ओढ़ने आदि के सम्बन्ध में कभी सोचने-विचारने का प्रयत्न ही नहीं किया। मैं जो कुछ कहता, उसे ये सहजभाव से कर लेते। भोजन कब करना है और क्या करना है? इस दैनंदिन कार्य में ये मेरे निर्देश की प्रतीक्षा करते रहते। वस्त्र कब सिलाने हैं और कब पहनने हैं, यह काम भी ये अपने आप नहीं करते थे। शीतकाल में स्वाध्याय करते-करते बिना ही वस्त्र ओढ़े तब तक सोते रहते, जब तक मैं इन्हें जगाकर वस्त्र ठीक ढंग से ओढाकर नहीं सुला देता। इनकी गति भी विलक्षण थी। कालूगणी बहुत बार इन्हें अपने सामने दस-बीस कदम चलने के लिए कहते और जब ये टेढे-मेढे कदम भरते हुए गुरुदेव के निकट से गुजरते तो आपको बड़ा अच्छा लगता। कालूगणी भोले-भाले मुनियों को बहुत वात्सल्य देते थे। महाप्रज्ञजी उन भद्र मुनियों की पंक्ति में थे, जिन्हें गुरुदेव का अतिशायी स्नेह प्राप्त था। इन्हें वे बंगू, शंभू, वल्कलचीरी, हाबू या नाथू कहकर पुकारते थे।

स्थितिपालकता

महाप्रज्ञ ने अपने सहपाठी मुनि बुधमलजी के साथ मेरे पास अध्ययन शुरू किया। इनके अध्ययन के प्रारम्भिक क्रम में मैं स्वयं इनके साथ बैठता और आधा-आधा घण्टा तक इनके साथ-साथ पद्यों का उच्चारण करता था। ऐसा करने का मेरा ही उद्देश्य था कि इनका उच्चारण अशुद्ध न रहे। याद करने की क्षमता इसमें शुरू से ही ठीक थी, पर उस समय समझ विकसित नहीं थी। बुधमलजी इनसे अच्छा समझते थे। मेरे मन में कई बार आता था कि ये छोटी-छोटी बात को ही नहीं समझते हैं तो आगे जाकर क्या करेंगे? मैं बहुत बार इन्हें समझाने का प्रयत्न करता पर सफलता नहीं मिली। तीन साल तक ये मुझे बराबर असफल करते रहे।

अप्रत्याशित बदलाव

महाप्रज्ञ की दीक्षा के तीन-चार साल बाद कालूगणी जोधपुर की यात्रा पर थे। वहां इनकी आंखें बहुत अधिक खराब हो गईं। पहले भी आंखों की पीड़ा कई बार हो जाती थी। कभी आँखों में दाने हो जाते, कभी आंखे दुःखने लगती, कभी कुछ और हो जाता। इनकी आंखें ठीक करने के लिए मैंने बहुत प्रयत्न किए। कभी पिप्पली, कभी नींबू का रस, कभी शहद तो कभी कुछ, पर विशेष लाभ नहीं हुआ। उस समय गर्मी का मौसम था। कालूगणी को जसोल, बालोतरा आदि क्षेत्रों की ओर जाना था। मैंने गुरुदेव से निवेदन किया नथमलजी की आंखें बहुत दुःख रही हैं, इन्हें यहीं छोड़ दिया जाए तो ठीक रहेगा। कालूगणी ने इनको वहां मुनि

www.terapanthinfo.com

श्री हेमराजजी के पास छोड़ दिया। जोधपुर कालूगणी वापस पधारे तब तक ढाई महीनों का समय लग गया। यह समय इनके जीवन में एक बहुत बड़े रूपान्तरण का समय था। वह क्षेत्र परिपाकी क्षयोपशम था या अवस्था परिपाकी क्षयोपशम, कुछ कहा नहीं जा सकता। पर जब हम आए तो वे हमें सर्वथा बदले हुए मिले। यह बदलाव बाहर और भीतर दोनों ओर से घटित हुआ था। उस ढाई मास के छोटे से काल में इनकी समझ काफी विकसित हो गई। जो कुछ पहले का सीखा हुआ था, उसे पक्का, शुद्ध और व्यवस्थित कर लिया गया। ऐसा प्रतीत हो रहा था कि ये एक अबोध शिशु की भूमिका से ऊपर उठकर आत्म-बोध की भूमिका तक पहुँच गए थे।

मेरी शाला के प्रथम छात्र

नथमलजी, बुधमलजी आदि मेरी छोटी-सी पाठशाला के प्रथम छात्र थे। धीरे-धीरे छात्रों की संख्या में वृद्धि होती रही। कई मुनि उस क्रम में आए और चले गए पर महाप्रज्ञ बराबर बने रहे। उस समय इनके बारे में मेरी यह कल्पना नहीं थी कि इनमें कोई विलक्षणता है। उस समय न तो इनमें प्रतिभा का इतना निखार था और न ही इनके बारे में ऐसी कोई सम्भावना थी। मेरे मन पर इनकी किसी बात का कोई प्रभाव था तो वह था इनका सहज समर्पण। मेरा यह दृढ़ विश्वास है कि इनके निर्माण में इनके अपने समर्पण का स्थान सर्वोपरि रहा है। जैसा कहें वैसा करना, इस एक सूत्र ने इनको विकास की दिशा में अग्रसर किया। जोधपुर चातुर्मास के बाद मुझे भी इनसे कुछ आशा बंधी, जो उदयपुर और गंगापुर, इन दो चातुर्मासों में फलित होती हुई सामने आई।

गंगापुर-चातुर्मास के प्रारम्भ तक ये अविच्छिन्न रूप से मेरे पास रहे। उसके बाद पूज्य गुरूदेव कालूगणी का स्वर्गवास होने के बाद मेरी स्थिति बदल गई। अब ये सेवाभावीजी की देखरेख में रहने लगे। वे इनकी संभाल पूरी करते थे, फिर भी ये अनमने-से हो गए। इन्हें अकेलापन-सा अनुभव होने लगा। इस कारण सहज ही ये उदास रहने लगे। मैंने एक दिन इनको अपने पास बुलाकर पूछा- तुम उदास क्यों हो? ये बोले मेरा मन नहीं लगता। मैंने इन्हें आश्वस्त करते हुए कहा कि तुम मेरे पास आया करो और अपने अध्ययन के क्रम को चालू रखो। इसके बाद मैंने इनके विकास की दृष्टि से एक विशेष लक्ष्य बनाया और समय-समय पर इन्हें प्रेरणा देता रहा।

शिक्षा में नये आयाम

कालूगणी के स्वर्गवास के बाद बीकानेर-चातुर्मास में मैंने दर्शन और संस्कृत काव्य-साहित्य का विशेष अध्ययन शुरू किया। हम लोग (मैं, मुनि धनराजजी, मुनि चन्दनमलजी आदि) पण्डित रघुनन्दनजी शर्मा के पास अपना अध्ययन चलाते। भाषा और व्याकरण की दृष्टि से पंडितजी का ज्ञान विशिष्ट था, पर सैद्धान्तिक और दार्शनिक परिभाषाओं में वे रुक जाते। वहां हम लोग अपनी जानकारी का उपयोग करते। इस प्रकार एक मिले-जुले प्रयत्न से हमारी, दर्शन के संस्कृत-ग्रंथों (प्रमाण, नय-तत्त्व, लोकालंकार आदि) की यात्रा निर्बाध रूप से चल रही थी। उस समय मैंने महाप्रज्ञ आदि

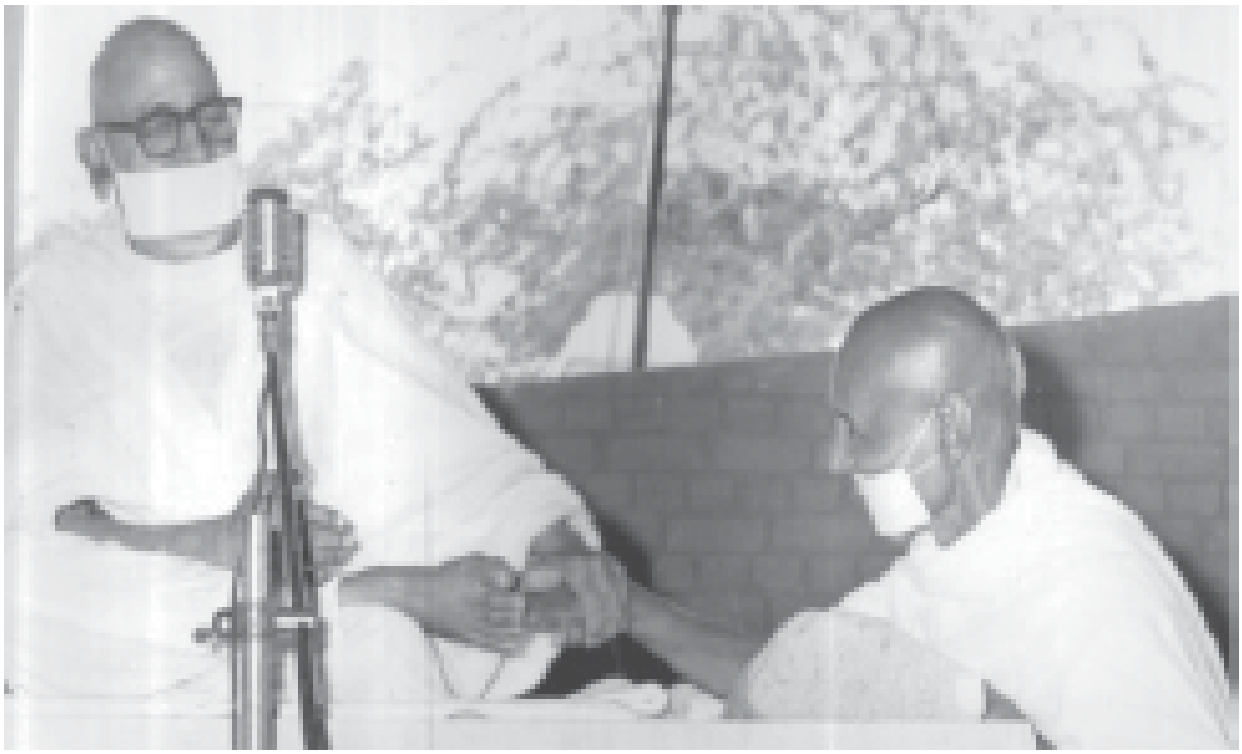

www.terapanthinfo.com

से कहा कि तुम भी अध्ययन के समय साथ रहो। कुछ समझ में आए या न आए सुनते रहो सुनते-सुनते एक क्रम बन गया।

वि.सं. 2001 का हमारा चातुर्मास सुजानगढ़ था, उस समय मेरे मन में आया कि हमारे धर्मसंघ में इतनी साधु-साध्वियां हैं, इनमें कोई भी उच्चकोटि का चिन्तक, लेखक और वक्ता नहीं है। काश! हमारे साधु-साध्वियां भी हिन्दी में बोल और लिख सकते। इसी बीच शुभकरण दसानी ने मुझे बताया कि कुछ मुनि हिन्दी में बहुत अच्छा लिखते हैं कविताएं भी, निबन्ध भी, पर आपसे संकोच करते हैं, इसलिए बताते नहीं। उनमें महाप्रज्ञ भी एक थे। मैंने इनकी कविताओं को देखा, निबन्धों को पढ़ा, प्रसन्नता हुई। इसके बाद समय-समय पर संस्कृत, हिन्दी और प्राकृत-भाषा में बोलने, लिखने, श्लोक बनाने का अभ्यास चलता रहा। यथा-समय प्रतियोगिताओं का आयोजन, प्रोत्साहन और प्रेरणा ने थोड़े समय में अकल्पित सफलता का द्वार खोल दिया।

वि.सं. 2002 राजगढ़ चातुर्मास में एक विद्वान व्यक्ति सम्पर्क में आया। उसने तेरापंथ के बारे में साहित्य देखना चाहा। उस समय तक साहित्य-लेखन की कोई बात ध्यान में नहीं थी। छोगमलजी चोपड़ा द्वारा लिखित तेरापंथ की शार्ट हिस्ट्री नामक छोटी-सी पुस्तक हमारे धर्मसंघ का साहित्य था। मुझे एक अभाव महसूस हुआ। मैंने उसी समय इनको बुलाकर कुछ ट्रैक्ट तैयार करने के लिए कहा। उन्नीसवीं सदी का नया आविष्कार, धर्म और लोक व्यवहार, अहिंसा आदि कुछ ट्रैक्ट तैयार हुए, मन को थोड़ा सन्तोष मिला।

वि.सं. 2003 श्रीडूंगरगढ़ चातुर्मास में धर्मदेव विद्यावाचस्पति दिल्ली से दर्शन करने आए थे। वे एक अच्छे वक्ता थे। उन्होंने अपने वक्तव्य में संस्कृत श्लोकों का धारावाहिक और प्रभावशाली उपयोग किया, मुझे अच्छा लगा। मैंने उसी दिन महाप्रज्ञजी आदि कुछ संतों को बुलाकर वक्तृत्व-कला के विकास तथा संस्कृत में धाराप्रवाह बोलने के लिए निरंतर अभ्यास करने का संकल्प करा दिया। अभ्यास इतना व्यवस्थित और परिपक्व हुआ कि जिसकी मुझे आशा नहीं थी।

कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि वि.सं. 2006 तक महाप्रज्ञ इस रूप में तैयार हो गए कि हर क्षेत्र में ये मेरे सहयोगी बन गए। एक ओर ये मेरे चिन्तन के सफल भाष्यकार थे तो दूसरी ओर ये मेरे हर स्वप्न को आधार देने के लिए कटिबद्ध हो गए। यद्यपि किसी नए कार्य को प्रारम्भ करने में ये हिचकिचाते थे, किन्तु मेरे द्वारा प्रारब्ध-कार्य को परिसम्पन्नता तक पहुँचाना इनकी सहज प्रवृत्ति हो गई थी।

बीज का विस्तार

मेरे युग तक पहुँचते-पहुँचते अठारह-उन्नीस दशकों की लम्बी अवधि पार करने पर भी तेरापंथ के सिद्धान्त लोगों के गले नहीं उतर रहे थे। मैंने पाया आचार्य भिक्षु का तत्त्व-चिन्तन मौलिक है। उनकी प्रारूपणा विलक्षण है। लोगों ने अब तक भी उसकी गहराई तक पहुँचने का प्रयास नहीं किया है। यही कारण है कि वे तेरापंथ की सैद्धान्तिक मान्यताओं का विरोध कर रहे हैं। यदि हम उन मान्यताओं को युगीन सन्दर्भ में प्रस्तुत कर सकें तो विरोधी वातावरण को ठीक करने में जो शक्ति और समय लगता है, उसका उपयोग किसी रचनात्मक काम में हो सकता है। मैंने अपने चिन्तन के बीज महाप्रज्ञ के सामने विकीर्ण कर दिए। उसके बाद इन्होंने उन बीजों को विस्तार दिया। भिक्षु-विचार-दर्शन तैयार होकर आ गया। प्रबुद्ध लोगों की धारणाएँ बदलीं। धीरे-धीरे विरोध का कुहरा छँट गया और सत्य का सूरज दुगुने तेज से दमकने लगा।

अणुव्रत आन्दोलन को लेकर भी समाज में एक तूफान खड़ा हो गया था। इसकी क्या जरूरत है? अणुव्रत के नाम पर मिथ्यादृष्टि को सम्यकदृष्टि बनाया जा रहा है, सन्त किसी आन्दोलन के प्रवर्तक नहीं हो सकते आदि अनेक मुद्दों को लेकर एक हलचल हुई थी। नए मोड़ को लेकर भी काफी बवंडर हुआ। उस सन्दर्भ में मैंने अपने विचार इनको बता दिए। इन्होंने उन विचारों के साथ सैद्धान्तिक सामंजस्य स्थापित कर उन्हें संतुलित रूप में प्रस्तुत कर दिया। प्रसंग अणुव्रत का हो या अन्य किसी सिद्धान्त का, उसे तुलनात्मक दृष्टि से, व्यावहारिक दृष्टि से और सैद्धान्तिक दृष्टि से विस्तृत विवेचन के साथ प्रतिपादित कर उसका औचित्य सिद्ध कर देते। इसके बाद हमारे धर्मसंघ में जितने परिवर्तन हुए, प्राचीन धारणाओं में जितना परिमार्जन हुआ, उन सबमें ये मेरे पूरे सहयोगी रहे। किसी भी परिस्थिति में मैंने इनको अपने विचारों से प्रतिकूल होते हुए नहीं देखा।

मेरे स्वप्न साकार हुए

मैं एक स्वप्नद्रष्टा हूं। मेरे ये स्वप्न रात को नींद में नहीं आते। मैं जागृत अवस्था में सपने देखता हूं। दिन हो या रात, जब भी अवकाश मिलता है, मैं नई कल्पनाएँ करता हूं और इन्हें साकार करने के लिए महाप्रज्ञ को आमंत्रित कर लेता हूं। मेरी ये कल्पनाएँ शिक्षा, साहित्य, शोध आदि अनेक विषयों से सम्बन्धित हैं। मैं यहां कुछ कल्पनाओं को उल्लिखित कर रहा हूं।

वि.सं. 2007 की बात है। उस समय तक हमारे धर्म-संघ में एक लेख- पत्र पर प्रत्येक साधु को प्रतिदिन हस्ताक्षर करने होते थे। लेख-पत्र की धाराएँ बहुत उपयोगी थीं,

हमारे धर्मसंघ में जितने परिवर्तन हुए, प्राचीन धारणाओं में जितना परिमार्जन हुआ, उन सबमें ये मेरे पूरे सहयोगी रहे। किसी भी परिस्थिति में मैंने इनको अपने विचारों से प्रतिकूल होते हुए नहीं देखा।

www.terapanthinfo.com

पर वे थीं ठेठ राजस्थानी भाषा में। भाषा युगानुरूप नहीं थी। अतः उस लेखपत्र को भाषान्तरित करने की बात सूझी और वह काम इनको सौंप दिया। प्रश्न उठा कि लेख-पत्र को बदलने का क्या उद्देश्य है? उद्देश्य स्पष्ट था, उसे सन्तों को बताकर पहले संस्कृत-भाषा में लेख-पत्र का रूपान्तरण हुआ। बाद में उसे हिन्दी में कर दिया और हस्ताक्षर करने के स्थान पर प्रतिदिन प्रातःकाल उसका प्रत्यावर्तन करने का क्रम स्थिर कर दिया।

सामयिक साहित्य-सृजन के साथ मैंने सैद्धान्तिक एवं दार्शनिक साहित्य- निर्माण की अपेक्षा अनुभव की। मैंने इनके सामने अपने मत की बात रखी। इन्होंने मेरी अनुभूति को अधिक तीव्रता से अनुभव किया और काम शुरू हो गया। मैं लिखाता गया और ये लिखते गए। लिखने के बाद उसे विस्तृत और व्यवस्थित कर दिया। जैन-सिद्धान्त-दीपिका और भिक्षु-न्याय-कर्णिका, ये दो ग्रन्थ तैयार हो गए।

वि.सं. 2005 तक हमारे साधु-साध्वियों के अध्ययन हेतु कोई पाठ्यक्रम नहीं था। रूस की एक पत्रिका में मैंने वहाँ का पाठ्यक्रम देखा और तत्काल इन्हें बुलाकर कहा अपने यहाँ भी कोई निश्चित पाठ्यक्रम होना चाहिए। मेरा संकेत इनके लिए आलम्बन था। कुछ ही समय में व्यवस्थित पाठ्यक्रम तैयार हो गया और साधु-साध्वियों ने उसके आधार पर अध्ययन शुरू कर दिया। समय-समय पर अपेक्षित संशोधन के लिए स्तरीय शिक्षा का क्रम चल पड़ा जो अब तक चल रहा है।

महाराष्ट्र के मंछर गाँव में आहार के बाद धर्मदूत नामक पत्र के पन्ने पलट रहा था। सहसा मेरा ध्यान केन्द्रित हो गया। वहां बौद्ध-पिटकों के संपादन की सूचना थी। एक क्षण का विलम्ब किए बिना मैंने इनको बुला लिया और पत्र का उल्लेख करते हुए कहा क्या हम भी जैन-आगमों का सम्पादन नहीं कर सकते? नहीं क्यों? आपकी कृपा से सब कुछ कर सकते है। महाप्रज्ञ के एक वाक्य ने मुझे आश्वस्त कर दिया। फिर भी इनके धैर्य की थाह पाने के लिए मैंने कहा काम तो बहुत बड़ा है। कैसे हो सकेगा? बिना एक पल सोचे ये बोले ऐसी क्या बात है? आप जो चाहेंगे, वह काम हो जाएगा।

उस समय आगम-सम्पादन के कार्य का न तो हमें अनुभव था और न ही कोई विज्ञ व्यक्ति ही हमारे सामने था। हमने सोचा पाँच वर्ष में सारा काम हो जाएगा। उसी वर्ष काम शुरू भी कर दिया। काम करने का अनुभव जैसे-जैसे बढ़ा, हमें लगा कि यह काम पाँच क्या पचास वर्षों में भी पूरा नहीं हो सकेगा। अब तो ऐसा लगता है कि काम की कोई सीमा है ही नहीं। जितना काम करते हैं, उससे अधिक काम की नई सम्भावनाएं खुलती रहती हैं। ऐसा होने पर भी इनको काम भार नहीं लग रहा है। बड़ी दत्तचित्तता से आगे बढ़ रहे हैं।

साधना के क्षेत्र में भी एक अभाव-सा महसूस हो रहा था। सतरह-अठारह वर्ष पूर्व मैंने इनके सामने चर्चा की- जैनों में कोई स्वतंत्र साधना-पद्धति नहीं है। भगवान् महावीर का जीवन, साधना का जीवन्त प्रतीक रहा है, किन्तु वर्तमान में कहीं भी उसका व्यवस्थित उल्लेख या प्रयोग नहीं है। क्या मैं आशा करूं कि साधना की इस अवरूद्ध धारा को हम आगे बढ़ा सकते हैं? उस दिन से एक लक्ष्य बना। अध्ययन और प्रयोग-प्रयोग और अध्ययन। निष्कर्ष के रूप में आज प्रेक्षाध्यान की पद्धति हमारे यहां प्रचलित हो गई।

और भी अनेक घटनाएं है जो महाप्रज्ञ के समर्पण-भाव को उजागर करने वाली हैं। उन सबके आधार पर यही कहा जा सकता है कि मैंने इनको जिस रूप में ढालना चाहा, ये ढलते गए। मैंने इनसे जो अपेक्षाएं कीं, ये पूरी करते गए। हमारे बीच में शिक्षक एवं विद्यार्थी का जो सम्बन्ध था, वह आगे जाकर गुरु-शिष्य के रूप में और फिर आगे चलकर अद्वैत रूप में स्थापित हो गया। अब मुझे ऐसा प्रतीत नहीं होता कि ये मुझसे भिन्न कोई व्यक्ति हैं। जब से मैंने इनमें अपना उत्तराधिकार नियोजित किया है, मैं इनमें अपना ही रूप देखता हूँ। अपने ही प्रतिरूप को मैं प्रशस्ति की दृष्टि से देखूं, अपेक्षित नहीं लगता क्योंकि इनकी प्रशस्ति मेरा अपना आत्मख्यापन होगा। इस दृष्टि से कुछ तथ्यों की प्रस्तुति का काम पूरा कर मैं अपने अग्रिम स्वप्न संजोने में लग रहा हूं।

रचनाकाल : 1979

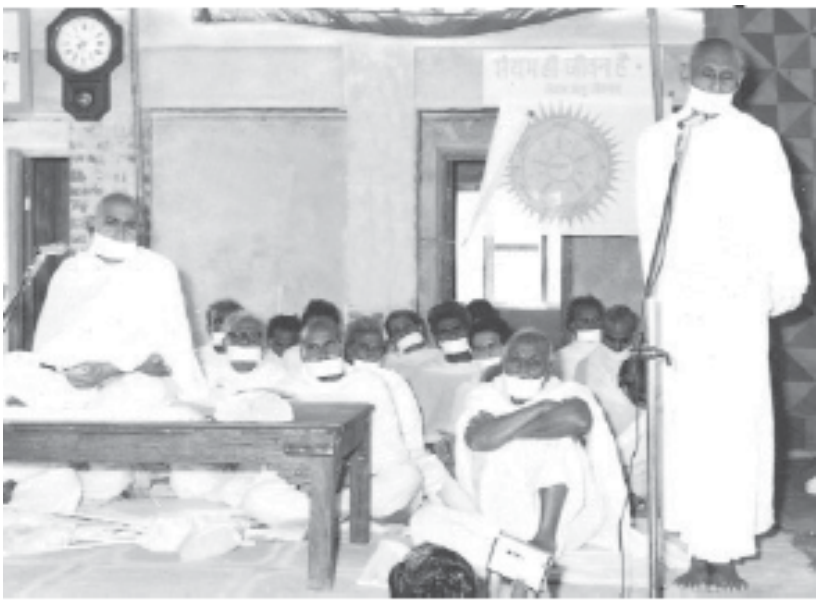

www.terapanthinfo.com

आचार्य महाप्रज्ञ, एक ऐसा व्यक्तित्व जिसने अपना सारा जीवन मानवता के कल्याण में समर्पित कर दिया। उन्होंने संसार को प्रेक्षाध्यान के रूप में ध्यान की वैज्ञानिक पद्धति दी जो मानव को अन्तस से परिचित करवाती है, तो जीवन विज्ञान के रूप में ऐसा पाठ्यक्रम दिया जो मानव के आध्यात्मिक, चारित्रिक विकास की नींव रखता है। समाज में बढ़ रहे वैमनस्य से विचलित अहिंसा का यह पुजारी अहिंसा यात्रा पर निकला और सम्प्रदायों में सद्भाव बढ़ाने के लिए अनूठे प्रयास किए। ऐसे मौन साधक युगप्रर्वतक को शत शत नमन्।

मौन हुआ मानवता का साधक

आचार्य महाप्रज्ञ का जन्म 14 जून 1920 को झुंझुनूं जिले के टमकोर में चौरड़िया परिवार में हुआ। पिता तोलाराम व माता बालूदेवी ने शुरुआत में आचार्य महाप्रज्ञ को नथमल नाम दिया। जैन श्वेताम्बर तेरापंथ परिवार में जन्मे महाप्रज्ञ ने महज ढाई माह की उम्र में ही अपने पिता को खो दिया और उसके बाद महाप्रज्ञ का लालन-पालन माता बालू ने ही किया। माता बालूदेवी धार्मिक प्रवृत्ति की थीं, जिसके चलते शुरुआत से ही महाप्रज्ञ की धार्मिक कर्मों में रूचि रहने लगी।

अणुव्रत आंदोलन :

अपने गुरु और जैन श्वेताम्बर तेरापंथ के नवम् अधिशास्ता आचार्य तुलसी के 1 मार्च 1949 में शुरू किए गए अणुव्रत आंदोलन में आचार्य महाप्रज्ञ की महती भूमिका रही। इस अभियान का मुख्य उद्देश्य सामाजिक और राजनैतिक अहिंसात्मक विश्व की स्थापना करना था।

यूं कहलाए महाप्रज्ञ :

महाप्रज्ञ की सोच-विचार, धार्मिक ज्ञान से आचार्य तुलसी काफी प्रभावित थे। इन्हीं विशेषताओं को देखते हुए आचार्य तुलसी ने 12 नवम्बर 1978 को मुनि नथमल को महाप्रज्ञ की उपाधि से अलंकृत किया।

प्रेक्षाध्यान :

आचार्य महाप्रज्ञ ने ध्यान से वैज्ञानिक पद्धति के आधार पर व्यक्ति की अनासक्त चेतना को उजागर करने के लिए प्रेक्षाध्यान का प्रतिपादन किया। जिसे उन्होंने विधिवत रूप से 3 मार्च 1977 को प्रारम्भ किया। आचार्य महाप्रज्ञ ने ध्यान, आध्यात्मिकता, मन्त्रज्ञ, अनेकांत और अहिंसा के सिद्धान्तों पर भरपूर साहित्य का सृजन किया।

अहिंसा यात्रा :

विश्वभर में हो रहे आतंककारी हमले, साम्प्रदायिक झगड़े और आपसी मतभेदों के बीच आचार्य महाप्रज्ञ ने 5 दिसम्बर 2001 को राजस्थान के सुजानगढ़ से अहिंसा यात्रा की शुरुआत की। अहिंसा यात्रा गुजरात से महाराष्ट्र, दमन, मध्यप्रदेश, हरियाणा, दिल्ली, उत्तरप्रदेश, पंजाब व चंड़ीगढ़ के कुछ इलाकों में होते हुए 4 जनवरी 2009 को उसी स्थान पर आकर समाप्त हुई, जहां से यह शुरू हुई थी। अहिंसा यत्रा ने देशभर के 87 जिलों के 2400 गांवों-कस्बों में जाकर लोगों को अहिंसा का संदेश दिया। अहिंसा यात्रा के दौरान वे किसानों, गरीबों और आम आदमी के सीधे सम्पर्क में आए।

फ्यूरेक :

देश की धार्मिक सद्भावना को मजबूती देने के लिए 15 अक्टूबर 2003 को सूरत में आचार्य महाप्रज्ञ के नेतृत्व में एक शीर्ष धर्म गुरुओं का सम्मेलन आयोजित हुआ तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम सम्मेलन के अध्यक्ष थे। इस सम्मेलन में हुई चर्चा को सूरत आध्यात्मिक घोषणा (एसएसडी) के नाम से जाना जाता है। जिसके तहत पांच सूत्रीय कार्ययोजना बनाई गई। इन उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए फाउण्डेशन फॉर यूनिटी ऑफ रिलिजियस एण्ड एनलाइटेण्ड सिटीजनशिप (फ्यूरेक) की स्थापना की गई। इसे राष्ट्रपति कलाम ने आचार्य महाप्रज्ञ के जन्मदिवस पर 15 जून 2004 को राष्ट्रपति भवन में शुरू किया।

राजस्थान पत्रिका से साभार, 10 मई 2010

संक्षिप्त परिचय

जन्म स्थान : टमकोर (झूंझुनूं-राज.)
जन्म तिथि : 14.06.1920
पिता : श्री तोलाराम चोरड़िया
माता : श्रीमती बालुदेवी चोरड़िया
सांसारिक नाम : नथमल
दीक्षा स्थल : सरदारशहर (चुरु-राज.)
दीक्षा प्रदाता : आचार्य कालूगणी
शिक्षा गुरु : आचार्य तुलसी
महाप्रज्ञ अलंकरण : 12 नवम्बर 1978
युवाचार्य पद : 4 फरवरी 1979, राजलदेसर
आचार्य पद : 5 फरवरी 1995, दिल्ली
युगप्रधान : 23 जनवरी 1999, टोहाना
महाप्रयाण : 9 मई 2010, सरदारशहर

www.terapanthinfo.com

सजल नेत्रों से दी अंतिम विदाई

विश्व समस्याओं का समाधान कर सम्पूर्ण विश्व को प्रकाशित करने वाला महासूर्य 9 मई 2010 को सरदारशहर में अस्त हो गया। मानवता के मसीहा अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाप्रज्ञ का आज दोपहर 2.55 बजे अचानक हृदय गति रुक जाने से महाप्रयाण हो गया। उन्होंने प्रातः 9.55 से 10.15 बजे तक धर्मसभा को संबोधित किया तथा प्रातः 11 से 12.20 तक अणुव्रत चिन्तन गोष्ठी को सान्निध्य प्रदान किया। दोपहर 2 बजे आचार्य महाप्रज्ञ के अचानक दिल का दौरा पड़ा और 2.55 पर अपनी देह का त्याग कर अनंत में विलीन हो गए।

आचार्य महाप्रज्ञ के महाप्रयाण के बाद उनके उत्तराधिकारी आचार्य महाश्रमण ने साप्ताहिक अनुष्ठान करने की घोषणा की। इस अनुष्ठान में नमस्कार महामंत्र ''मंगलम् भगवान वीरो महाप्रज्ञोस्तु मंगलं'' पद्य का जप सात दिनों तक देशभर में किया गया।

देवलोक गमन उपरांत 10 मई दोपहर 3 बजे महाप्रयाण यात्रा प्रारंभ करने एवं सायं 6.30 बजे अंतिम संस्कार करने का क्रम निर्धारित हुआ। उनकी पार्थिव देह को अंतिम दर्शनों के लिए गधैया के नोहरे में स्थित श्रीसमवसरण में रखा गया। आचार्य महाप्रज्ञ का जन्म राजस्थान के झुंझनूं जिले के टमकोर गांव में 16 जून, 1920 को चोरड़िया (ओसवाल) परिवार में हुआ था। 10 वर्ष की आयु में तेरापंथ के अष्टमाचार्य श्री कालूगणी के द्वारा उन्होंने जैन मुनि दीक्षा स्वीकार की थी। जब वे 59 वर्ष के हुए, तेरापंथ के नवमाचार्य आचार्य तुलसी ने उन्हें युवाचार्य मनोनीत किया। सन् 1995 में दिल्ली में आचार्य तुलसी ने उन्हें आचार्य पद दिया। सन् 1997 में आचार्य तुलसी के स्वर्गवास बाद वे धर्मसंघ के सर्वोच्च धर्मनेता बने। 14 वर्ष के अपने यशस्वी आचार्यकाल में उन्होंने भारत के अनेक प्रांतों की प्रभावपूर्ण अहिंसा यात्रा की।

अहिंसा यात्रा में 80 लाख लोगों ने सहभागिता दर्ज करा आचार्य महाप्रज्ञ के प्रति न केवल श्रद्धा अभिव्यक्त की अपितु अहिंसा को प्रतिष्ठित करने के लिए एकजुटता का भी परिचय दिया। अहिंसा यात्रा में देश के ख्यातिलब्ध धर्मगुरुओं ने सम्मलित होकर नैतिकता एवं अहिंसा के प्रति निष्ठा प्रदर्शित की। अहिंसा यात्रा के प्रणेता आचार्य महाप्रज्ञ ने अपने 90 वर्षीय जीवन में 70 हजार किलोमीटर की पदयात्रा कर नैतिकता और अहिंसा का संदेश प्रसारित किया।

आचार्य महाप्रज्ञ 20वीं 21वीं शताब्दी के महान आध्यात्मिक संत होने के साथ एक सुप्रसिद्ध साहित्यकार थे। उन्होंने 300 से अधिक विद्वतापूर्ण पुस्तकों का सृजन किया। जैन आगमों के वे यशस्वी संपादक रहे। आगमों का आधुनिक शैली एवं विज्ञान सिद्ध तथ्यों के साथ अनुवाद और भाष्य प्रस्तुत किया। योग एवं ध्यान परम्परा के वे पुनरुद्धारक हुए। उनके द्वारा प्रणीत प्रेक्षाध्यान पद्धति आज भी चर्चा का विषय बनी हुई है। जीवन विज्ञान के रूप में आचार्य महाप्रज्ञ ने शिक्षा जगत को अवदान प्रदत्त कर शिक्षा के स्वरूप को परिपूर्णता प्रदान की।

आचार्य महाप्रज्ञ ने देश की नींव को खोखली करने वाली मूलभूत समस्याओं पर राजनीतिज्ञों का न केवल ध्यान आकृट किया बल्कि उनका समाधान प्रदान कर मानव जाति का उद्धार भी किया। उन्होंने वर्तमान अर्थशास्त्र को समस्याओं के समाधान करने में सक्षम न मानते हुए सापेक्ष अर्थशास्त्र के रूप में एक नया प्रारूप प्रस्तुत किया।

अंतिम यात्रा में एक लाख से अधिक श्रद्धालुओं ने आचार्य महाप्रज्ञ को अश्रुपूरित आँखों से विदाई दी। अंतिम यात्रा पाँच किलोमीटर लम्बी थी। राजकीय सम्मान के साथ अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाप्रज्ञ की अंत्येष्टी की गई। अंतिम यात्रा में पूर्व राष्ट्रपति डॉ. कलाम, मुख्यमंत्री अशोक गहलोत, निवर्तमान मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे सिंधिया, केन्द्रीय ग्रामीण मंत्री सी.पी.जोशी सहित कई राजनेता उपस्थित थे।

www.terapanthinfo.com

मानवता के हित चिंतक

गुलाब कोठारी

इस युग में आचार्य तुलसी स्वयं महाप्रज्ञजी में प्रतिष्ठित हो गए। आचार्य महाप्रज्ञ उस समर्पित आत्मा का नाम है, जिनकी आत्मा में आज भी आचार्य तुलसी ही तरंगित है। उनके ही प्रतिबिम्ब को हम आचार्य महाप्रज्ञ कहते हैं। शरीर आचार्य और आत्मा रूप में महाप्रज्ञ। एक शरीर में दोनों के दर्शन संभव बन गए। हम इन दोनों के बीच अर्द्धनारीश्वर की अवधारणा का दर्शन कर सकते हैं।

राष्ट्र संत आचार्य महाप्रज्ञ अध्यात्म चेतना के संत थे, प्रेक्षा ध्यान के प्रयोगधर्मी थे और पुरुष रूप में एक विज्ञानात्मा थे। मैं उनको चलती-फिरती प्रयोगशाला एवं चल-विश्वविद्यालय मानता रहा हूं। धर्म के नित नए प्रयोग और मानव मन का रूपान्तरण ही उनके अहिंसा अभियान का मूल था। जहां भी उनका चातुर्मास होता था, पूरा वातावरण एक प्रयोगशाला जैसा बन जाता था। उन्होंने जैविक मानव सम्प्रदाय को अन्तस में प्रतिष्ठित होने को प्रेरित किया। व्यक्ति का निजीत्व से परिचय कराने के प्रयोग किए। व्यक्ति हजारों के बीच भी रह सके और साथ-साथ स्वयं अकेला भी। इसीलिए वे सदा सम्प्रदाय से ऊपर उठकर सम्पूर्ण मानवता को एक सूत्र में बांधने की बात करते थे।

उनका मुझे लगभग 35 वर्षों का सान्निध्य प्राप्त हुआ। उनको पास से देखने-जानने का अवसर खूब मिला। गुरु-शिष्य परम्परा का ऐसा अनूठा उदाहरण और वह भी इस युग में! आचार्य तुलसी स्वयं महाप्रज्ञजी में प्रतिष्ठित हो गए। आचार्य महाप्रज्ञ उस समर्पित आत्मा का नाम है, जिनकी आत्मा में आज भी आचार्य तुलसी ही तरंगित है। उनके ही प्रतिबिम्ब को हम आचार्य महाप्रज्ञ कहते हैं। शरीर आचार्य और आत्मा रूप में महाप्रज्ञ। एक शरीर में दोनों के दर्शन संभव बन गए। हम इन दोनों के बीच अर्द्धनारीश्वर की अवधारणा का दर्शन कर सकते हैं। आधे शरीर में आप आचार्य तुलसी को देख लें, आधे में महाप्रज्ञ को। आचार्य तुलसी के बाद आधे शरीर में युवाचार्य महाश्रमण का स्थान बना। उस धरातल पर पहुंचकर ही शायद धर्म को शास्त्रों और सम्प्रदायों से बाहर निकाल पाना संभव हो सका। अनेक मूल ग्रन्थों को आज की भाषा एवं आवश्यकता के अनुरूप लिखा।

पुरानी कथाओं के स्थान पर जीवन्त अनुभूतियों, नए वैज्ञानिक शोध आदि की आम आदमी के जीवन में उपयोगिता को ध्यान में रखकर नव निर्माण किया। अनेकान्त को व्यावहारिक स्वरूप प्रदान किया। धर्म और विज्ञान को एक धरातल प्रदान किया। तभी पूर्व राष्ट्रपति ए.पी.जे. अब्दुल कलाम के साथ संयुक्त रूप से ऐसा ग्रन्थ लिख सके। भीतर की अनुभूतियां समृद्ध हो सकीं। तभी आज वे धर्म को वैज्ञानिक स्वरूप दे पाए। भगवान महावीर को वर्तमान जीवन शैली से जोड़ पाए। परिवर्तन की नित्यता को स्वीकारते हुए, वैज्ञानिकता की अनिवार्यता के साथ उसका तारतम्य बनाने का मार्ग प्रशस्त कर गए। इसीलिए शायद सम्प्रदायों के वाद-विवाद के ऊपर रहकर कमल की तरह अपनी सुगंध एवं आभा बिखेर गए। उनके दर्शन के मूल में एक ही बात प्रमुख थी व्यक्ति का जीवन से जुड़ाव हो। उसका आध्यात्मिक विकास भी निरन्तर होता रहे। यही अवधारणा राजस्थान पत्रिका में उनके दैनिक स्तम्भ 'तत्त्व-बोध' के पीछे भी रही। इसकी प्रतिक्रिया स्वरूप हर धर्म के पाठकों के पत्र आते हैं।

यह सारा लेखन श्रेष्ठ कोटि का सामाजिक सरोकार ही है। साथ में व्यक्ति को अन्तर्दृष्टि भी मिलती रहती है। आने वाले समय में व्यक्ति जब अपनी पहचान भूल जाएगा, तब 'तत्त्व-बोध' इस अंधेरे में अंगुली पकड़कर प्रकाश तक ले जाएगा।

समय का मोल क्या होता है, इसके लिए तो दूसरा उदाहरण ध्यान में नहीं है। प्रतिदिन 24 घण्टे का निश्चित कार्यक्रम। कब संत रहना, कितने बजे से कितने बजे तक सम्प्रदाय का आचार्य रहना, कब महाप्रज्ञ बनकर रूपान्तरण के प्रयोग करना, शास्त्रों की व्याख्या करना, अध्यापन कार्य करना वगैरह-वगैरह। यह कार्य वही सद्पुरुष कर सकते है, जो प्राणों का आकलन करने में सिद्ध हो जाते हैं। सदा ग्रहण करने की मुद्रा और स्वागत का भाव। शायद इसीलिए जो ईश्वरीय ज्ञान आचार्य तुलसी तक पहुंचा, वह सीधा का सीधा बहकर आचार्य महाप्रज्ञ तक आ गया। आचार्यश्री उसकी आगे वृद्धि करते ही गए। इन्होंने स्वयं को सदा गौण रखा। दोनों के मध्य भी गौण की भाषा को इन्होंने खूब पढ़ा है। इनकी एकरूपता जगजाहिर है।

वर्तमान का उपयोग ही भविष्य को इंगित करता है। वर्तमान का कर्म ही भावी कर्मफल बनता है। महाप्रज्ञ अब सशरीर किसी को उपलब्ध नहीं होंगे, किन्तु जिसके पास भी दृष्टि है, वे सदा उनको देख सकेंगे। ईश्वर ऐसे श्रद्धा संत मानवता के हित चिंतक एवं संकल्पवान महान आत्माओं से हर परिवार-समाज एवं देश को अनुग्रहित करें।

राजस्थान पत्रिका से साभार, 10 मई 2010

www.terapanthinfo.com

एक युग बीत गया

प्रो. दयानंद भार्गव

जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के आचार्य महाप्रज्ञ नहीं रहे। 14 जून 1920 में राजस्थान के एक छोटे से ग्राम टमकोर में जन्में आचार्य महाप्रज्ञ का 91वां जन्मदिन मनाने की तैयारियां चल रही थीं, लेकिन वे सदा के लिए हमें छोड़ गए हैं। वस्तुतः तो ऐसे महान व्यक्ति के शरीर के छूट जाने पर शोक नहीं किया जाता, क्योंकि उन्होंने तो मानव-शरीर धारण कर वह परम लक्ष्य अपने जीवन काल में ही प्राप्त कर लिया था जिस लक्ष्य को देवता भी प्राप्त नहीं कर पाते। किंतु हम जो लोग उनके पीछे रह गए हैं, उन्हें तो उनका अभाव सदा सालता ही रहेगा। जिसने भी इस समाचार को सुना वह स्तब्ध है।उनके व्यक्तित्व का ध्यान करके वाणी मूक हो जाती है।

29 जनवरी, 1931 में उन्होंने मुनि दीक्षा आचार्य कालूगणी से ली तथा आचार्य तुलसी के निकट शिक्षा प्राप्त की। 3 फरवरी, 1979 को उन्हें तेरापंथ संघ का युवाचार्य घोषित किया गया। 5 फरवरी, 1995 को आचार्य तुलसी ने अपने जीवनकाल में ही स्वयं आचार्य पद छोड़कर उन्हें आचार्य पद पर आसीन कर दिया। तेरापंथ संघ के **इतिहास में यह पहली बार ही हुआ कि कोई आचार्य अपने जीवनकाल में ही स्वयं आचार्य पद छोड़कर युवाचार्य को आचार्य पद दे दे। वस्तुतः आचार्य तुलसी और आचार्य महाप्रज्ञ इन दोनों गुरु-शिष्यों में कोई द्वैत नहीं था। वे अद्वैत के अनोखे उदाहरण थे।** आचार्य महाप्रज्ञ ने आचार्य तुलसी की वाचना-प्रमुखता में आचारांङ्ग, दशवैकालिक, उत्तराध्ययन, सूत्रकृताङ्ग जैसे लगभग 12 आगमों पर विस्तृत भाष्य लिखे जो उन्हें अभयदेवसूरि, शीलाङ्क, शङ्कराचार्य सायणाचार्य और वाचस्पति मिश्र जैसे भाष्यकारों की कोटि में बैठा देते हैं। वेद के प्रसिद्ध विद्वान् किरीट जोशी ने एक बार कहा था कि जैनागमों पर जितना विधिवत् भाष्य आचार्य महाप्रज्ञ ने किया है वैसा भाष्य वेदों पर भी किसी भाष्यकार का उपलब्ध नहीं है।

आचार्यश्री के आगमों पर भाष्य विद्वज्जन भोग्य हैं तो उनका मौलिक साहित्य सर्वजन भोग्य है। ऐसे ग्रंथ 200 से ऊपर हैं जिनमें 50 से ज्यादा ग्रंथों का अंग्रेजी अनुवाद भी हो चुका है। पण्डित सुखलाल संघवी अपने शिष्यों को चलते फिरते ग्रंथ कहा करते थे। आचार्य महाप्रज्ञ के 1000 से ऊपर निर्ग्रन्थ शिष्य उनके ऐसे ही चलते फिरते ग्रंथ हैं। इन शिष्यों में से समण-समणियों ने विदेशों में भगवान महावीर के संदेश को केवल अपनी वाणी से ही नहीं, अपने चरित्र से भी फैलाया है। अनेक विदेशी आचार्यश्री के सान्निध्य में जब प्रेक्षाध्यान का अभ्यास करते थे, तो लगता था कि सत्य देश, काल, मजहब, रंग, जाति की सीमाओं में बंधता नहीं है। जैन होते हुए भी आचार्य महाप्रज्ञ विश्व-पुरुष थे। ऐसा इसलिए हो सका कि **वे अनेकान्त के सैद्धान्तिक ज्ञाता ही नहीं, व्यावहारिक प्रयोक्ता भी थे।** अभी उनके श्रीमद्भगवद् गीता परदिए गए व्याख्यान इस सत्य का प्रमाण है।

आचार्य महाप्रज्ञ ने अनेक क्रान्तिकारी घोषणाएं की। उन्होंने यह कहकर कि गरीबी पूर्वकर्मों का फल नहीं है अपितु गलत सामाजिक व्यवस्था का फल है, धर्म के नाम पर होने वाले शोषण पर चोट की। जैन धर्म अहिंसा को सर्वोपरि मानता है किन्तु आचार्य महाप्रज्ञ ने घोषणा की कि अपरिग्रह परम धर्म है। इस आधार पर उन्होंने सापेक्ष अर्थशास्त्र की बात की। उनका कहना था कि अर्थ मनुष्य की मौलिक आवश्यकताओं की पूर्ति करता है किन्तु अर्थोपार्जन तथा अर्थसंग्रह की धुन में मानवीय मूल्यों की उपेक्षा अनेक अनर्थों का कारण बन जाती है।

आचार्य महाप्रज्ञ ने 2001 से शुरू अपनी अहिंसा यात्रा में लगभग बीस हजार किलोमीटर की दूरी नापी। यह यात्रा चूंकि पद-यात्रा थी अतः इसमें बड़े शहर तो कम आए, छोटे-छोटे गांव अधिक आए। इन गांवों में चुनावों के समय ही कोई बड़ा नेता जाए तो जाए, अन्यथा ये उपेक्षित ही रहते हैं। आचार्य महाप्रज्ञ ने जब इन गांवों में जाकर लाखों लोगों के दुर्व्यसन छुड़वाए तो लगा कि महात्मा गांधी भारत में दुबारा आ गए हैं। अब वे सब दृश्य स्वप्न होकर रह गए हैं। सर्दी-गर्मी, बारिश, धूल में छोटे से छोटे आदमी की पीड़ा धैर्यपूर्वक सुनने वाला ऐसा करुणा का सागर सुविधाभोगी युग में हो सकता है पता नहीं भविष्य में कोई इस पर विश्वास भी करेगा या नहीं। जिसे भिक्षा देने के लिए सैकड़ों करोड़पति पंक्तिबद्ध खड़े रहते थे, उसने कितने बरस पहले आखिरी बार मिठाई चखी थी यह कहना कठिन है।

जिस तेरापंथ का नेतृत्व आचार्य महाप्रज्ञ कर रहे थे, वह पंथ नितान्त अध्यात्म प्रधान है। उस पंथ की अहिंसा की अवधारणा भी मूलतः आध्यात्मिक ही है। इसलिए कुछलोगों का ऐसा विचार हो सकता है कि आचार्य महाप्रज्ञ सामाजिक सरोकारों की चिन्ता शायद न करते हों, किन्तु यह धारणा सर्वथा निर्मूल है। आचार्य महाप्रज्ञ ने जब यह देखा कि हिंसा के अनेक कारणों में भुखमरी एक बड़ा कारण है तो उन्होंने अपने अनुयायियों को यह प्रेरणा दी कि वे रोजगार उपलब्ध कराने वाला प्रशिक्षण जन-जन को दें और ऐसा हुआ भी।

सच तो यह है कि अनेकान्तवाद के प्रयोक्ता होने के नाते आचार्य महाप्रज्ञ में अनेक परस्पर विरोधी तत्त्वों का ऐसा समन्वय था कि साधारण बुद्धि से उन्हें समझना कठिन है। चार-चार घंटे निरन्तर ध्यान में रहने वाला व्यक्ति देश के शीर्षस्थ राजनेताओं का जब मार्गदर्शन करता था, तो कलिकाल सर्वज्ञ हेमचन्द्राचार्य और रघुवंशी राजाओं के

शेष पृष्ठ 13 पर

www.terapanthinfo.com

महानिर्वाण

अतुलनीय संत आचार्य महाप्रज्ञ का निर्वाण केवल श्वेताम्बर तेरापंथ ही नहीं, वरन पूरे राष्ट्र व विश्व के लिए एक अपूरणीय क्षति है। आज संसार आध्यात्मिकता के एक ऐसे 'लाइट हाउस' से वंचित हो गया है, जिसने संसार रूपी अथाह समुद्र में अपने पवित्रतम उजास से लगभग दो-तीन पीढ़ियों को भटकने से बचाया। वे धर्म सिद्धांतों के अद्भुत शिखर पुरुष थे। उनके सिद्धांत किसी भी दृष्टि से कोरे नहीं थे, उनके सिद्धांत व्यावहारिकता के ताप में पके-पगे हुए थे। संसार में जहां उन्हें असीमित ऐश्वर्य से बढ़ते असंतुलन की चिंता थी, वहीं उन्हें भूख की समस्या भी समाज सेवा के लिए प्रेरित करती थी। आज ऐसे अनेक साधु-मुनि हैं, जिनके पास प्रश्नों के ढेर हैं, किन्तु आचार्य महाप्रज्ञ उत्तरों के अपरिमित भण्डार थे। उनके बेजोड़ उत्तर ही उन्हें आध्यात्मिक क्षेत्र में धर्म-सूर्य समान प्रतिष्ठा प्रदान करते थे। उनके कर कमलों से 200 से ज्यादा पुस्तकें रची गई, जिनमें जीवन के हर क्षेत्र से जुड़े प्रश्नों के उत्तर देखे जा सकते हैं। 1920 में जन्मे महाप्रज्ञ का जीवन स्वयं किसी गुरुकुल से कम न था। दस वर्ष की बाली उमर लुकाछिपी खेलने की होती है, लेकिन उम्र का यही पड़ाव था, जब नन्हे नथमल ने संन्यास के दुर्गम क्षेत्र में प्रवेश किया। साधुता की गोद और आचार्य तुलसी की छत्रछाया में महाप्रज्ञ का ज्ञान वृक्ष इतना घना और विशाल हो गया कि जिसमें किसी एक पथ के नहीं, वरन तमाम पंथों के गुणिजन ठौर पाने लगे। अहिंसा पर कार्य का अवसर महात्मा गांधी को ज्यादा नहीं मिला, लेकिन आचार्य महाप्रज्ञ ने अहिंसा के क्षेत्र में इतने कार्य किए कि सम्भवतः आने वाली सदियों में भी शायद ही कोई उतने कार्य कर पाएगा।

वर्षों पहले राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर ने उन्हें 'आधुनिक विवेकानंद' कहा था। आज दिनकर की वह उक्ति कदापि अतिशयोक्ति नहीं लग रही है। समस्याग्रस्त राष्ट्र में जब साधु-संत अपने-अपने डेरों, आश्रमों, शिविरों में कैद होने लगे, तब महाप्रज्ञ समस्याओं से मुक्ति का मार्ग बताने ऐतिहासिक अहिंसा यात्रा पर निकले। 5 दिसम्बर 2001 को सुजानगढ़ से यात्रा शुरू हुई थी। देश भर के 87 जिलों, 2400 गांवों से होती हुई यह यात्रा सुजानगढ़ में ही संपन्न हुई। आंखें खोलकर तलाश कीजिए, ऐसा कोई आध्यात्मिक व्यक्ति नहीं मिलेगा, जो ऐसी विशाल व उपयोगी यात्रा पर निकला हो। उन्होंने बताया कि अहिंसा और सत्य को भी विश्वविद्यालयों में पाठ्यक्रम बनाया जा सकता है। उन्होंने स्वयं जीकर दिखाया कि गुरु भक्ति क्या होती है। आज कोई भी गुरु अपने जीते-जी किसी शिष्य को गद्दी नहीं सौंपता, लेकिन आचार्य तुलसी ने अपने जीवन काल में ही अपने शिष्य को गद्दी प्रदान की थी। अविश्वास के दौर में विश्वास का यह स्तर वस्तुतः महाप्रज्ञ को न केवल विलक्षण समर्पित, स्नेही शिष्य, वरन विलक्षण संत भी सिद्ध करता है। हमारे पूर्व राष्ट्रपति, वैज्ञानिक डॉ. अब्दुल कलाम से महाप्रज्ञ का तालमेल भी अविस्मरणीय रहेगा, वे जब-जब मिले, तब-तब राष्ट्र को समायोचित दिशानिर्देश मिले। अंतिम समय तक सक्रिय रहे आचार्य महाप्रज्ञ अणुव्रत के महा-अनुष्ठान का ही चिन्तन संघ से कर रहे थे। जैन आगमों का अनुवाद संरक्षण व प्रेक्षा प्राणायाम का आविष्कार उनके ऐसे अनमोल योगदान हैं, जो सदैव प्रासंगिक रहेंगे। आज जैन दर्शन व न्याय क्षेत्र बहुत सुना हो गया। आने वाली पीढ़ियों के लिए उनके ज्ञान की विशाल थाती छूट गई है, जो पग-पग पर काम आएगी।

सम्पादकीय : राजस्थान पत्रिका
10 मई, 2010

श्रद्धांजलि

मुझे, जैन श्वेतांबर तेरापंथ समुदाय के 10 वें आचार्य और सर्वोच्च प्रमुख आचार्य महाप्रज्ञजी के निधन का समाचार सुनकर गहरा दुःख हुआ।

आचार्य महाप्रज्ञ एक महान संत और दर्शनिक थे। उन्होंने अणुव्रत आंदोलन को नई दिशा दी तथा 'अपनी अहिंसा यात्रा' के माध्यम से सम्पूर्ण राष्ट्र में शांति व समरसता का संदे ा फैलाया। उनके निधन से हमने एक ऐसी महान विभूति को खो दिया है जिनमें एक आध्यात्मिक शक्ति थी और जिन्होंने सदैव समाज के कल्याण के लिए कार्य किया।

प्रतिभा देवीसिंह पाटिल
राष्ट्रपति, भारत गणतंत्र

आचार्य महाप्रज्ञ ने अपने संदेशों के द्वारा अहिंसा और समाज में नैतिक मूल्यों की पुनर्प्रतिष्ठापना के लिए भगीरथ कार्य कर मानव सेवा करते रहे। आचार्यश्री ने विभिन्न समुदाय और धर्मों के प्रमुख धर्मावलंबियों से संपर्क कर भारत में सद्भावपूर्ण वातावरण तैयार किया। जिसके फलस्वरूप सभी धर्मों की पारस्परिक एकता की नींव को बल मिला।

डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम
पूर्व राष्ट्रपति

आचार्य महाप्रज्ञ महान चिंतक, दार्शनिक, प्रखर विचारक और ख्याति प्राप्त संत थे। उन्होंने सदैव शांति, संयम, नैतिकता और इन्सानियत का प्रचार-प्रसार किया। उनके न रहने से धर्म और मानवता की बहुत बड़ी क्षति हुई है। उनका जीवन और कार्य तथा उनके उत्तर विचार हम सबको प्रेरणा देते रहेंगे।

शीला दीक्षित
मुख्यमंत्री : दिल्ली

मुझे आचार्य महाप्रज्ञ के निधन की जानकारी पर गहरा दुःख हुआ है। उन्होंने जीवन भर अहिंसा और मानव मूल्यों की स्थापना का प्रचार-प्रसार किया। उनके निधन से मानवता ने एक महान आध्यात्मिक गुरु खो दिया है। मैं महान आत्मा के प्रति अपनी भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ और दिवंगत आत्मा की शांति लिए परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करता हूँ।

शिवराज पाटिल
राज्यपाल : पंजाब एवं प्रशासन चंडीगढ़
संघ शासित क्षेत्र

www.terapanthinfo.com

अंत तक अहिंसा का संदेश

डॉ. सोहनलाल गांधी

आज मध्याह्न में जब संवाद मिला कि आचार्य महाप्रज्ञ अचानक ही हम सब को छोड़कर अनन्त में विलीन हो गये, मैं सन्न रह गया। आँखों में अश्रुधारा बह चली और मेरे मानस पटल पर अनेक चित्र उभरने लगे। कल और आज प्रातः तक आचार्य महाप्रज्ञ ने अणुव्रत के प्रति अधिक से अधिक लोगों की प्रतिबद्धता प्राप्त कर सामाजिक सौष्ठव के लिए काम करने का आह्वान किया। अणुव्रत एवं प्रेक्षाध्यान सामाजिक वैषम्य एवं वैयक्तिक जीवन के कषायों के प्राबल्य को कम करने के सशक्त साधन हैं। अणुव्रत कार्यकर्ताओं का दायित्व है कि वे धार्मिक सौहार्द एवं अहिंसा-प्रसार के अभियान में अग्रणी बनें। यह उनका अंतिम संदेश था जो वर्षों तक हमारे कानों में प्रतिध्वनित होता रहेगा।

आचार्य महाप्रज्ञ न केवल एक जैनाचार्य थे अपितु तत्त्व-दृष्टा, परम विशिष्ट ध्यान योगी एवं सूक्ष्म-जगत के अन्वेषक थे। वे प्रतिक्षण जागृत थे तथा भीतर स्थित जीवन के गहन रहस्यों से लबालब विशाल समुद्र में गोते लगाते रहे। उनकी प्रज्ञा असाधारण थी एवं उन्हें अतीन्द्रिय आभास होता था। उन पर आचार्य तुलसी जैसे प्रखर एवं तेजस्वी आचार्य का वरद्हस्त था। उनकी गुरुभक्ति अद्वितीय, गहनतम एवं अनुकरणीय थी। ध्यान द्वारा वे आत्मा की गहराईयों तक पहुंचे। उन्होंने सत्य का स्पर्श किया और अनुभूतियों को ऐसे अभिव्यक्त किया, 'प्रेक्षा आत्मानुभूति का दर्शन है। जिसकी आंतरिक चेतना जागृत हो जाती है, वह सूक्ष्म व्यवहित और दूरवर्ती दृश्य देख लेता है। आज की भाषा में हम लोग बुद्धि व्यायाम को दर्शन कहते हैं किन्तु वास्तविक अर्थ में वह दर्शन नहीं है। जहां दर्शन तर्कशास्त्रीय नियमों के माध्यम से ज्ञात होता है, वह दर्शन नहीं हो सकता। दर्शन में दृश्य एवं दृष्टा का सीधा सम्पर्क होता है, किसी के माध्यम के द्वारा नहीं होता।'

उन्होंने वर्षों तक अनवरत् ध्यान साधना की। उनकी अनेकान्त दृष्टि थी, अतः जिस ध्यान परम्परा में उन्हें कुछ मौलिक मिला, उसे आत्मसात् किया। सन् 1970 में मैं एक बार आचार्य प्रवर (तब मुनि नथमल) के दर्शनार्थ गया। वे उन दिनों भगवान महावीर द्वारा अपनाई गई ध्यान पद्धति के बिखरे सूत्रों का संकलन कर रहे थे जो लुप्त हो गये थे। कायोत्सर्ग का उल्लेख जैन आगमों में अनेक बार हुआ है, लेकिन उसकी विधि अज्ञात थी। आचार्यश्री का दृढ़ विश्वास था कि केवल उपदेशों से हृदय परिवर्तित नहीं होता। ध्यान से व्यक्ति रूपान्तरित हो जाता है, उसके कषाय उपशांत हो जाते हैं। अणुव्रत प्राथमिक संकल्प है जो ध्यान द्वारा सहज आचरण में प्रवाहित हो जाता है। समाज में बढ़ते वैमनस्य, घृणा एवं हिंसा के वातावरण से वे व्यथित थे। उन्होंने प्रेक्षाध्यान के विशाल शिविर संचालित किये। लाखों लोगों को रूपान्तरित किया।

समाज में निरन्तर बढ़ती हिंसा से चिंतित होकर सन् 2001 में आचार्य प्रवर ने एक अभिनव घोषणा की, 'अहिंसा की चेतना जागृत करने के लिए एक सघन प्रयत्न की जरूरत है। आज से मैं अनिश्चित समय के लिए अहिंसा-यात्रा के लिए प्रस्थान करूंगा। पहला पड़ाव गुजरात की ओर होगा।' उस वक्त आचार्य प्रवर 80 वर्ष के थे लेकिन अदम्य साहस था। उनकी यात्रा में अनुयायियों के अतिरिक्त हिन्दू, मुसलमान, इसाई आदि अनेक समुदायों के प्रतिनिधि सम्मिलित थे। यह संयोग ही था कि 2002 में जब गुजरात में साम्प्रदायिक दंगे हुए आचार्य महाप्रज्ञ गुजरात में थे। उनकी उपस्थिति ने नोआखली में महात्मा गांधी की ऐतिहासिक यात्रा की याद ताजा कर दी। दंगाग्रस्त स्थानों पर महाप्रज्ञ स्वयं पहुंचे और शांति स्थापित करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।

आचार्य महाप्रज्ञ ने आचार्य तुलसी के मार्गदर्शन में आगम सम्पादन की महती योजना हाथ में ली और कुछ ही वर्षों में उस असाध्य कार्य को कुशलतापूर्वक सम्पन्न कर सभी को आश्चर्यचकित कर दिया। 300 से अधिक ग्रंथों के रचनाकार आचार्य महाप्रज्ञ की तुलना श्रुतकेवली भद्रबाउ से की जा सकती है। उनके कषाय शांत थे और क्रोध पर उनका पूर्ण नियंत्रण था। उस दृष्टि से वे आधुनिक जगत के अर्हत् भी थे। आज अहिंसा प्रशिक्षण केन्द्रों का जाल सा बिछ गया है। यह अहिंसक समाज की स्थापना की दिशा में एक महत्त्वपूर्ण प्रायोगिक कदम है। उन्हीं के सान्निध्य में अहिंसा प्रशिक्षण का वैश्विक पाठ्यक्रम बनाया गया है। उन्होंने सापेक्ष अर्थशास्त्र की अवधारणा प्रतिपादित की और अर्थशास्त्री उनके इस अभियान से जुड़ गये। आचार्य महाप्रज्ञ एक ऐसे प्रभावक आचार्य एवं महान् संत थे जिनकी सन्निधि में बैठने वाले अलौकिक उर्जा की अनुभूति करते थे और रूपान्तरित होते थे। ऐसे बहुप्रतिभा के धनी, बहुआयामी, ध्यान योगी, सामाजिक सौष्ठव के प्रणेता का इस तरह अचानक चला जाना अपूरणीय क्षति है।

राजस्थान पत्रिका से साभार, 10 मई 2010

पृष्ठ 11 का शेष

गुरु वसिष्ठ का स्मरण हो आता था। एक विशाल संघ को एक अनुशासन के सूत्र में बांधने वाले आचार्य को किसी ने कभी किसी के प्रति कठोर वचन बोलते या तिरछी नजर से देखते हुए नहीं सुना-देखा। इससे बढ़कर अहिंसा का व्यावहारिक रूप और कहां देखने को मिलेगा। ऐसा व्यवहार वही कर सकता है, जिसने अहिंसा का निश्चय-नय वाला आध्यात्मिक जीवन जिया हो।

राजस्थान पत्रिका से साभार, 10 मई 2010

लोकप्रियता के धनी

डॉ. सोहनराज तातेड़

लोकप्रियता उनको हस्तगत होती है जिनका जीवन लोक कल्याणकारी हो। जिनकी परमार्थ चेतना जागृत होती है वे लोकप्रिय हो जाते हैं। आचार्य महाप्रज्ञ आधुनिक भारत के विवेकानंद थे। उनका पूरा जीवन मानवता के कल्याण के लिए समर्पित था। ''तिन्नाणं- तारयाणं'' युक्ति के आधार पर वे स्व-पर कल्याण के पथ पर अग्रसर रहे। आचार्य महाप्रज्ञ अध्यात्म के शिखर पुरुष थे।

आचार्यश्री के अनुसार अध्यात्म के मूल आधार दो हैं- आत्मा और कर्म। यदि हम आत्मा और कर्म को हटा लें तो अध्यात्म आधार शून्य हो जायेगा। अध्यात्म की समूची कल्पना और व्यवस्था इस आधार पर है कि आत्मा को कर्म से मुक्त करना है। यदि आत्मा नहीं है तो किसे मुक्त किया जाय? यदि कर्म नहीं है तो किससे मुक्त किया जाय? ''आत्मा को कर्म से मुक्त करना है'' इस सीमा में समूचा अध्यात्म समा जाता है। आचार्य महाप्रज्ञ स्वयं एक महान् अध्यात्म योगी थे। उन्होंने अपनी साधना के दौरान कई आत्मानुभव किए। मानव जाति को आत्म जागरण का संदेश उनके प्रवचनों के माध्यम से प्रतिदिन संस्कार चैनल के माध्यम से लगातार प्रसारित हो रहे हैं। संस्कार के माध्यम से आचार्यश्री की अमृतवाणी पूरे देश एवं विश्व के कई देशों में पिछले लम्बे समय से प्रसारित की जा रही है। आचार्यश्री के अनुभवजन्य एवं प्रयोगात्मक प्रवचनों को सुनकर अनेक लोगों के जीवन का कायाकल्प हुआ। आचार्यश्री के प्रवचन मानव मात्र के लिए कल्याणकारी हैं।

आचार्य महाप्रज्ञ ने प्रेक्षाध्यान की उपसंपदा के पाँच सूत्र भावक्रिया, प्रतिक्रिया-विरति, मैत्री, मितभाषण एवं मिताहार मानवजाति को उपहार के रूप में दिए जिनके माध्यम से अनेक लोगों के जीवन का कायाकल्प हुआ। आचार्यश्री का मानना था कि अगर व्यक्ति सत्यनिष्ठा से रहे तो असंवेदनशीलता, आतंकवाद, असहनशीलता, संग्रह की प्रवृत्ति, मानव-मानव के बीच असमानता क्रूरता, नशा आदि आज के युग की भीषण समस्याओं का आसानी से समाधान हो सकता है। इन उपसंपदाओं के प्रयोग से श्रावक समाज साधार्मिक वात्सल्य स्वयं पा सकता है तथा औरों को भी प्रदान कर सकता है। प्रेक्षाध्यान के प्रयोगों ने महाप्रज्ञजी को अत्यन्त लोकप्रिय बनाया। क्योंकि ये प्रयोग मानव जाति की हर समस्या का समाधान देते हैं।

आचार्य महाप्रज्ञ के शब्दों में ''अध्यात्म और विज्ञान एक-दूसरे के पूरक हैं। दोनों का सापेक्ष विकास जरूरी है।'' अध्यात्म और विज्ञान दोनों ही सत्य की खोज के मार्ग हैं। वैज्ञानिक युग में वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपेक्षित है और शांतिपूर्ण जीवन के लिए आध्यात्मिकता भी अनिवार्य है। आध्यात्मिकता + वैज्ञानिकता = आध्यात्मिक वैज्ञानिक व्यक्तित्व। आज की अपेक्षा है कि व्यक्ति न कोरा वैज्ञानिक बने और न कोरा आध्यात्मिक बने अपितु आध्यात्मिक वैज्ञानिक बने। इन दोनों का योग ही मानव जीवन की हर समस्या का समाधान है और जीवन विज्ञान का प्रस्थान है। आचार्यश्री की आध्यात्मिक, वैज्ञानिक समन्वयात्मक सोच ने उन्हें बहुत लोकप्रिय बना दिया। आचार्यश्री में अध्यात्म को वैज्ञानिक धरातल पर प्रायोगिक बनाकर प्रशिक्षण के माध्यम से व्यक्ति के जीवन में उतारने की अनूठी कला थी। आचार्य महाप्रज्ञ अतीन्द्रिय चेतना के धनी थे। वे विज्ञान, मनोविज्ञान, पराविज्ञान, दर्शन, अर्थशास्त्र, भौतिक शास्त्र, शरीर विज्ञान, शरीर-क्रिया विज्ञान आदि के प्रखर ज्ञाता थे। यह सब ज्ञान उनको अतीन्द्रिय चेतना से प्राप्त हुआ। उनका तीसरा चक्षु खुला हुआ था। मानसिक चेतना के स्तर पर जीने वाले व्यक्ति को इतने गहरे ज्ञान की प्राप्ति नहीं हो सकती है।

आचार्य महाप्रज्ञ एक कुशल मनोवैज्ञानिक थे। व्यक्ति के चेहरे के हावभाव व उसके आभामंडल को देखकर व्यक्ति की मानसिकता का पता लगा लेते थे। उनके सम्पर्क में आने वाले व्यक्ति की वे इसी माध्यम से पहचान करते थे। उनका मानना था कि शारीरिक स्वास्थ्य का मूल्य दस प्रति ात है, मानसिक स्वास्थ्य का मूल्य तीस प्रतिशत है और भावनात्मक स्वास्थ्य का मूल्य साठ प्रतिशत। अतः हम उल्टे क्रम से चलें। पहले भावनात्मक स्वास्थ्य और फिर मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य की चिंता करें। इस क्रम से चलने पर चिंता स्वयं अचिंता बन जाएगी। शारीरिक, मानसिक व भावनात्मक स्वास्थ्य प्राप्ति के लिए महाप्रज्ञजी ने मानवता को 'प्रेक्षाध्यान' रूपी अवदान उपहार के रूप में दिया। इसके साथ-साथ उन्होंने व्यवस्थित जीवन जीने के लिए जीवन विज्ञान का आविष्कार किया। मनुष्य में नैतिकता आए इसके लिए अणुव्रत की आचार-संहिता लागू की। जो व्यक्ति

अणुव्रत, प्रेक्षाध्यान व जीवन विज्ञान को अपने जीवन में आत्मसात करता है उसका सर्वांगीण विकास अवश्यंभावी है। अणुव्रत, प्रेक्षाध्यान एवं जीवन विज्ञान जैसी महा विधाओं ने उनको मानवता का मसीहा मानते हुए अत्यन्त लोकप्रिय बना दिया।

आचार्य महाप्रज्ञ का चिंतन था रहो भीतर, जीओ बाहर। वे अंतरचेतना से साक्षात्कार एवं उसकी अनुभूति पर विशेष बल देते थे। आचार्यश्री स्वयं अवचेतन मन व अचेतन मन से सम्पर्क करते थे तथा लोगों को इनसे सम्पर्क की विधि बतलाते थे। प्रेक्षाध्यान की गहन साधना से व्यक्ति अवचेतन मन से सम्पर्क कर सकता है। आचार्य महाप्रज्ञ की मान्यता थी ''जब कायोत्सर्ग का अभ्यास पुष्ट हो जाता है, तब यह अनुभव होता है कि शरीर अचेतन है, मैं शरीर नहीं हूँ। श्वास नहीं हूँ। इन्द्रिय अचेतन है, मैं इन्द्रिय नहीं हूँ। मन अवचेतन है, मैं मन नहीं हूँ। भाषा अचेतन है, मैं अचेतन नहीं हूँ। कायोत्सर्ग के अभ्यास से शरीर, श्वास एवं इन्द्रिय आदि आत्मा से पृथक् है, यह भेद-ज्ञान होने पर ही अस्तित्व का दर्शन अर्थात सम्यक् दर्शन होता है।'' सम्यक् दर्शन के फलित हैं शान्ति, मुक्ति की चेतना, अनासक्ति, अनुकम्पा और सत्य के प्रति समर्पण।

आचार्य महाप्रज्ञ का चिंतन रहा ''मैं किसी व्यक्ति का अनिष्ठ चिंतन नहीं करूँगा। दूसरे का अनिष्ठ चाहने वाला उसका अनिष्ठ कर पाता है या नहीं कर पाता किन्तु अपना अनिष्ठ निश्चित ही कर लेता है।'' इसी विचारधारा ने उनको लोकप्रियता दिलाई। आचार्यश्री के साहित्य ने उनको अत्यन्त लोकप्रिय बना दिया। महाप्रज्ञजी का साहित्य वर्तमान युग की समस्याओं तनाव, असंवेदनशीलता, आवेश, आवेग, अवसाद, आतंकवाद, हीनभावना, घृणा, धोखा-धड़ी, अप्रामाणिकता एवं अशांति का स्थायी समाधान देता है। गुरुदेव आचार्य महाप्रज्ञजी के प्रति श्रद्धा नमन्।

जोधपुर (राज.)

श्रद्धा-सुमन

आचार्य महाप्रज्ञ के महाप्रयाण के समाचार से मुझे बहुत गहरा दुःख हुआ। उनका अभाव न केवल जैन समाज और तेरापंथ के लिए एक अपूरणीय क्षति है, बल्कि पूरे भारतीय समाज के लिए एक ऐसी कमी है, जिसका पूरा होना लगभग असंभव है।

वे एक अत्यंत उच्च कोटि के विचारक, साहित्य सृजक और समाज के मार्गदर्शक थे। उन्होंने जीवन भर जिन मानव मूल्यों की स्थापना और प्रचार-प्रसार के लिए प्रयास किया उनके बिना मानव समाज और मानव सभ्यता की कल्पना नहीं की जा सकती।

वे अहिंसा की प्रतिमूर्ति थे। धर्म को वे समाज की सेवा और उसे श्रेष्ठ संस्कार देने का माध्यम मानते थे। अणुव्रत आंदोलन में उनका योगदान और उनकी अहिंसा यात्रा एक लम्बे समय तक याद की जायेगी।

उनसे व्यक्तिगत भेंट एवं वार्ता के क्षण मेरे स्मृति पटल पर सदैव अंकित रहेंगे। इस गहन शोक के अवसर पर ऐसे तपस्वी और विद्वान के प्रति अपनी हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करती हूँ। मुझे विश्वास है कि आने वाली पीढ़ियां उनके चिंतन एवं कार्य से निरंतर प्रेरणा ग्रहण करती रहेगी।

सोनिया गांधी

अध्यक्ष : अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी

आचार्य महाप्रज्ञ एक महान शांतिदूत थे। वह एक महान विचारक, लेखक, दार्शनिक एवं कुशल वक्ता थे, जिन्होंने धर्म के वास्तविक महत्त्व की सरल शैली में व्याख्या की। वे अपनी अंतिम सांस तक शांति, अहिंसा एवं साम्प्रदायिक सौहार्द के लिए कार्य करते रहे, लोग उन्हें प्यार से गुरुदेव कहकर पुकारते। उन्होंने देश की लम्बी-चौड़ी दूरी की बाधा को अपनी पदयात्रा (अहिंसा यात्रा) के दौरान विभिन्न धर्मों से संबद्ध लोगों के बीच मैत्री और भाईचारे का वातावरण बनाया।

आचार्य महाप्रज्ञ का महाप्रयाण न केवल तेरापंथ सम्प्रदाय की बड़ी क्षति है, अपितु यह संपूर्ण मानवता की भी क्षति है।

के. शंकरानारायणन्

राज्यपाल : महाराष्ट्र राजभवन, मुंबई

सदी के महान् दार्शनिक, अध्यात्म जगत् के शिरोमणि, प्रेक्षाप्रणेता, युगप्रधान, राष्ट्रसंत अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाप्रज्ञ के देवलोक गमन पर मैं सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधि सभा की ओर से एवं सर्वधर्म संसद की ओर से आचार्य श्री महाप्रज्ञजी को अपनी हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ।

आचार्यश्री महाप्रज्ञजी के साथ कुछ विशेष समय बिताने का मुझे सौभाग्य मिला था। उनकी तपश्चर्या, साधना एवं गहरे अध्यात्म चिंतन से मैं हर बार प्रभावित हुआ।

आचार्य श्री का धार्मिक रूढ़िवाद एवं कर्मकांडों से ऊपर उठकर जागतिक आध्यात्मिक मूल्यों की तरफ आगे बढ़ने का आह्वान आज के युग में सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण है। उनके महाप्रयाण के बाद आपके सान्निध्य में हम सब साथी मिलकर उनके विचारों और उनके संकल्प को पूरा करने की दिशा में आगे बढ़ते रहे, ऐसी प्रभु से प्रार्थना है।

स्वामी अग्निवेश

प्रधान : सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

साथ जीने की राहों का अन्वेषण

डॉ. निज़ामउदीन

आचार्य महाप्रज्ञजी बहुआयामी प्रतिभा के धनी थे। उनका चिंतन और लेखन दोनों मौलिक थे। वह एक साथ विचारक, दार्शनिक, शिक्षाविद्, समाजशास्त्री, मनोवैज्ञानिक, वैज्ञानिक और आध्यात्मिक चेतना के समन्वय के पक्षधर थे। उन्होंने आगम शास्त्र के साथ-साथ अन्य धर्मशास्त्रों का भी गहन अध्ययन किया था। उन्होंने हमेशा अहिंसा, अपरिग्रह तथा अनेकांत को केन्द्र में रखकर नई राहों का अन्वेषण किया। समसामयिक विषयों पर भी उनकी पैनी नज़र रही। जिसमें उनकी दूरंदेशी-दूरदृष्टि परिलक्षित होती है। कहीं वह अपरिग्रह के द्वारा दिनोंदिन बढ़ती भौतिकता और तज्जनित हिंसा, हत्या, अपहरण के हानिप्रद व्यवहार का चित्रांकन करते हैं, कहीं पर्यावरण के संरक्षण और बढ़ते बहुमुखी प्रदूषण की बात करके जनमानस को झकझोरा करते थे। भ्रूणहत्या के द्वारा बालिका शिशु को जन्म लेने से पहले विनष्ट करने के घृणित कार्य को निन्दनीय और पापमय माना है उतना ही दहेज-समस्या को घोर निंदनीय और पापमय माना। अणुव्रत आंदोलन के द्वारा एक स्वस्थ तथा अहिंसक परिवार की परिकल्पना को भी वे हमेशा साकारित करने के लिए सतत् प्रयत्नशील रहे। हाल ही में प्रकाशित हुई उनकी पुस्तक ''परिवार के साथ कैसे रहें'' की लोकप्रियता का उज्जवल प्रमाण यह है कि इसके कई संस्करण प्रकाशित हो चुके हैं और साध्वी विश्रुतविभा ने इसका सुंदर सुबोध अंग्रेजी भाषा में अनुवाद भी किया। पुस्तक का आद्योपांत अध्ययन करने के बाद पाठक समझ सकते हैं कि परिवार में सुख-शांति से एक साथ कैसे रह सकते हैं, कैसे एक-दूसरे के सुख-दुःख के सहभागी बनकर जी सकते हैं। वैश्वीकरण के इस दौर में जहाँ अभी 192 देश विश्व को शांति-पथ पर ले जाने के लिए, आपदा-मुक्त बनाने के लिए पृथ्वी जलवायु परिवर्तन पर चर्चा करने के लिए कोपेनहेगन (डेनमार्क) में एकत्रित हुए हैं।

आचार्य महाप्रज्ञजी की यह पुस्तक परिवार को केन्द्र में रखकर लिखी गई है और परिवार-विषयक समस्याओं का उल्लेख करते हुए उनके व्यावहारिक समाधानों की भी तलाश की गई है। आचार्यश्री ने 'प्रस्तुति' में दो शब्दों को रेखांकित किया है एक है 'आश्वास', दूसरा है 'विश्वास', मानो इन दो शब्दों को परिवार की सुख- शांति का आधार माना है। व्यक्ति इस बात को लेकर आश्वस्त होना चाहता है कि वह एकाकी नहीं है, परिवार के अन्य व्यक्ति सदस्य उसके साथ खड़े हैं। दूसरे, पारिवारिक संबंध विश्वास पर अवलम्बित होते हैं। यदि परिवार के सदस्य एक-दूसरे पर विश्वास न करें तो वहाँ न सुख- शांति होगी, न वहाँ कारोबार समुचित रूप से चल सकेगा। विश्वास पति-पत्नी में न होगा तो उनका जीवन नरक-तुल्य हो सकता है। परिवार की सुख-शांति के लिए एक और शब्द का उल्लेख भी यहाँ किया है और वह महत्त्वपूर्ण शब्द है 'सहिष्णुता' यानी 'सापेक्षता का भावात्मक विकास'। आज जीवन के किसी भी स्तर पर ध्यान दीजिए आपको सहिष्णुता का सर्वत्र अभाव नजूर आयेगा। आचार्यश्री ने 'सहिष्णुता' शब्द का प्रयोग इस पुस्तक में 20-25 बार किया है और इसके सिरे अहिंसा और प्रेम से मिलते हैं, अनेकांत और समता-भाव से मिलते हैं। विद्यार्थी के थैले में पुस्तकों के स्थान पर हथियार हों तो याद रखिए परिवार में माता-पिता द्वारा उसका पालन-पोषण ठीक प्रकार से नहीं हुआ, उसे अच्छी तरवियत नहीं दी गई, उसमें शिष्टतापूर्ण आचरण की, अख़लाक़ की, शील की कमी है। एक किशोर अपने साथियों पर स्कूल में ही अंधाधुंध गोलियां चलाकर कुछ की हत्या, कुछ को जख़्मी कर देता है तो यह परिवार की चूलें हिला देने का संकेत है। इसी प्रकार सम्पन्न परिवार के युवाओं की हिंसात्मक दुराचरण सब देखते हैं जब वे दारू या शक्ति-सत्ता के बल पर फुटपाथ पर सोते हुए व्यक्तियों को कुचल कर ज़ख़्मी कर देते हैं और यह पाश्चात्य देशों के साथ हमारे अपने देश में भी देखा जाता है। संपादकीय में मुनि धनंजयकुमार ने महाप्रज्ञजी के चिंतन-मणियों को सहस्रों दिनमणि के रूप देखा है जो परिवार पर गहराते अंधियारे को लील कर रोशन राहों को आलोकित कर सकते हैं और उसके लिए यह भी आवश्यक है कि परिवार 'अभय का आलय' हो जहाँ चिंता, अवसाद, तनाव का विलय हो और 'परस्परोग्रहो जीवानाम्' (उमास्वामी) की भावना साकारित हो।

आचार्य महाप्रज्ञजी ने इस बात पर बल दिया है कि परिवार हो या राष्ट्र अथवा विश्व, शांति बनाए रखने के लिए सह-अस्तित्व की अपेक्षा है। स्वार्थ चेतना के स्थान पर सामुदायिक चेतना का विकास और परिष्कार आवश्यक होता है। जब व्यक्ति का स्वार्थ परमार्थ में बदल जाता है तो शांति का उदय होता है। ऐसा आचार्य महाप्रज्ञजी का मानना था, यही भावना अध्यात्म-चेतना को भी जन्म देती है। परिवार में जब अहंकार और क्रोध उमड़ता है तो समझना चाहिए उसकी दीवारें जीर्ण होकर गिरने लगती हैं। लोभ की भावना उसके विघटन में अलग बड़ी भूमिका निभाती है। कालिदास ने कहा है 'भिन्नरूचिर्लोकः', व्यक्ति की रुचियों में, विचारों में भेद होना स्वाभाविक है। इस गुत्थी को सुलझाने के लिए सामंजस्य, समन्वय और सहिष्णुता के भावों को अपनाना श्रेयस्कर है। यहाँ संयम बरतना भी आवश्यक है ताकि पारिवारिक

कलह, संघर्ष का सहज ही में अंत हो सके। आचार्य महाप्रज्ञ ने प्रबंधन को भी परिवार के शांतिपूर्ण अस्तित्व के लिए आवश्यक माना है। उन्होंने प्रबंधन को चार-सूत्री बताया है मैत्री, करुणा, प्रमोद, उपेक्षा। साथ में 'संयमः खलु जीवनम्' के आधार पर मन, वाणी और शरीर का संयम भी अपेक्षित माना है। बड़े से बड़े संस्थान, कंपनी आदि के लिए कुशल प्रबंधन की आवश्यकता होती है उसी प्रकार परिवार की शांतिपूर्ण व्यवस्था के लिए भी आजकल प्रबंधन की आवश्यकता महसूस की जानी चाहिए।

आचार्य महाप्रज्ञजी की इस पुस्तक को सामने रखकर यह सोचा जा सकता है कि आचार्यजी का जीवन श्रावक का, गृहस्थी का जीवन नहीं रहा, वह अनिकेतन, निश्परिग्रही थे। परिवार की समस्याओं से अनभिज्ञ, पति-पत्नी के रिश्तों से कोसों दूर, फिर वह परिवार को सुखी, शांतिमय देखने का स्वप्न क्यों देखते हैं। ठीक है, उन्होंने मुनिव्रत लेकर महाव्रतों का पालन करने का संकल्प लिया। लेकिन वह परिवार, समाज, देश या विश्व की समस्याओं को देखते थे। लोगों के संपर्क में हमेशा रहते, छोटे से छोटा और बड़े से बड़ा व्यक्ति, स्त्री-पुरुष, बालक-वृद्ध, किशोर अथवा युवक व प्रौढ़ व्यक्ति सभी उनके पास मार्ग-दर्शन के लिए आते थे। वह नारी-जगत् हो या युवापीढ़ी हो या वृद्धजन हों सभी से संवाद करते थे, उनकी बातों को सुनते थे। अपने गहन तथा दीर्घ जीवन के अनुभवों के आधार पर सुखी परिवार का ख़ाका मन में संजोए थे और अपने महान गुरु आचार्य तुलसी के उत्प्रेरक, प्रभावशाली, चुम्बकीय व्यक्तित्व से अभिप्रेरित थे। अतः यह पुस्तक आचार्य महाप्रज्ञजी के निजी अनुभवों का रेखाचित्र है। उनकी दृष्टि में शांतिपूर्ण सहवास के लिए परिवार को, उनके सदस्यों को अग्रांकित नौ सूत्रों पर अमल करना आवश्यक है

1. व्यवस्था, 2. समझौता, 3. सामंजस्य,
4. सहिष्णुता, 5. नेतृत्व के प्रति आस्था,
6. विनय व वात्सल्य, 7. कृतज्ञता,
8. विवेक, 9. आश्वास और विश्वास।

ये सूत्र एक-दूसरे से गुथे हुए हैं। जहाँ ये सूत्र होंगे वहाँ अवश्य ही परिवार सुख-शांति से पूर्ण होगा। आचार्य महाप्रज्ञ ने अपनी बात को समझाने के लिए दृष्टांतों, उद्धरणों तथा रोचक कथा-प्रसंगों का सहारा लिया। यह उनकी मौलिक शैली है। वह एक सफल शि ल्पी थे, शब्द-शिल्पी थे, शैलीकार थे। एक बार आचार्य तुलसी के समक्ष सभा में धर्माचार्यों के मंच पर या नीचे बैठने, बराबर बैठने की समस्या जैनेन्द्रजी जैसे महान चिंतक, साहित्यकार ने प्रस्तुत की, तो आचार्य ने कहा ''आप चिंता न करें, मैं नीचे बैठ जाऊँगा।'' यह है सहनशीलता, यह है सामंजस्य, यह है विनयशीलता। फिर संघर्ष या द्वन्द्व या घृणा-विद्वेष के लिए स्थान कहाँ? आचार्य महाप्रज्ञ ने स्पष्ट कहा है ''सहिष्णुता महान शक्ति है। बहुत शक्तिशाली व्यक्ति ही सहिष्णु हो सकता है। सहन करने का मतलब है शक्ति का विकास, शौर्य-पराकर्म का विकास।'' (प. 54)। परिवार की शांति सहिष्णुता पर निर्भर है। असहिष्णुता, कलह, संघर्ष, युद्ध की जननी है। आज विश्व में संवाद, सामंजस्य, समझौता और सहिष्णुता के द्वारा तृतीय महायुद्ध के विध्वंसकारी स्वरूप को रोकने की संचेष्टा की जा रही है। बीसवीं शताब्दी दो महायुद्धों की विभीषिका को भोग चुकी है। उस भयावह स्थिति को याद कर आज भी रूह काँप जाती है।

रोचक कथा-प्रसंगों से जो विवेक, ज्ञान का प्रदीप प्रज्वलित होकर हमारे अंधियारे जीवन को रोशनी से भरने का काम आचार्य महाप्रज्ञ जी ने किया है वह उनकी शैली की पहचान है। कहीं पौराणिक कथाएं हैं, कहीं ऐतिहासिक घटनाओं का उल्लेख है, कहीं लोककथाओं का उल्लेख है, कहीं संस्कृत श्लोकों का चित्रांकन है, कहीं साहित्यिक उद्धरण है। ये सभी पाठकों को रुचिकर लगते हैं और इनसे छनकर एक अनुपम चांदनी छिटक जाती है। एक स्थान पर संस्कृत-साहित्य का श्लोक का उद्धरण देकर करुणा एवं वात्सल्य की भावना को अभिव्यंजित किया है भयातुर हिरनी व्याध से याचना करती है कि मेरा नवजात शिशु भूखाकुल है। तुम्हें मांस चाहिए तो मेरे शरीर के किसी भी अंग से ले लो, लेकिन मेरे दो स्तनों को छोड़ देना। उन पर मेरे शिशु का जीवन निर्भर है। (प. 128)। इसी प्रकार के उद्धरण प. 34, 35, 54, 114 इत्यादि पर भी दृष्टव्य हैं।

आचार्य महाप्रज्ञजी ने महावीर स्वामी के कथनों का समावेश भी अपने मत के समर्थन में यत्र-तत्र किया। महावीर स्वामी का ऐसा मानना है कि किसी को बलपूर्वक धर्म का आचरण नहीं करवाया जा सकता, हाँ उसे सत्कर्म-पुण्यकर्म करने की प्रेरणा दी जा सकती है। साथ में दुराग्रह की उपेक्षा श्रेयस्कर है। वास्तव में आचार्यश्री अपना निर्णय बुद्धिमत्ता से स्वयं लेते थे और साधारण मनुष्य जनभावना का अनुसरण करता है। जहाँ तक आचार्य तुलसी का प्रश्न है वह भी स्वतंत्र रूप में स्वयं निर्णय लेते थे और अपने अनुभवों के आधार पर सहज ही किसी नतीजे पर पहुँच जाते थे।

'परिवार के साथ कैसे रहें' पुस्तक का प्रमुख उद्दे य आज की परिस्थितियों से जूझते मनुष्य तथा उसके परिवार को सुख- शांति का मार्ग दर्शाना है। समाज के बनते-बिगड़ते स्वरूप को सामने रखकर जो वर्तमान समस्याएं तथा विसंगतियां चतुर्दिश नज़र आती हैं उनका समाधान व्यावहारिक समाधान प्रस्तुत करते हैं। नारी के हाथ में परिवार की सुख-शांति है, वह इसी आधार पर परिवार की धुरी है, उसके स्वस्थ होने पर परिवार अवश्य ही स्वस्थ होगा, वह परिवार को अहिंसक तथा सुखी बना सकती है। यह पुस्तक हमारे जीवन का आईना है, समय की मांग है। शुद्ध सरल भाषा इसकी अलग विशेषता है। जगह-जगह सुंदर

शेष पृष्ठ 19 पर

ऐसो कौन मनुज जग माँहि

सुरेश पंडित

आचार्य महाप्रज्ञ के चिंतन और सृजन का जिन लोगों ने गहराई से अवगाहन किया है वे इनकी तुलना कई महान् विभूतियों से करते हैं। कोई उन्हें कबीर जैसा बताता तो कोई विवेकानंद जैसा। पर सच्चाई यह है कि वे किसी के जैसे नहीं हैं। न कोई उन जैसा है। सृष्टि के सारे जीव चाहे कितने ही हमशक्ल दिखाई दें वे हूबहू एक जैसे नहीं हैं। कोई न कोई लक्षण उनमें ऐसा जरूर है जो एक से दूसरे को अलग करता है। उसे विशिष्ट बनाता है। इसलिये किसी की किसी से तुलना तर्कसंगत नहीं हो सकती।

आचार्य महाप्रज्ञ अणुव्रत अनुशास्ता, अहिंसा के प्रचारक रहे। वे जो सोचते वही कहते और वही करते थे। ऐसा मन, वचन और कर्म का साम्य उन्हें सामान्य व्यक्ति के धरातल से ऊपर उठाता है। लोगों के लिये उन्हें अनुकरणीय बनाता है। अणुव्रत उनके जीवन का एक अंग था। अणुव्रत उनका आभूषण नहीं आचरण था। सब कुछ सहज प्राप्य होते हुए भी उनकी आवश्यकता न्यूनतम थी। उन्हें शीत-ताप, दुःख-सुख नहीं व्याप्तता था। संसार में रहते हुए भी वे सांसारिक मोह-माया से मुक्त रहे। महान् धार्मिक होते हुए भी वे धर्म की संकीर्णताओं से परे थे। किसी विशेष धर्म, जाति, सम्प्रदाय और कर्मकाण्ड के चौखटों में सिमटे न रहने के कारण वे सबके थे। सब उनके थे। उनका ज्ञान धर्मशास्त्र तक ही सीमित नहीं रहा। उनकी दृष्टि काल्पनिक नहीं रही। उनका आचार शास्त्र अव्यवहार्य नहीं था। वे आधुनिक ज्ञान-विज्ञान के ज्ञाता थे। उनकी सोच व्यावहारिक थी। उनके नैतिक नियम आचरणीय थे। उनकी हार्दिक उदारता, यथार्थपरक सोच, व्यक्तिनिष्ठ मनोविज्ञान की जानकारी और प्राणीमात्र के प्रति करुणा एवं सहानुभूति, वे विशेषताएं हैं जो उन्हें अन्य धर्मों, सम्प्रदायों के साधु-संतों से अलग करती हैं, उन्हें विशिष्ट बनाती हैं।

सन् 2001 से वे अहिंसा के प्रचार-प्रसार में संलग्न रहे। मानवीय एकता के उद्देश्य को लेकर उन्होंने आयु के 80वें दशक में अहिंसा यात्रा का नेतृत्व किया। इस यात्रा के द्वारा उन्होंने देश के कोने-कोने में घूम-घूम कर लोगों को हिंसा त्यागने और अहिंसा अपनाने के लिए प्रेरित किया।

आधुनिक युग में महात्मा गांधी के बाद वे पहले व्यक्ति थे जिन्होंने अहिंसा के प्रचार को इस कदर महत्त्व दिया। गांधी का अहिंसा अभियान देश के स्वाधीनता संग्राम को व्यापक व प्रभावी बनाने का था। यद्यपि व्यक्ति के लिए आत्मसंयम और आत्मानुशासन के पूर्वाभ्यास को उन्होंने आवश्यक माना। उनकी रणनीति कुछ हद तक कामयाब भी हुई। परन्तु आचार्य महाप्रज्ञ के सामने गांधी से भी बड़ी चुनौती थी। इस उत्तर आधुनिक युग में धर्म भी एक अतिशय लाभ कमाऊ उद्योग में रूपान्तरित हो गया। बिना त्याग, तपस्या व ज्ञानार्जन के इस क्षेत्र में अनेकानेक धुरंधर धर्माचार्य, योगाचार्य, अध्यात्म गुरू, महामंडलेश्वर, साधु, संत, महर्षि, ब्रह्मर्षि, कथावाचक, लीला प्रदर्शक आदि अवतरित हो गये और उच्च तकनीक प्रचार-प्रसार के जरिये हजारों की भीड़ को अपनी ओर आकर्षित किया। उनके शाही ठाठ-बाट, आडम्बर भरे अनुष्ठान और उच्च कोटि के अभिनय एवं गायन कौशल ने लोगों को इस कदर भ्रमित किया कि वे असली-नकली की पहचान ही खो बैठे। ऐसे माहौल में महाप्रज्ञ के सामने एक चुनौती यही रही कि इन छद्म धर्मध्वजियों की प्रतिद्वन्द्विता में बिना आये कैसे अपनी अलग पहचान बनाये रखी जाय और लोगों को अपनी बात सुनाने के लिये जोड़े रखा जाय।

और दूसरी चुनौती, भूमण्डलीकरण को सफल बनाने के लिये उदारीकरण और निजीकरण को जिस तरह बढ़ावा दिया जा रहा है उससे पनपते उपभोक्तावाद की है जिसका मूलमंत्र है अधिकाधिक उत्पादन और अधिकाधिक खपत। खपत बढ़ाने के लिए नितांत अनावश्यक वस्तुओं को भी जीवन के लिये अनिवार्य बनाने के उद्यम हो रहे हैं। मीडिया को वाहन बना निरन्तर ऐसी बातों का प्रचार किया जा रहा है जिससे देशज संस्कृतियों का अवमूल्यन हो और एक ऐसी संस्कृति का उद्भव हो जिसका यहाँ की परम्पराओं, नैतिक मूल्यों, रीति-रिवाजों, जीवनशैलियों से कोई तादात्म्य नहीं। मीडिया खासतौर से सिनेमा और टेलीविजन पूरी तरह से उन ताकतों के हाथों में चले गये हैं जो अपना माल बेचने के लिए इन्हें मनोरंजन करने का उपकरण

हमें लगता है आने वाली पीढ़ियां इस सत्य को भी मुश्किल से ही स्वीकार कर पायेंगी कि हिंसा के एक सर्वव्यापी माहौल में आचार्य महाप्रज्ञ जैसे 83 वर्ष के वृद्ध ने अहिंसा की एक ऐसी अलख जगाई थी जिसने बर्बर होते समाज को शांति और भाईचारे के साथ रहने के लिए तैयार किया।

बनाने पर तुले हैं। पारंपरिक मनोरंजन के साधनों को नष्ट कर या अपने जैसा बनाकर ये हिंसा व सैक्स का इतना अधिक प्रदर्शन कर रहे हैं ताकि लोग इनसे होने वाले पाप-बोध से मुक्त हो, इन्हें व्यवहार में लाने में संकोच न करें। मुक्त यौनाचार और मनोरंजन के लिये हिंसा का धुंआधार प्रचार इन जनमाध्यमों से लगातार चालू है। जाहिर है ऐसे माहौल में आचार्य महाप्रज्ञ की अहिंसा की मुहिम एक तरह से ऐसी महाशक्ति से टकराहट थी जो ब्रिटिश साम्राज्यवादी ताकत से भी बहुत बड़ी है। उसने लोगों के मन में यह बातें गहराई से बैठा दीं कि भूमण्डलीकरण का कोई विकल्प नहीं है। उपभोक्तावाद का बढ़ना विकासशील अर्थव्यवस्था का परिचायक है। गरीबी, बेकारी, भुखमरी का समाधान बाजार कर सकता है। सैक्स और हिंसा वर्जन योग्य नहीं है। अलग-अलग देशों की संस्कृतियों के स्थान पर एक सार्वभौम संस्कृति का होना जरूरी है। आचार्य महाप्रज्ञ जानते थे कि इन बहुराष्ट्रीय कम्पनियों द्वारा नियंत्रित व्यवस्था से लड़ना आसान नहीं। उनके मुकाबले इनके पास न अर्थ की ताकत थी, न मीडिया की और न अन्य भौतिक संसाधनों की। फिर भी वे इनसे टकराने के लिए आमादा हुए तो सिर्फ इसलिए क्योंकि उनका मानना था कि हिंसा का जवाब अहिंसा ही दे सकती है। एक 85 साल का व्यक्ति जब संकल्प लेकर अहिंसा के अभियान पर निकल पड़ता है तो लोग भी उसका साथ देते ही हैं। क्योंकि हिंसा का लगातार प्रचार होते रहने के बावजूद अहिंसा की अपील को वे ठुकरा नहीं पाते। आचार्य महाप्रज्ञ का अहिंसा यात्रा का अभियान एक सार्थक मंजिल तक पहुँचा और उसने लाखों लोगों की मानसिकता पर अपना प्रभाव अंकित कर दिया।

भूमंडलीकरण एक ओर जहाँ लोगों को परिवार, समुदाय और देश की सीमाओं का परित्याग कर सारे विश्व को अपना समझने की बात करता है वहीं स्थानीय स्तर पर उन्हें जाति, नस्ल, लिंग, संप्रदाय और धर्म के नाम पर बांटने व लड़ने के लिए जमीन तैयार करता है। कॉरपोरेट कल्चर जिस तरह चंद लोगों को समृद्धि के शिखरों की ओर बढ़ा रही है उसी तरह यह नवधनाढ्यता दिन दूने होते अपने मुनाफे का कुछ प्रतिशत धन पूजांग हों, धार्मिक, साम्प्रदायिक व जातीय संस्थाओं को देकर उन्हें परस्पर प्रतिद्वन्द्वी बना रही है। इस प्रतिद्वन्द्विता को अधिक उग्र व हिंसक बनाने का काम दलगत राजनीति कर रही है। राजनैतिक दल चुनाव लड़ने के लिये इनसे पैसा लेते हैं और भावनात्मक मुद्दे उठाकर लोगों को जाति, धर्म, सम्प्रदाय के नाम पर एक-दूसरे से लड़ाते हैं ताकि स्वयं को इनका रहनुमा साबित कर इनके एकमुश्त वोटों के जरिये चुनाव जीत कर सत्ता के गलियारों तक पहुँच सकें। इसी से गुजरात का नरसंहार होता है और लोगों की सुरक्षा व खुशहाली का दम भरने वाली सरकारें और सरकारी/गैर सरकारी संस्थाएं निष्कर्षहीन वाद-विवाद के अलावा कुछ नहीं करती। कोई जातीय/सामाजिक/धार्मिक नेता अपने अनुयायियों के साथ उन्हें समझाने, उन्हें शांत करने या उनकी सहायता करने के लिए नहीं गया। ऐसे निष्ठुर आपाधापी के माहौल में आचार्य महाप्रज्ञ ने अपने अनुयायियों के साथ साहस पूर्वक उस हिंसा की ज्वालामुखी को शांत करने की न केवल एक अविस्मरणीय पहल की बल्कि तब तक वहाँ जमे रहे जब तक एक-दूसरे के खून के प्यासे लोग अपने पाशविक कृत्यों से विरत नहीं हुए।

उनका अहिंसा यात्रा का अभियान लगभग 8 वर्ष तक चला। इससे लोगों में विश्वास पैदा हुआ है कि हिंसा पर अहिंसा विजय जरूर पा सकती है पर शर्त यह है कि आचार्य महाप्रज्ञ जैसा कोई व्यक्ति सिर पर कफन बांधकर अविचल संकल्प के साथ घर से निकल पड़े।

सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक अल्बर्ट आइंस्टीन ने कभी गांधी और उनके काम की प्रशंसा में यह कहा था कि आने वाली संतानें इस बात पर बड़ी मुश्किल से यकीन करेंगी कि एक दुबले-पतले साधारण से आदमी ने दीन-हीन निहत्थे देशवासियों को साथ लेकर ब्रिटिश साम्राज्य को अपनी मांगे मानने के लिये मजबूर कर दिया था। हमें लगता है आने वाली पीढ़ियां इस सत्य को भी मुश्किल से ही स्वीकार कर पायेंगी कि हिंसा के एक सर्वव्यापी माहौल में आचार्य महाप्रज्ञ जैसे 83 वर्ष के वृद्ध ने अहिंसा की एक ऐसी अलख जगाई थी जिसने बर्बर होते समाज को शांति और भाईचारे के साथ रहने के लिए तैयार किया।

383 स्कीम नं. 2, लाजपत नगर,
अलवर-301001

- शेष पृष्ठ 17 का

प्रसंगानुसार सूक्तियों का प्रयोग इसकी शैली को रोचक बनाता है। जैसे 'पारिवारिक जीवन संबंधों का जीवन है।' (69), 'गृहस्थ जीवन मुनि जीवन से कम बड़ी साधना नहीं है। (151), 'अध्यात्म साथ में होता तो साम्यवाद विफल नहीं होता।' (6), 'अहंकारी मनुष्य में पुरुषार्थ कम होता है।' (10), 'परिवार सामंजस्य का एक प्रयोग है', 'समाज ममत्व की भावना से बनता है' आदि।

16 अध्याय तथा 157 पृष्ठों की यह पुस्तक परिवार को शांति, सह-अस्तित्व अथवा अहिंसा के मार्ग को प्रशस्त करने वाला दस्तावेज़ है जो आचार्य महाप्रज्ञजी के दीर्घ अनुभवों, प्रयोगों का सुंदर संयोजन है। कहने को सार रूप में इतना काफ़ी है कि जहाँ व्यवहार या आचरण सुंदर होता है वहाँ परिवार में शांतिपूर्ण सहवास होता है और उसी से देश में सुव्यवस्था तथा विश्व में शांतिमय सह-अस्तित्व की शीतल बयार हमेशा बहती रहती है। आचार्य महाप्रज्ञजी को प्रणाम।

मोहल्ला-साजगारीपोरा, पो.- श्रीनगर-190011 (जम्मू-कश्मीर)

विद्या वारिधि

'तेरापंथ के आचार्यों के इतिहास में आज का दिन विशिष्ट दिन के रूप में आया है, जब किसी आचार्य ने 9 के अंक में प्रवेश किया है। हमारी कामना है कि हम आगे से आगे आपका जन्मदिन आपके पावन सान्निध्य में ही मनाते रहें।

आचार्यप्रवर के व्यक्तित्व की खास विशेषता यह है कि धर्म, अध्यात्म, योग साधना, साहित्य के साथ-साथ समाज और राष्ट्र के परिप्रेक्ष्य में भी उल्लेखनीय कार्य किया है। इस सभा में धर्म क्षेत्र के लोग भी उपस्थित हैं और राजनीति के क्षेत्र के लोग भी उपस्थित हैं। दोनों का विशिष्ट समन्वय अद्‌भुत दृश्य उपस्थित कर रहा है। आचार्यश्री के समन्वयवादी दृष्टिकोण का ही परिणाम है कि आज धर्म-संप्रदाय, समाजसेवा, साहित्य और राजनीति क्षेत्र से जुड़े लोग आपके प्रति असीम श्रद्धा और सम्मान व्यक्त करते हैं।

'कुछ व्यक्तियों को ऐसा योग या कहें ऐसा क्षयोपशम प्राप्त होता है कि वे विद्या के क्षेत्र में बहुत आगे बढ़ जाते हैं। विद्या उनके जीवन का मुख्य आयाम बन जाती है। लगता है आचार्यश्री महाप्रज्ञ को भी कोई ऐसा विशिष्ट क्षयोपशम प्राप्त है, विशिष्ट प्रतिभा और प्रज्ञा की लब्धि प्राप्त है और साथ ही निमित्त भी बहुत ज्यादा मिले हैं। प्रतिभा आदमी में होती है, किन्तु परिस्थितियां भी उनकी सहायक बनती हैं तो प्रतिभा और प्रज्ञा जीवंत बनकर उनके जीवन में उतरती है।

जब मैं गुरुदेव तुलसी के जीवन पर दृष्टिपात करता हूं तो मुझे लगता है कि उनके पास प्रतिभा-प्रज्ञा का बल बहुत था। उनका क्षयोपशम भी अच्छा था, किन्तु उनका कार्यक्षेत्र दो भागों में बंटा हुआ था। एक भाग विद्याराधना का, दूसरा भाग जनाराधना का। उनका जितना समय विद्याराधना में लगता था उतना ही या कहें कि उससे ज्यादा समय जनाराधना में लगता था। शिक्षा, प्रवचन, उपदेश आदि के द्वारा वे जीवन भर लोगों के कल्याण के लिए सचेष्ट रहे। संघ की व्यवस्था और सार-संभाल का काम भी उन्होंने जीवन की आखिरी सांस तक किया। लोगों को उद्‌बुद्ध करने का कार्य जनाराधना के अंतर्गत आता है। इस जनाराधना में उन्होंने विद्याराधना का समय भी नियोजित कर दिया। आचार्य तुलसी और आचार्य महाप्रज्ञ दोनों महापुरुषों के व्यक्तित्व में एक-दूसरे का उद्‌भुत सम्मिश्रण देखा जा सकता है।

मेरी यह धारणा बनती जा रही है कि संघ के आचार्य को एक सहायक की अपेक्षा रहती है। वह सहायक व्यवस्थाप्रधान और बुद्धिप्रधान दोनों होना चाहिए। आचार्य तुलसी को पहले मुनि नथमलजी के रूप में, बाद में युवाचार्य महाप्रज्ञ के रूप में यह सेवा या कहें, सुविधा प्राप्त थी। गुरुदेव तुलसी के कई दृष्टियों से सौभाग्यशाली होने के क्रम में एक बात मैं यह मानता हूं कि उन्हें मुनि नथमल और बाद में महाप्रज्ञ जैसा व्यक्तित्व सहायक के रूप में प्राप्त हुआ। इस तरह का सहायक मिल जाए तो आचार्य निश्चिंतता के साथ अपना कार्य करते हैं।

आचार्य प्रवर विद्या के क्षेत्र में वारिधि हैं। आपके सैंकड़ों ग्रंथों को छोड़ भी दिया जाए तो एक 'जैन दर्शन : मनन और मीमांसा' ही आपको जैनविद्या के क्षेत्र का शिरोमणि बनाने के लिए पर्याप्त है। कोई मननपूर्वक इस ग्रंथ का गंभीरता से अध्ययन कर ले तो यही एक ग्रंथ उसे जैन विद्वान बना देने में सक्षम है। आचार्यवर का 90वां जन्म दिवस सबके लिए कल्याणकारी और प्रेरक बने, यह मंगलकामना।

युवाचार्य महाश्रमण

आचार्य महाप्रज्ञ के 90वें जन्म दिवस पर प्रदत्त

21 जून 2009 : लाडनूं

शब्दातीत, विचारातीत, तर्कातीत व्यक्तित्व

'एकमात्र शिक्षा ही असाधारणता का हेतु नहीं है। जीनियस होने के लिए प्रसिद्ध शिक्षा संस्थान की ऊंची डिग्री आवश्यक नहीं होती। भौतिकशास्त्र में क्रान्ति करने वाले महान वैज्ञानिक आइंस्टीन, आंतरिक अन्वेषण के प्रवर्तक वांग ब्रान के पास पी.एचडी. की डिग्री नहीं थी, फिर भी अपने कार्य से वे विश्व के शीर्ष वैज्ञानिकों में स्थापित हुए। विभिन्न क्षेत्रों में और भी सफल और विश्रुत नाम हैं, जिन्होंने अपनी विशिष्टता की छाप छोड़ी, किन्तु उनमें से कई लोग ऐसे हैं, जिनकी स्कूली शिक्षा नहीं हुई। उन्हीं में से एक हैं आचार्य महाप्रज्ञ, जिन्होंने कभी स्कूल का प्रवेश द्वार नहीं देखा, फिर भी दार्शनिक जगत में अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त की। स्थूल रूप से कोई भी कारण हमारे सामने स्पष्ट नहीं होता, लेकिन ऐसा माना जाता है कि व्यक्ति का अपना उत्साह, लगन, पुरुषार्थ, जमीनी सोच, आधुनिक दृष्टि आदि ऐसे उपक्रम हैं, जिनके माध्यम से व्यक्ति तलहटी से शिखर तक पहुंच सकता है।

एक बार एक सौ सोलह प्रमुख दार्शनिकों ने चिंतन किया कि कोई ऐसा संस्थान होना चाहिए, जिससे भारतीय दर्शन की विभिन्न शाखाओं का विकास हो सके। इसके लिए उन्होंने 'इंटरनेशनल सोसायटी फॉर इंडियन फिलॉसफी' नाम का संस्थान स्थापित करने की बात सोची। उन एक सौ सोलह दार्शनिकों की कार्यसमिति में विश्व के जिन मुख्य दार्शनिकों, शिक्षाविदों और चिंतकों को शामिल किया गया, उनमें एक प्रमुख नाम था आचार्य महाप्रज्ञ का। धर्म और दर्शन के क्षेत्र में विशिष्ट योगदान के कारण ही देश-विदेश के शिखरस्थ दार्शनिकों का ध्यान आचार्यश्री की ओर आकृष्ट हुआ और उन्होंने भारतीय दर्शन की कांग्रेस समिति में आचार्य महाप्रज्ञ का नाम मनोनीत किया।

आचार्यश्री की दार्शनिक ऊर्जा के बारे में कुछ कहना बहुत कठिन है। इसीलिए मैं कहना चाहूंगी कि आचार्यश्री दार्शनिक ऊर्जा के महाकाव्य हैं। दर्शन और काव्य- ये दोनों परस्पर विरोधी बातें हैं, लेकिन भगवान महावीर के अनेकान्त दर्शन के व्याख्याता और प्रवक्ता होने के कारण आचार्यश्री दर्शन को काव्य बना देते हैं और काव्य को दर्शन बना देते हैं। आपके व्यक्तित्व की और आपकी दार्शनिकता को मापने का कोई प्रयास करता है तो यह अमाप्य को मापने का प्रयास ही कहा जाएगा। संक्षेप में अगर आपके व्यक्तित्व की व्याख्या की जाए तो कहा जा सकता है *आचार्यश्री शब्दों के धनी हैं, किन्तु आप शब्दातीत चेतना में जीते हैं।*

आचार्यश्री महान विचारक हैं, किन्तु विचारातीत होकर रहते हैं।

आचार्यश्री महान तार्किक हैं, किन्तु आपका श्रद्धा-बल इतना अखूट है कि उसके द्वारा आप तर्कातीत बन जाते हैं।

जो शब्दातीत, विचारातीत और तर्कातीत है, उसके बारे में कोई भी अभिव्यक्ति शब्दों के द्वारा नहीं की जा सकती। आचार्यश्री ने अनेक क्षेत्रों में, अनेक दिशाओं में अपनी पहचान बनाई है। आपकी धीरता, गंभीरता और किसी भी परिस्थिति में अविचल रहने का भाव बहुत कार्यकारी बना है। आचार्यश्री के चिंतन की आज तेरापंथ को ही नहीं, जैन शासन को ही नहीं, पूरी दुनिया को जरूरत है। आज की ज्वलंत समस्याओं का समाधान खोजने की दृष्टि से हमारे देश के जितने भी प्रबुद्ध चिंतक और विचारक प्रयत्नशील हैं, वे सब आचार्यश्री से मार्गदर्शन लेते हैं। आचार्यश्री ने स्वयं अपने जीवन में इस दृष्टि से बहुत गहराई से सोचा है। आपने एक बार कहा था कि आज की जागतिक सामस्याओं के समाधान के लिए एक नए मनुष्य का निर्माण करना होगा। इक्कीसवीं सदी में प्रवेश की चर्चा हो रही थी तो आपने कहा था कि जिस रूप में आज हैं, इसी रूप में नई सदी में प्रवेश करेंगे तो कुछ भी होने वाला नहीं। नए मनुष्य का निर्माण करने की सोच लेकर नई सदी में जाएंगे तो नया कुछ हो सकेगा।

मेरा ऐसा मानना है कि और सब निर्माण सरल हों या न हों, किन्तु व्यक्तित्व का निर्माण बहुत जटिल है और कठिन है। यह काम कालावधि विशेष का नहीं, इसके लिए लंबा समय चाहिए। नए मनुष्य का निर्माण किसी मशीन से नहीं होगा। यह होगा तो आपके द्वारा दी गई दृष्टि से होगा। इसके लिए कम से कम एक दशक तो आपको इस धरती पर रहना ही होगा। आज हम आपका 90वां जन्मदिवस मना रहे हैं। एक दशक बाद हम इसी सुधर्मा सभा में आपका 100वां जन्मदिवस मनाएं, यही मेरी कामना है।

साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा

आचार्य महाप्रज्ञ के 90वें जन्म दिवस पर प्रदत्त, 21 जून 2009 : लाडनूं

प्रज्ञा प्रवर को प्रणाम

अमृत जैन

आचार्य महाप्रज्ञ ने अपने जीवन में विकास के उच्च शिखरों का आरोहण किया है। गहन ज्ञान प्रायोगिक योग और अनुभवसिक्त ध्यान की अनमोल निधि ने उनकी विकास यात्रा में पाथेय का कार्य किया है। उन्होंने जीवन के विविध आयामों को छुआ है, मानवता के बहुमुखी विकास के सूत्र दिए हैं। अपने ज्ञान और अनुभव का प्रसाद निरंतर बांट रहे हैं। अनेकांत के जीवंत प्रतीक आचार्य श्री महाप्रज्ञ मानवमात्र को जिस तरह के जीवन जीने की सीख देते हैं वे स्वयं उसका उत्कृष्टतम स्वरूप थे। एक निश्छल बालक, एक आज्ञाकारी शिष्य, एक ज्ञान पिपासु विद्यार्थी, एक अकिंचन मुनि, एक ज्ञानगंगा प्रवाहक गुरु, एक आध्यात्मिक वैज्ञानिक व्यक्तित्व, एक महान दार्शनिक, एक संघ प्रभावक आचार्य, एक कुशल शिल्पी, एक प्रभावक प्रवचनकार, एक महान साहित्यकार, एक आगम मर्मज्ञ, एक योग्य अनुशास्ता जैसे न जाने कितने रूपों का प्रतिबिम्बन दायित्वों का निर्वहन और भूमिकाओं का जीवन उन्होंने सरलता, सहजता और संजीदगी से जीया है।

नवमाधिशास्ता आचार्य तुलसी ने उन्हें महाप्रज्ञ के नाम से नवाजा और महाप्रज्ञ ने अपने नाम को सार्थक किया। अपने जीवन की सफलता का रहस्योद्घाटित करते हुए उन्होंने छोटी-सी बात में से एक बहुत बड़ा संकल्प लेने की बात बताई है और वे है अपने भाग्य को कभी मंद नहीं पड़ने दूंगा। इसी संकल्प की बदौलत वो सदैव प्रमाद रहित जीवन जीते हैं। इस प्रकार उन्होंने महावीर वाणी समयं गोयम। मा पमायए क्षण भर भी प्रमाद मत करो को एक आदर्श वाक्य के रूप में लिया था। यही उनकी श्रमशीलता का आधार है, समय नियोजन का सूत्र है। अपेक्षित और आवश्यक है कि संघ का हर सिपाही, हर सदस्य अपने गुरु के गुणों का अनुसरण करने का प्रयास करे।

समय को अप्रमादता के साथ-साथ आचार्यश्री जागरूकता का जीवन जीते थे। प्रेक्षाध्यान के प्रणेता का जीवन ही उनकी प्रयोगशाला है। समस्या का समाधान देते हुए वे समस्या का हिस्सा नहीं बनते हैं शायद यही उनके तनावरहित जीवन का मर्म था। अप्रमत्तता, अकिंचनता और अनासक्ति की त्रिवेणी के संगम आचार्य महाप्रज्ञ के जीवन के एक-एक गुण प्रेरणा के स्रोत थे। जैनाचार्य की चर्याओं और तेरापंथ की मर्यादा में बंधे रहकर अहिंसा यात्रा के द्वारा वक्त की नजाकत समझाते हुए अहिंसा को प्रतिष्ठापित, प्रतिपादित और प्रसारित करने का महान कार्य उन्होंने हाथ में लिया। उसी का प्रतिफलन है कि न सिर्फ राष्ट्रीय स्तर पर बल्कि अंतर्राष्ट्रीय हलकों में भी उनके दर्शन की अनुगूंज अक्सर सुनाई देती थी। महान वैज्ञानिक डॉ. कलाम के साथ उनके चिंतन की सहभागिता का प्रतिफलन और मूल्यांकन आज नहीं किया जा सकता। जीवन विज्ञान के माध्यम से भावी पीढ़ी का सर्वांगीण विकास हो रहा है। व्यक्तित्व निर्माण के साथ-साथ व्यक्तियों के जीवन निर्माण में श्रमशील रहना आचार्यवर की खासियत थी। वे शिक्षण-प्रशिक्षण को अपनी दिनचर्या का महत्तम अंग मानते थे।

साभार : 'अमृत इंडिया' दैनिक, 10 मई, 2010

पुण्य स्मरण

इकराम राजस्थानी

मैं अपने आपको सौभाग्यशाली मानता हूँ कि मुझे आचार्य महाप्रज्ञ के पावन चरणों में बैठकर, उनसे आशीर्वाद प्राप्त करने का अवसर अनेक बार मिला। मैं उस समय से उनके व्यक्तित्व से परिचित हूँ, जब वे अणुव्रत प्रवर्तक आचार्य श्री तुलसी के परमशिष्य युवाचार्य के रूप में, मानवमात्र की सेवा का संकल्प लिए हुए, भक्ति पथ पर अग्रसर हो रहे थे। मुझे अनेकों बार, मुख्य वक्ता के रूप में जैन वि व भारती में आमंत्रित किया गया। अभी कुछ समय पूर्व ही अणुव्रत लेखक सम्मेलन में मुझे मुख्य अतिथि के रूप में शिरकत करने का मौका मिला। आचार्य महाप्रज्ञ के महान व्यक्तित्व ने और उनके विश्व शांति के स्वप्न ने मुझे बेहद प्रभावित किया। एक छोटे से गांव टमकोर में जन्म लेकर वे संयुक्त राष्ट्र संघ जैसी विश्व स्तरीय संस्था में अपने इस शान्ति स्नेह के संदेश के लिए पहचाने गए।

मैं जब भी उनसे मिला, ऐसा प्रतीत हुआ जैसे त्याग, सेवा और सद्भाव की मूर्ति मेरे समक्ष है। उन्होंने मुझे हमेशा ही अपार स्नेह और आशीषों से नवाज़ा। वे मुझसे मिलकर बेहद प्रसन्न होते थे और मुझ पर स्नेह की दृष्टि इस प्रकार डालते कि मेरा अंतर्मन तक आलोकित हो जाता था। अहिंसा यात्रा लेकर वे घर-घर, नगर-नगर में घूमे। उनके जीवन काल में उन्हीं के जीवन पर आधारित एक खंड काव्य लिखने का सौभाग्य भी मुझे प्राप्त हुआ। इस खण्ड काव्य के कुछ अंश मैंने उनके समक्ष लाडनूं में जब प्रस्तुत किए तो पूरा पांडाल जैसे उनकी मुखमंडल शोभा से आलोकित हुआ। उन्होंने स्वयं मुझे अपने पास बुलाकर मुझे आशीर्वाद प्रदान किया और युवाचार्य महाश्रमण को, अनेकों साधुओं की उपस्थिति में इस खण्ड काव्य को प्रकाशित करने एवं फिल्म निर्माण के संबंध में दिशा-निर्देश प्रदान किए।

आज यह खण्ड काव्य, जिसका प्रत्येक शब्द आचार्य महाप्रज्ञ की ज्ञानदृष्टि से आलोकित है, एक अनमोल धरोहर के रूप में मेरे पास है। जब उनके शेष सपनों को साकार करने का समय आएगा ये खण्ड काव्य भी काल पात्र में संग्रहित हो जाएंगे। मुझे विश्वास है, इस संबंध में उनके अनुयायी मेरा सहयोग अवश्य करेंगे क्योंकि मैं भी आचार्य महाप्रज्ञजी की जीवन यात्रा का एक कण बनकर संसार पटल पर ये खण्ड काव्य अंकित करना चाहता हूँ। उनके श्रीचरणों में सादर नमन्।

धरती की गोद से उठा, आकाश बन गया।
एक व्यक्ति, सारे विश्व का इतिहास बन गया।।

भारतीय अध्यात्म परम्परा के युगदृष्टा

आचार्य महाप्रज्ञ की अहिंसा यात्रा ने देश में हिसंक गतिविधियों में कमी लाने का महत्त्वपूर्ण कार्य किया। हर सम्प्रदाय को भावों के बंधन में बांधा। उनकी कमी हमेशा खलेगी।

भैरोसिंह शेखावत

पूर्व उपराष्ट्रपति

आचार्य महाप्रज्ञजी एक महान् दार्शनिक संत थे, जिन्होंने अणुव्रत आंदोलन को एक नई दिशा दी तथा अहिंसा, भाईचारा और शान्ति का संदेश जन-जन में पहुँचाया। आचार्यश्री का देहांत देश के लिए तथा विशेषकर तेरापंथ समाज के लिए बहुत बड़ी क्षति है।

हंसराज भारद्वाज

राज्यपाल : कर्नाटक

आचार्य महाप्रज्ञ ने अहिंसा यात्रा के माध्यम से देश में शांति एवं अहिंसा का संदेश प्रचारित किया। महाप्रज्ञजी भौतिक चिंतक, दार्शनिक और शांति के पुजारी थे। अणुव्रत, जीवन विज्ञान, प्रेक्षाध्यान, अहिंसा चेतना जागरण जैसे सद्कार्यों को समर्पित उनका महान व्यक्तित्व एवं कृतित्व समाज को सदैव प्रेरणा प्रदान करता रहेगा।

अशोक गहलोत

मुख्यमंत्री : राजस्थान

जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के दशम अधिशास्ता एवं अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाप्रज्ञ के महाप्रयाण का समाचार पाकर बहुत दुःख हुआ। मानव धर्म और अहिंसा का प्रसार करने के कार्य में आचार्य महाप्रज्ञजी ने बहुमूल्य योगदान दिया है। शांति और अहिंसा के प्रसार के लिए उनके द्वारा निकाली गयी यात्रा लोकप्रिय साबित हुई थी, उनके आकस्मिक निधन से मानवता और अहिंसा के लिए कार्य करने वाले शांतिदूत को हमने खोया है। उनका कार्य हमेशा के लिए याद किया जायेगा। अहिंसा और मानवता का उनका कार्य आगे जारी रखना उन्हें सही आदरांजलि होगी।

अशोक चव्हाण

मुख्यमंत्री : महराष्ट्र

यद्यपि मुझे आचार्यश्री महाप्रज्ञजी के दर्शन करने का सौभाग्य नहीं मिला लेकिन मैंने उनके आयाम अणुव्रत एवं जीवन विज्ञान के बारे में बहुत सुना। मैं पूरे मानव समाज को आह्वान करता हूँ कि ऐसे महापुरुष के आदर्शों पर चलना ही उनको सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

बी.एस.येडीयूरप्पा

मुख्यमंत्री : कर्नाटक

परमश्रद्धास्पद पूज्यपाद आचार्य महाप्रज्ञजी का देहावसान समस्त मानव समाज के लिए एक असहनीय आघात है। समस्त विश्व के मंगल की कामना को लेकर वैश्विक जीवन के मूल सत्य की अनुभूति अपने कृति में जीकर दिखाने वाले वे हम सबके लिए जीवनपथ पर दीपस्तंभ समान थे। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ पर उनकी अकृतित्रम व अयाचित कृपादृष्टि सदैव रहती थी। उनसे प्रत्यक्ष मिलने का सौभाग्य मुझे एक से अधिक बार प्राप्त हुआ था। उनका निरपेक्ष स्नेह, समस्याओं का अचूक निदान व सरल किंतु परिणामकारक समाधान देने की शैली व सभी को सही पथ पर चलाने की क्षमता का उनके सर्वस्पर्शी, गहन व व्यापक ज्ञान संपदा के साथ मैंने अनुभव किया है। ऐसे महापुरुषों का भौतिक वियोग सभी के लिए दुःखद व दुःसह है। फिर भी उनके जीवनकृति की स्मृति विश्वमानवता के लिए नित्यजीवन की शाश्वत दिग्दर्शिका है। अब हम सबको उसी का आधार है। उनकी पवित्र स्मृति में मेरी व्यक्तिगत तथा राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की ओर से हार्दिक विनम्र श्रद्धांजलि।

मोहन भागवत

सरसंघचालक : राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ नागपुर

आचार्य श्री महाप्रज्ञजी के देहविलय की खबर सुनकर अत्यंत खेद हुआ। पूज्य महाप्रज्ञजी के देहात से अहिंसा के संदेश को जन-जन तक पहुँचाने वाले अहिंसा के एक महान दूत की कमी सदा के लिए महसूस होती रहेगी। पूज्य श्री महाप्रज्ञजी एक महान संत के रूप में अनेक लोगों के हृदय में आसीन थे। विनम्रता, उदारता, करुणा, धैर्य, मैत्री आदि सद्गुणों से आचार्यश्री का संतत्व आलोकित था। आध्यात्मिकता के आदर्शों को अपने जीवन में साकार करके अनेकों के जीवन में साकार करने के लिए उन्होंने अपना जीवन समर्पित किया था। एक चिंतक के रूप में उन्होंने जीवन विज्ञान एवं प्रेक्षाध्यान से लेकर कई सामाजिक समस्याओं पर अपना मौलिक चिंतन दिया था।

अक्टूबर, २००५ में दिल्ली में स्वामीनारायण अक्षरधाम के उद्घाटन महोत्सव के अवसर पर उपस्थित रहकर पूज्य महाप्रज्ञजी ने हमारे साथ मैत्री का एक सेतु बांध लिया था। ऐसे महान संत के देहविलय से अत्यन्त खेद हुआ है। भगवान श्री स्वामिनारायण के चरणों में प्रार्थना करते हुए मैं आचार्यश्री महाप्रज्ञजी के प्रति अपनी हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ।

शास्त्री नारायण स्वरूपदास

(प्रमुखस्वामी महाराज) के सादर जय स्वामीनारायण

आचार्यश्री महाप्रज्ञजी के महाप्रयाण पर हमें बहुत दुःख हुआ। वे जैन समाज के बहुत बड़े मसीहा थे। उन्होंने मानव समाज के उत्थान के लिए सम्पूर्ण जीवन लगा दिया।

महात्मा सौम्यानन्द

प्रभारी : मानव उत्थान सेवा समिति बैंगलोर

आचार्य महाप्रज्ञजी महापुरुष थे। उन्होंने भारत में ही नहीं विश्व में शान्ति लाने के लिए अपना जीवन अर्पित कर दिया। सम्यक् ज्ञान, दर्शन, चारित्र के रूप में परमार्थ के लिए कार्य किया। सारे विश्व को शान्ति व शाश्वत आशीर्वाद दिया जो हमारे जीवन के लिए महत्त्वपूर्ण है। उनके संदेश मानव जीवन को पवित्र बनाने में अति महत्त्वपूर्ण है।

शान्तवीर स्वामी

अध्यक्ष : अंतर्राष्ट्रीय आध्यात्मिक सलाहकार स. न्यूयार्क पीठाधिपति कोलन्दे महासंस्थान बैंगलोर

आचार्यश्री महाप्रज्ञजी एक महान् दार्शनिक संत थे। कर्नाटक के बसवेश्वर ने जो क्रान्ति की वही काम सारे राष्ट्र में महाप्रज्ञजी ने किया। उनके आदर्शों पर चलना ही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

डॉ. शिवकुमार महास्वामी

श्री सिद्धगंगामठ, टुमकुर

आचार्य महाप्रज्ञजी का लाडनूं में मुझे दर्शन करने का सौभाग्य मिला। उनका चिंतन व कार्यशैली से मैं बहुत प्रभावित हुआ। उनका साहित्य व दर्शन सारे विश्व में प्रथम स्थान पर है। उनके महाप्रयाण पर सम्पूर्ण मानव समाज स्तंभित है।

जगतगुरू शिवरात्री देशी केन्द्र

महास्वामी : श्री सुत्तुरमठ, मैसूर

श्रद्धा-सुमन

आचार्यश्री महाप्रज्ञजी एक महान् दार्शनिक व चिंतक थे। उनकी जीवनशैली सब संतों के लिए एक आदर्श है। राष्ट्र ने एक महान् चिंतक, दार्शनिक व महात्मा संत को खो दिया है।

श्री मुरूगासरणरू
श्री मुरूगामठ, चित्रदुर्ग

आचार्य महाप्रज्ञजी भारतीय आध्यात्मिक क्षेत्र के एक उज्जवल देदीप्यमान नक्षत्र थे। वे मानव जाति के मसीहा थे। मेरे मन में उनके चिंतन एवं दर्शन के प्रति आदर भावना थी। उनके अवदान जीवन विज्ञान से प्रभावित होकर कर्नाटक में सर्वप्रथम मैंने अपने विद्यालयों में लागू करवाया। मुझे जब भी उनके दर्शन करने का सौभाग्य मिला वे मुझे अपना दायां हाथ कहते थे। मैं उनके अणुव्रत, प्रेक्षाध्यान एवं जीवन विज्ञान जैसे आयामों से बहुत प्रभावित हूँ। राष्ट्र ने एक महान् संत को खो दिया जिसकी क्षति अपूरणनीय है।

जगद्गुरु डॉ. बालगंगाधर स्वामी
आदि चुनचुनगिरी मठ, बैंगलोर

राष्ट्रसंत महाप्रज्ञजी अणुव्रत के विश्वव्यापी प्रचार-प्रसार व विस्तार में प्राण-प्रणपूर्वक पूर्णरूपेण समर्पण भाव से मार्गदर्शक के रूप में हमसे विलग हो गए हैं। पर उनके द्वारा प्रज्वलित ज्ञान रश्मियां जन-मन को सदा आलोकित करती रहेंगी। परमपिता परमेश्वर से यही प्रार्थना है कि वे दिवंगत आत्मा को मोक्षरूपी सामीप्य प्रदान करें और समस्त अणुव्रत परिवार को उनके आदर्शों को पूर्ववत संचालित करने की सक्रियता प्रदान करें।

प्रो. सोमदत्त दीक्षित
महामंत्री : विश्वमूल्य शिक्षण संघ, नौएडा

दोपहर को यह समाचार सुना कि अहिंसा के जीते-जागते प्रतीक तथा संघर्षरहित स्नेहसिंचित समाज की स्थापना के लिए अहर्निश प्रयत्नरत आचार्य महाप्रज्ञ ने सरदारशहर में अपनी इहलीला संवरण की, मन विषाद से भर गया। ऐसा लगा कि सर पर से एक अति स्नेहिल वरदहस्त उठ जाने से मैं अनाथ हो गया। अभी कुछ दिनों पूर्व ही मोमासर में उनके सान्निध्य और अमृतवचनों को सुनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। सन् १९९९ में दिल्ली के अध्यात्म साधना केन्द्र में प्रथम बार उनके दर्शनों का सौभाग्य प्राप्त हुआ था और उस समय मैंने उनके सामने अपनी जिज्ञासा प्रस्तुत करते हुए पूछा था कि ''अहिंसा एक अभावात्मक शब्द है।'' मूलभाव तो हिंसा का है। हिंसा जब नहीं होती तब अहिंसा होती है। पर दुर्बल यदि अहिंसा शब्द की आड़ में अपनी अकर्मण्यता का समर्थन करें और मार खाता रहे तो क्या वह उचित होगा? आचार्यश्री ने अत्यन्त ही सीधे-सरल शब्दों में मुझे जिस तरह समझाया उसके कारण मेरी सारी शंकाएं दूर हो गईं। आचार्यश्री ने कहा ''अहिंसा के बारे में समाज में अत्यन्त गलत धारणाएं प्रचलित हैं। हिंसा तीन प्रकार की होती है आरम्भजा हिंसा, प्रतिरोधजा हिंसा और संकल्पजा हिंसा। अपने जीवनयापन के लिए हमें अनेक कर्म करने पड़ते हैं। जिसमें जाने-अनजाने हिंसा हो ही जाती है। जैसे किसान खेती करता है तो मिट्टी में कितने ही सूक्ष्म जीवों का नाश होता है। किन्तु किसान यदि खेती न करे तो अनाज ही पैदा नहीं हो और हमारा जीवन चलना ही असंभव हो जाय। तो ऐसी हिंसा को आरम्भजा हिंसा कहते हैं जिसका दोष नहीं लगता।

दूसरा प्रकार है प्रतिरोधजा हिंसा। समाज में विद्यमान असामाजिक तत्वों के दमन के लिए यदि व्यवस्था न हो तो दुष्टों की बाढ़ से सज्जन संकटापन्न हो जाएंगे। अतः उनके दमन हेतु जो हिंसा राज्यशासन द्वारा की जाती है उसे प्रतिरोधजा हिंसा कहते हैं और उसका दोष नहीं लगता। वैसे ही आत्मसंरक्षणार्थ की जाने वाली हिंसा भी इसी श्रेणी में मानी जाएगी।

तीसरा प्रकार है संकल्पजा हिंसा। जैसे ऋषि-मुनि संकल्प ही ले लेते हैं कि उनके ऊपर कितनी भी हिंसा हो उसका वे प्रतिकार नहीं करेंगे। इसीलिए जब समाज में ऐसी स्थिति आती है कि सज्जन पीड़ित होने लगते हैं तब उस स्थिति को धर्मग्लानि की स्थिति कहते हैं। ऐसी स्थिति में कोई न कोई शक्ति धर्मसंस्थापनार्थ आगे आती है। भगवान् श्रीकृष्ण ने गीता में कहा है

परित्राणाम साधूनाम् विनाशान च दुष्कृताम्।
धर्मसंस्थापनार्थाय संभवामि युगे युगे।।

आचार्य महाप्रज्ञ ने गुजरात के दंगों के समय उत्पन्न स्थिति में जिस प्रकार अकुतोभय होकर अहमदाबाद के दंगाग्रस्त क्षेत्रों का भ्रमण कर सांप्रदायिक सौहार्द और सद्भाव जागरण के लिए कार्य किया वह एक अनुकरणीय उदाहरण हम सबके समक्ष है। उसके बाद जगन्नाथ यात्रा और मोहर्रम व ईद के पर्व जिस शांति, सौहार्द और सहयोग के माहौल में मनाए गये वह आचार्यश्री की महानता व उनके उत्तुंग व्यक्तित्व के शाश्वत स्मारक हैं।

ऐसे संवेदनशील अंतःकरण से काव्यधारा का स्रोत न फूटे तो ही आश्चर्य। आचार्यश्री के काव्यसंग्रह उसके प्रमाण हैं। उस सहृदय, स्नेहसिक्त, संवेदनशील अंतःकरण से निकली ये पंक्तियां हम सबका मार्गदर्शन करती हैं

कौन कहता है अरे, ईश्वर मिलेगा साधना से
मैं स्वयं वह, वह स्वयं मैं, भावमय आराधना से।
वह नहीं मुझसे विलग है, नहीं मैं भी विलग उससे
एक स्वर है, एक लय है, त्वं अहं का भेद किससे?

कुप्. सी. सुदर्शन
राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ : भोपाल

आचार्य महाप्रज्ञ ने आचार्य तुलसी की परम्परा को आगे बढ़ाते हुए सामाजिक समरसता कायम करने के लिए अहिंसा पर ही बल दिया और अहिंसा यात्रा के माध्यम से समाज के सभी वर्गों को जोड़ने का प्रयास किया।

दीपेन्द्रसिंह शेखावत
विधानसभा अध्यक्ष : राजस्थान

अणुव्रत आंदोलन की मशाल जलाए रखकर पूरे देश में सद्भाव की धारा बहाने वाले आचार्य महाप्रज्ञ का देवलोक गमन पूरे देश के लिए अपूरणीय क्षति है। महान चिंतक और दार्शनिक आचार्य महाप्रज्ञ ने आचार्य तुलसी की भावनाओं को जिंदा रखकर दुनिया में शांति का संदेश पहुंचाने का काम किया है जिसे सदैव याद रखा जायगा।

वसुंधरा राजे सिंधिया
पूर्व मुख्यमंत्री : राजस्थान

आचार्य महाप्रज्ञ ने सत्य, अहिंसा और अपरिग्रह पर चलने का आह्वान किया। उनकी शिक्षाओं को ग्रहण कर व्यक्ति, समाज और देश तरक्की कर सकता है।

डॉ. बी.डी. कल्ला
पूर्व प्रदेशाध्यक्ष : राजस्थान कांग्रेस

समाज ने भारतीय अध्यात्म परम्परा के एक युगदृष्टा संत को खो दिया है। आचार्य महाप्रज्ञ ने मानवीय एकता के भगीरथ प्रयास किये है।

किरण माहेश्वरी
राष्ट्रीय सचिव : भाजपा

श्रद्धा-सुमन

मर कर भी अमर

जयनारायण गौड़

आचार्य महाप्रज्ञ का महाप्रयाण ऐसे समय में हुआ है, जब देश को ही नहीं, सारे विश्व को उन जैसे मानवता के मसीहा की सर्वाधिक आवश्यकता थी। आज की उपभोक्ता तथा स्वकेन्द्रित संस्कृति तथा बढ़ते आतंकवाद के इस युग में अहिंसा, शांति, सद्भाव और अपरिग्रह जैसे संदेशों का प्रचार-प्रसार करने वाले इस संत की कमी सदैव अपूरणीय रहेगी।

अपने गुरु तुलसी के सान्निध्य में महाप्रज्ञ ने पूरे देश के कोने-कोने में हजारों किलोमीटर की पदयात्रा के दौरान असंख्यों को अपने प्रवचनों से सही राह दिखाई तथा जीवन के अंतिम दिन तक भी उन्होंने यही किया। श्वेतांबर संप्रदाय के आचार्य होने के बावजूद, वे कभी भी उसी सम्प्रदाय अथवा जैन धर्म से ही बंधे नहीं रहे। उनका लेखन उनकी धार्मिक सार्वभौमिकता का साक्षी है, जिसमें उन्होंने इस बात पर भी जोर दिया है कि केवल रीति-रिवाजों में ही सिमटा धर्म बेकार है तथा धर्म जब तक शांति और सद्भाव के चोले में व्यक्ति के आचरण में भी नहीं उतरे, तब तक वह धर्म है ही नहीं। आचार्य तुलसी के 'अणुव्रत' अभियान को उन्होंने बौद्धिक जामा पहनाया तथा 'प्रेक्षाध्यान' के आविष्कारक इस मुनि ने स्वयं के अंदर देखने की ध्यान-पद्धति से भी जनता को आकर्षित किया। 'अणुव्रत', 'प्रेक्षाध्यान' और धर्म के अपने सार्थक एवं उदार सिद्धांतों ने अनगिनत अजैनियों को भी आराध्य बना दिया।

अपने अनवरत लेखन में भी वे बेजोड़ थे, जिसमें उन्होंने जिंदगी का कोई पक्ष अनछुआ नहीं छोड़ा। संस्कृत, प्राकृत और हिन्दी के विद्वान, इन आशुकवि ने साहित्य, कला, धर्म, संस्कृति, मनोविज्ञान, राजनीति, परिवार तथा अन्य अनेक गूढ़ विषयों पर 300 से अधिक पुस्तकें लिखीं। आध्यात्मिकता के सक्रिय और प्रखर प्रचार में भी वे शंकराचार्य, रामकृष्ण परमहंस, अरविंद, विवेकानंद, शिवानंद और रामसुख दास जैसे दार्शनिक और मनीषी संतों की श्रेणी में ही आते थे। आध्यात्मिकता और विज्ञान के सम्मिश्रण के समर्थक तथा मौलिक चिंतक महाप्रज्ञ ने जीवन और जीवन शैली में गुणात्मक सुधार हेतु इतने अमूल्य सुझाव दिये हैं कि आने वाली पीढ़ियों के लिए वे आकाशदीप बनेंगे। यदि मर कर भी अमर होना है तो बैंजामिन फ्रैंकलिन के अनुसार 'या तो पठन योग्य लेखन किया जाय अथवा अन्यों द्वारा लेखन योग्य कर्म किए जांए।' महाप्रज्ञ तो कर्म और लेखन दोनों कसौटियों पर ही खरे उतर कर वास्तव में अमर हो गए हैं।

उन तेजस्वी तपस्वी के सम्मुख इस अकिंचन को भी उनका भक्त होने का सौभाग्य मिला था। 2 अप्रैल 1994 को उनके प्रथम दर्शन और मुलाकात में ही मैं उन्हीं का होकर रह गया। उसके बाद जयपुर, लाडनूं एवं अन्य स्थानों पर अनेक बार उन्हें सुनने और मिलने का शुभ अवसर मिलता रहा। एक बार तो उन्होंने मुझे याद करके बुलाया भी था। हर मिलन के बाद उन्होंने मुझे आशीर्वाद स्वरूप अपनी कुछ स्वलिखित पुस्तकें भी दी थीं, जो अब मेरी अमूल्य स्मृतियां भी हैं। मैंने भी उन पर एक अनुदित पुस्तक ''आचार्य महाप्रज्ञ : ए लिविंग लीजेन्ड' (1995 में प्रकाशित) लिखी तथा अभी हाल ही में प्रकाशित अपनी आत्मकथा को जब मैंने उन तक पहुंचाया तो उनके स्नेहसिक्त शब्दों के संदेश ने मुझे भाव-विभोर कर दिया। उन्हीं की प्रेरणा से मुझे कुछ अन्यों के साथ, दिल्ली के एक समारोह में 'अणुव्रती' होने के नाते सम्मानित भी किया गया था। ऐसे उदार महामानव को मेरी श्रद्धांजलि।

'हेमांचल', 54, मुक्तानंद नगर,
गोपालपुरा बाईपास, जयपुर – 302018

प्रज्ञा शक्ति के उपासक

भारत की अंतःचेतना और ब्रह्मशक्ति के प्रतीक, मेधा और प्रज्ञा शक्ति के उपासक, अहिंसा के परम पुजारी मानवता के लिए जीवन होम करने की भीष्म प्रतिज्ञा का निर्वाह कर जीवन को वास्तविक अर्थों में जीने वाले आचार्य महाप्रज्ञ जी का अचानक ब्रह्मलीन होना राष्ट्र और मानवता की अपूर्णीय क्षति है, उनका जीवन आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रकाश स्तम्भ का काम करेगा और एक जलते हुए दीपक की भांति सदा मानवता का मार्ग-दर्शन करता रहेगा, हम सब उनके ऋणी हैं और इस ऋण से उऋण होने के लिए उनके महान कार्यों को पूर्ण करने का संकल्प व्यक्त करते हैं।

हार्दिक श्रद्धांजलि के साथ।

– स्वामी चक्रपाणि
राष्ट्रीय अध्यक्ष : अखिल भारत हिन्दू महासभा
हिन्दू महासभा भवन, मंदिर मार्ग, नई दिल्ली – 110001

महाप्रज्ञ स्मृति

मानवता को प्रकाशित करने वाला महासूर्य

विजयराज सुराणा

महाप्रज्ञ नामक महासूर्य 9 मई 2010 को स्वयं तो अस्त हो गया, परन्तु मानवता एवं मानवीय गुणों की जो सुवास वह छोड़कर गये हैं, वह लाखों-करोड़ों दिलों को प्रकाशित करती रहेगी।

छोटे से गांव टमकोर में जन्म लेने वाला बुद्धु-सा दिखने वाले बालक नत्थू ने जब अपने गुरु को पहली बार देखा तो आकर्षित हो गया एवं स्वयं ही दीक्षित हो साधु बनना तय कर लिया। अपनी मां बालूजी के साथ सरदारशहर में अष्टमाचार्य कालूगणी के हाथों दीक्षित होकर बना मुनि नथमल, और सौंप दिया गया उस समय के मुनि तुलसी को अध्ययन करवाने हेतु। ठस बुद्धि मुनि नथमल को मुनि तुलसी ने बड़ी ही मुश्किल से अध्ययनरत छात्र बनाया। कभी उसे डांटा-फटकारा तो कभी भरपूर स्नेह उड़ेला, उसके भावी जीवन को सजाने-संवारने हेतु। शायद मुनि तुलसी व मुनि नथमल में ऐसे ही जन्मजात संस्कार रहे होंगे कि दोनों ही एक-दूसरे के प्रति आकर्षित रहे व समर्पित रहे। 4-5 वर्षों के अध्ययन से ही उनकी चेतना जाग गई एवं जागरूक व परिश्रमी विद्यार्थी बन गए। उनके कदम बढ़ते गये कुछ विशिष्टता हासिल करने को। युवा बनते-बनते वह एक तेरापंथ धर्मसंघ के विद्वान संत बन गये, जिनकी लेखनी बहुत गंभीर थी। वे जब बोलते थे तो श्रोता उठकर चले जाते थे कि इनकी वाणी समझना, हर किसी के वश की बात नहीं है।

तेरापंथ धर्मसंघ में उन्होंने पहला लेख लिखा एवं पहली हिन्दी पुस्तक लिखी ''जीव अजीव''। धीरे-धीरे विद्वता बढ़ती गयी, उनकी शैली क्लिष्टता से सरल व बोध देने वाली बन गई। श्रोता उनकी सरल शैली व ज्ञान से ओत-प्रोत भाषण को सुनने को आतुर रहने लगे। अपने शिक्षा गुरु आचार्य तुलसी के अंतरंग सहयोगी बन गये। इनकी विद्वता एवं प्रज्ञा से प्रभावित होकर आचार्य तुलसी ने उन्हें गंगाशहर में ''महाप्रज्ञ'' अलंकरण का संबोधन दिया। इससे अगले वर्ष इन्हें युवाचार्य घोषित कर दिया एवं नाम प्रवर्तित कर दिया मुनि नथमल से अब वे ''युवाचार्य महाप्रज्ञ'' बन गये, चूंकि मुनि नथमल के नाम से धर्मसंघ में एक अन्य संत और विद्यमान थे।

आचार्य श्री महाप्रज्ञ धर्म के अलावा अन्य विषयों जैसे दर्शन, इतिहास, समाज, शास्त्र व राजनीति के अध्ययन में विशेष रुचि रखते थे। उनको ऐसी किसी पुस्तक की जब आवश्यकता रहती तो मैंने उसकी पूर्ति करने का प्रयास किया। उनकी इस कृपा से मेरा अपना जीवन भी काफी प्रभावित हुआ। इस वजह से मैं स्वयं में भी कुछ अच्छाइयों का विकास कर सका एवं अणुव्रत का कार्यकर्ता बन गया। युवाचार्य महाप्रज्ञ की अनेक विषयों के अलावा ज्योतिष को पढ़ने, जानने की बहुत उत्सुकता रहती थी। सन् 1987 में वे आचार्य तुलसी के साथ चातुर्मास हेतु अणुव्रत भवन, दिल्ली में प्रवास कर रहे थे। मुझे एक दिन एक ज्योतिषि का नाम व पता देकर उसे बुलाकर लाने का निर्देश दिया। वे ज्योतिषी करीब 80 वर्ष के थे। परन्तु शरीर व चाल-ढाल से स्वस्थ थे। हर बात में उनसे ज्ञान व विद्वता के बोल ही निकलते थे। मैं उन्हें हाथ पकड़कर अणुव्रत भवन के प्रथम तल स्थित युवाचार्य महाप्रज्ञ के कक्ष में ले गया। मुझे भी वहीं बैठने का संकेत दे दिया। महाप्रज्ञजी से उनकी कुण्डली लेकर हर कोष्ठ में स्थित ग्रहों की जानकारी ली। कुछ मौखिक प्रश्न भी पूछे उसके बाद तो जैसे मुंह से सरस्वती स्वयं ही बोलने लगी और उन्होंने अनेकों बातें बताई। मुनि मधुकरजी के पास रखी हुई आचार्य तुलसी की कुण्डली भी मंगवाई एवं उसी तरह ग्रहों की स्थिति जानी। अनेकों बातें उसने उदघाटित की तो कुछ मौखिक प्रश्न भी पूछे गये, उनको भी उत्तरित किया। जिनमें से कुछ इस प्रकार हैं

- आचार्य तुलसी अपने उत्तराधिकारी यानि महाप्रज्ञजी के लिए कुछ ऐसा नया करेंगे जो पूर्व आचार्यों ने नहीं किया था।
- तेरापंथ धर्मसंघ के होने वाले पुरुष आचार्यों की संख्या बताई उसके बाद कुछ महिला आचार्य बनने का भी योग बताया।
- तेरापंथ के अंतिम साधु होने तक के वर्ष बताये - बाद में कुछ साध्वियां बनी रहेंगी।
- महाप्रज्ञजी के लिए 90 वर्ष का आयुष्य बताया व यह भी बताया आप योगी रूप में प्रतिष्ठित होंगे।
- महाप्रज्ञजी के उत्तराधिकारी हेतु बताया कि आपकी ही नाम राशि होगा।

उपरोक्त बातें मैं ज्यादा खुलासा नहीं करते हुए संकेत रूप में ही लिख रहा हूँ, परन्तु इसके अलावा उसने अनेक अन्य बातें भी उदघाटित की। पिछली बार आचार्य महाप्रज्ञजी ने उसके बारे में पुनः पूछा, मैं उसके घर भी गया परन्तु उनका देहावसान हो गया था। वहाँ से लौटकर मैंने आचार्यश्री को बताया तो आचार्यश्री ने कहा कि उसकी अनेकों बातें प्रायः मिल रही हैं।

आचार्य तुलसी ने लम्बे काल तक तेरापंथ धर्मसंघ को अपना केवल नेतृत्व ही नहीं दिया, परन्तु अणुव्रत के माध्यम से, अन्य जैन सम्प्रदायों में शिरमोर स्थिति में ला दिया। उनके देहावसान के बाद अधिकांश

लोग आशंकित हो गये कि उनके बाद महाप्रज्ञजी उतने प्रभावी साबित नहीं होंगे, बल्कि संघ के श्रावक भी उनकी क्षमता के प्रति आशंकित हो गये। उनके देहावसान के कुछ समय बाद श्री देवेन्द्रजी, श्री सीताशरणजी वगैरह उनसे मिले एवं अणुव्रत कार्यक्रमों के प्रति अपनी शंकायें जाहिर की, तब उन्होंने बहुत ही गंभीरता से उन्हें आश्वस्त करते हुए कहा कि जो पिछले 50 वर्षों में हुआ है, वह अब अगले 5 वर्षों में होगा। मैं भी उस वक्त उनके साथ ही था। कहना नहीं होगा कि उन्होंने अणुव्रत की भावना एवं विचारों का अपने सम्पर्क, प्रवचन व साहित्य से बहुत अधिक आगे बढ़ाया। उनकी दार्शनिकता, विद्वता ने हर प्रवृत्ति को अहिंसा समवाय के माध्यम से अणुव्रत की लौ को अधिक प्रज्वलित किया।

प्रसंगवश एक घटना का उल्लेख और करना चाहता हूँ मैं दिसंबर 2007 में सूरत गया हुआ था। हजार से भी अधिक वर्षों पहले कहा जाता है कि आदि शंकराचार्य ने ताड़ पत्तों पर अनेक जन्म-पत्रियां लिखी जो करीब 8 से 10 इंच लम्बी व 2 इंच चौड़ी होती हैं। यह हजारों की संख्या में प्राचीन तमिल भाषा में लिखी जन्म-पत्रियां अभी भी दक्षिण भारत विशेषत कांचीपुरम में सुरक्षित हैं। वहाँ जाने पर पुरुष के दाहिने हाथ व स्त्री के बांयें हाथ के अंगूठे का निशान लेकर, वे कुण्डली लिखते हैं एवं उसे खोलकर पढ़ते हैं। उनमें माता-पिता व स्वयं का नाम लिखा होता है, यदि वह मिल गया तो ठीक, वरना दूसरी खोलते हैं। प्रायः देखा यह जाता है कि 2-3 कुंडलियां खोलने पर आपका व माता-पिता का सही नाम निकल जाता है। इसका अर्थ यह हुआ कि वह कुंडली आप से संबंधित है। इसके बाद आपके जीवन की पिछली व आगे की घटनाओं व भविष्यवाणी की परतें खुलती जाती हैं।

ऐसे ही उस आलेख में मेरे जीवन की भविष्यवाणी के अलावा उसमें उस ज्योतिष ने यह भी पढ़ा कि आपके गुरु का साया अब ढाई वर्ष और रहेगा। मैं जरा अचंभित भी हुआ कि ऐसा उल्लेख उसमें क्यों हैं। प्रश्न करने पर बताया कि जैसे मां-बाप व भाई-बहन का उल्लेख होता है तो किसी-किसी की कुंडली में सामीप्य होने वालों का भी उल्लेख आ जाता है।

उपरोक्त दोनों घटनाओं का समय अब मेल खा रहा था जब सरदारशहर चातुर्मास घोषित हुआ तो मन में आया कि क्या गुरुदेव सरदारशहर चातुर्मास पूर्ण कर पायेंगे। यह बात मैंने एक बार प्रसंगवश अपने मित्र विजयकुमार सुराणा (उदयपुर प्रवासी) को बताई, तो वह झिड़कते हुए बोला कि ऐसी अशुभ बात नहीं बोलनी चाहिए, और न ही अन्य किसी को कहना। यह बात युवाचार्य श्री महाश्रमणजी को भी बताना चाहता था। कई बार तो चाहकर भी कहने की हिम्मत नहीं हुई, एवं एक-दो बार साहस जुटाकर गया तो एकान्त का अवसर नहीं मिला विधि को जो मान्य होता है, वह घटकर ही रहता है।

महामंत्री : अणुव्रत महासमिति

महाप्रज्ञ ने

जीवन का विज्ञान सिखाया महाप्रज्ञ ने,
मुश्किल को आसान बनाया महाप्रज्ञ ने।

अनुशासन को जब ये दुनिया भूल चुकी थी,
आत्मानुशासन पाठ पढ़ाया महाप्रज्ञ ने।

देख डूबते व्यसनों के सागर में जग को,
नशामुक्ति अभियान चलाया महाप्रज्ञ ने।

गुरुदेव श्री तुलसी की अणुव्रत धारा को,
जन-जन में जाकर फैलया महाप्रज्ञ ने।

आत्मशुद्धि व आत्मसिद्धि के निमित्त सभी को,
पर्युषण को महापर्व बताया महाप्रज्ञ ने।

कन्याओं की घटती दर से विचलित होकर,
भ्रूण-हत्या को पाप बताया महाप्रज्ञ ने।

पर्यावरण का बढ़ता दूषित रूप देखकर,
शुद्धि-दिवस का पर्व मनाया महाप्रज्ञ ने।

आत्म निरीक्षण और विश्लेषण खुद करने को,
हमको प्रेक्षाध्यान सिखाया महाप्रज्ञ ने।

भौतिक सुख की मृगतृष्णा में देख जगत को,
अपरिग्रह का मंत्र बताया महाप्रज्ञ ने।

प्रेम भाव का मूलमंत्र दे सब धर्मों को,
साम्प्रदायिक सद्भाव बढ़ाया महाप्रज्ञ ने।

सत्य, अहिंसा, क्षमादान का मार्ग दिखाकर,
जैन धर्म का मान बढ़ाया महाप्रज्ञ ने।

● **महेन्द्र जैन**
871, सेक्टर–13 पी, हिसार (हरियाणा)

'बड़े शौक से सुन रहा था जमाना'

मुनि दीपकुमार

''बड़े शौक से सुन रहा था जमाना।
तुम्हीं सो गए दास्तां कहते-कहते।।''

सचमुच आचार्य श्री महाप्रज्ञजी को बड़ी खुशी से विश्व सुन रहा था। आश्चर्य है अंतिम दिन भी उन्होंने प्रवचन दिया। संस्कार चेनल के माध्यम से लाखों की संख्या में जनता उन्हें सुन रही थी। जिन्होंने उनका अमृतमय प्रवचन सुना एक बार भी सुना वह हमेशा के लिए सुनने को लालायित रहता। आपको पूरा विश्व सुनना चाहता था।

जैसे ही ज्ञात हुआ पूज्य आचार्यश्री महाप्रज्ञजी नहीं रहे। चारों ओर सन्नाटा-सा छा गया। आँखों के सामने अंधेरा छा गया। वाणी अवरुद्ध सी हो गई। सब स्तब्ध रह गये। मानों कोई ऐसा भयंकर तूफान उठा जिससे सारा जहाँ शोक-सागर में डूब गया। जहाँ कुछ समय पहले आचार्यश्री महाप्रज्ञजी के जन्म के दशवें दशक में प्रवेश की तैयारियां चल रही थी। वहाँ अकस्मात् खामोशी छा गयी। कोई कल्पना भी नहीं कर सकता था। ऐसे गुरुदेव श्री तुलसी दिवंगत हुए लगभग वैसे ही आचार्य श्री महाप्रज्ञजी महाप्रयाण कर गये। अंतिम समय तक श्रम का जीवन जीया। हर दिन कोई न कोई नई कल्पना उभरती रहती थी। संघ विकास का चिंतन अहर्निश गतिमान रहा। इन दिनों उन्होंने अणुव्रत आंदोलन को गतिशील बनाने की प्रेरक प्रेरणा दी। वि.सं. 2013-14 में आचार्य श्री तुलसी की जन्मशताब्दी को लेकर विशेष योजनाएं बन रही थीं। इसके अंतर्गत उनकी सबसे बड़ी कल्पना रही ''आचार्य तुलसी विजड्म वर्ल्ड'' कैसे अधिक से अधिक प्रज्ञा का जागरण हो। अब आचार्यश्री महाप्रज्ञजी नहीं रहे। इसलिए अब हमारा पुनीत कर्त्तव्य है कि हम उनके यशस्वी उत्तराधिकारी आचार्यश्री महाश्रमणजी के नेतृत्व में महाप्रज्ञ के स्वप्नों को साकार बनाने में सफल हो सकेंगे। ऐसा दृढ़ विश्वास है।

गुरुवर महाप्रज्ञ के सपने, सफल बनाते जाएंगे।
महाश्रमण के पद्चिन्हों पर, आगे बढ़ते जायेंगे।।

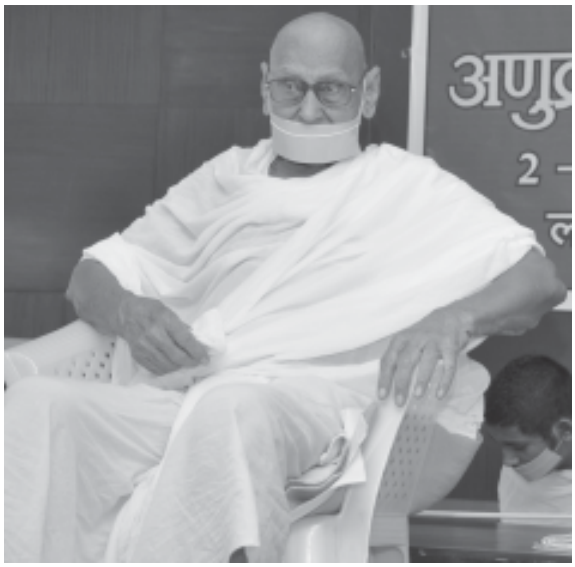

महाप्रज्ञ गुरुदेव

मुनि राकेशकुमार

प्रज्ञा का दीप जलाया रे महाप्रज्ञ गुरुदेव!
जग को आलोक दिखाया रे, महाप्रज्ञ गुरुदेव,
अज्ञान अंधेरा हटाया रे, महाप्रज्ञ गुरुदेव! ध्रुव पद।

तुम शांति दूत बन आए, जन-मन का कलुष मिटाए,
मैत्री का मंत्र सुनाया रे, महाप्रज्ञ गुरुदेव!

जन-जन के थे उपकारी, तुम स्थिर योगी सुखकारी,
मुख-मुख पर सुयश सुहाया रे, महाप्रज्ञ गुरुदेव!

तुम अतिशय धारी भारी, नत मस्तक जनता सारी,
प्रेक्षा का पाठा पढ़ाया रे, महाप्रज्ञ गुरुदेव!

आगम के भाष्य बनाए, गंभीर रहस्य बताए,
नूतन इतिहास बनाया रे, महाप्रज्ञ गुरुदेव!

करुणा रस सदा बहाया, लाखों को पथ दिखलाया,
सपने सा दृश्य दिखाया रे, महाप्रज्ञ गुरुदेव!

श्रद्धा के सुमन सझाए राकेश मुनि गुण गाए,
अब महाश्रमण का साया रे, महाप्रज्ञ गुरुदेव!

(लयः महाप्राण गुरुदेव)

हिंसा पर नियंत्रण के सफल उपक्रम

मुनि जयंतकुमार

महान दार्शनिक संत, अणुव्रत अनुशास्ता एवं अहिंसा यात्रा के प्रणेता आचार्य श्री महाप्रज्ञ ने 5 दिसंबर 2001 को चुरु जिले के सुजानगढ़ कस्बे से अहिंसा यात्रा का प्रारंभ किया था। जिसके सफलतम पाँच वर्षों की सम्पन्नता चुरु जिले के ही रतननगर में हुई। इस यात्रा ने पाँच वर्षों की अवधि में अनेक उपलब्धियां निर्मित की जिनमें विशेषतः सांप्रदायिकता, आतंकवाद और हिंसा पर नियंत्रण के साथ-साथ अहिंसा प्रशिक्षण और बेरोजगारी उन्मूलन की दृष्टि से सफल उपक्रम संचालित हुए।

अहिंसा यात्रा ने पाँच वर्षों की अवधि में राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र, दमन, मध्यप्रदेश, हरियाणा, दिल्ली, पंजाब आदि प्रांतों के करीब पचास जिलों के तेईस सौ गांवों का भ्रमण किया था। जिनमें मानवीय एकता सम्मेलन, किसान सम्मेलन, विद्यार्थी सम्मेलन, सर्वधर्म सद्भाव सम्मेलन, शांति और अहिंसा सम्मेलन, जनप्रतिनिधि सम्मेलन, अहिंसा सम्मेलन, श्रमिक सम्मेलन, बुद्धिजीवी सम्मेलन हुए। विशेषतः ग्रामीणजनों के बीच नुक्कड़ सभाएं एवं संगोष्ठियां आयोजित हुई। जिसके माध्यम से आम जनजीवन में अहिंसा की स्थापना के सफल प्रयास किये गए।

आचार्य श्री महाप्रज्ञ की इस अहिंसा यात्रा में जहाँ राष्ट्रपति श्री ए॰पी॰जे॰ अब्दुल कलाम, उपराष्ट्रपति श्री भैरोसिंह शेखावत, कांग्रेस की अध्यक्ष श्रीमती सोनिया गांधी, पूर्व उपप्रधानमंत्री एवं विपक्ष नेता लालकृष्ण आडवाणी, गृहमंत्री शिवराज पाटिल, राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के सरसंचालक श्री के॰सी॰ सुदर्शन सहित विभिन्न राज्यों के मुख्यमंत्रियों, केन्द्रीय मंत्रियों, सांसदों, राज्यपालों ने समय-समय पर कार्यक्रमों में भाग लेकर राष्ट्र और देशवासियों के कल्याण के लिए आचार्य महाप्रज्ञ के प्रयत्नों को उपयोगी बताया वहीं समस्याओं के समाधान के लिए अहिंसक प्रयत्नों की उपयोगिता व्यक्त करते हुए अहिंसा की शक्ति को संगठित करने की आवश्यकता व्यक्त की। आचार्यश्री महाप्रज्ञ के व्यक्तित्व से अहिंसा का जो आलोक फैला उससे गुजरात के जटिल से जटिलतर हो रहे सांप्रदायिक माहौल पर नियंत्रण स्थापित हुआ। मुंबई में मुस्लिम बहुल इलाकों में साम्प्रदायिक सौहार्द के अपूर्व दृश्य देखने को मिले। जगह-जगह आचार्यश्री महाप्रज्ञ को कुरान समर्पित की गई। अहिंसा यात्रा का यह आलोक जाति, वर्ग, वर्ण धर्म आदि की सरहदों में सीमित न रहा। एक व्यापक धर्म क्रांति के रूप में अहिंसा का विस्तार नई संभावनाओं के द्वार खोलने का निमित्त बना। जहाँ राष्ट्रीय को मुख्य धारा से सीधा जुड़कर अहिंसा यात्रा का उपक्रम एक राष्ट्रीय आंदोलन के रूप में सक्रिय है वहीं दुनिया के अनेक राष्ट्र इस तरह के प्रयत्नों से विश्व में शांति और अमन कायम होने की संभावनाओं को आशाभरी नजरों से देख रहे थे। पाकिस्तान के राष्ट्रपति जनरल परवेज मुशर्रफ ने अपनी भारत यात्रा के दौरान अहिंसा यात्रा के बारे में कहा कि ''इन्सा अल्लाह! पाकिस्तान सहित दूसरे मुल्कों में भी ऐसा हो जाए तो दुनिया की शक्ल बदल जायेगी।'' उन्होंने अहिंसा यात्रा के उद्देश्यों की सराहना करते हुए कहा कि आचार्यश्री महाप्रज्ञ अहिंसा यात्रा को लेकर पाकिस्तान आएं इनसे शांति और सद्भावना का वातावरण निर्मित होगा।

नैतिक मूल्यों का विकास एवं अहिंसक चेतना का विकास इन दो उद्देश्यों को लेकर 2009 तक चलने वाली इस अहिंसा यात्रा के प्रवर्तक आचार्यश्री महाप्रज्ञ अपने विशेष वक्तव्यों में राष्ट्रीय एकता और साम्प्रदायिक सौहार्द के लिए दलगत स्वार्थों से ऊपर उठना जरूरी बताया। इसके लिए राजनीतिक दलों, धर्मगुरुओं तथा गैर सरकारी संगठनों को संगठित होकर साम्प्रदायिक कट्टरता एवं हिंसा को समाप्त करने तथा राष्ट्रीय एकता को मजबूत करने के लिए आगे आने का आह्वान किया। उन्होंने साम्प्रदायिक हिंसा एवं आतंकवाद को देश के लिए सबसे बड़ा खतरा बताया और अमीरी एवं गरीबी के बीच बढ़ती खाई को शांति स्थापना में प्रमुख बाधा। इससे निजात पाने के लिए सबको एकजुट होकर प्रयास करने की बात कही। आचार्य महाप्रज्ञ ने अपनी इस यात्रा का एक बड़ा ध्येय हिंसा के कारणों का विश्लेषण करने का सुझाव दिया।

अहिंसा यात्रा के प्रणेता आचार्य श्री महाप्रज्ञ जैन परम्परा के अद्वितीय शलाका पुरुष थे। उन्होंने अपने योग, दर्शन अध्यात्म, मनोविज्ञान, तत्वज्ञान आदि विषयों से जुड़ी लगभग तीन सौ पुस्तकों का लेखन किया है। आपने लगभग एक लाख किलोमीटर की पद्यात्रा कर जन-जन को नैतिक और चरित्रनिष्ठ बनने की प्रेरणा दी। आपको विशिष्ट राष्ट्रीय एकता और अखंडता के लिए की गई सेवाओं का अंकन करते हुए पूर्व में इंदिरा गांधी राष्ट्रीय एकता पुरस्कार आपको प्रदत्त किया गया एवं भारत सरकार का सर्वोच्च 'सांप्रदायिक एकता पुरस्कार' से भी उनको सम्मानित किया गया। अहिंसा यात्रा के प्रभावी अभियान के निमित्त आचार्यश्री को गुजरात, महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश राजस्थान, दिल्ली, हरियाणा, पंजाब सरकार ने राजकीय अतिथि का सम्मान दिया।

केन्द्रीय मीडिया प्रभारी : अहिंसा यात्रा

www.terapanthinfo.com

महावीर, महात्मा गांधी एवं महाप्रज्ञ

निर्मल एम. रांका

हमारे देश में अहिंसा के प्रयोगकर्ताओं में भगवान महावीर, महात्मा गांधी और आचार्य महाप्रज्ञजी का नाम अग्रणीय है। महावीर अहिंसा के जन्मदाता थे। गांधी ने अहिंसा का प्रयोग किया। महाप्रज्ञ ने अहिंसा को जन-जन में मुखरित करने के लिए अहिंसा यात्रा की और अहिंसा परमोधर्मः के संदेश को सार्थकता दी।

अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाप्रज्ञ तेरापंथ धर्मसंघ के दसवें आचार्य थे। उन्होंने जन-जन को महावीर एवं आचार्य भिक्षु के सिद्धांतों से अवगत कराया। वे अणुव्रत प्रवर्तक आचार्य तुलसी के उत्तराधिकारी थे। उन्होंने जन-जन को अणुव्रत का संदेश दिया। वे अहिंसा यात्रा के प्रवर्तक थे। पूरे विश्व में अहिंसा की आवाज उठाई।

वे आचार्य तुलसी की पाठशाला में पढ़े। आचार्य भिक्षु उनके आदर्श थे। उन्होंने जीवनभर अहिंसा का अध्ययन किया। वे अपने किसी भी प्रवचन में अहिंसा, अणुव्रत व अपने गुरु आचार्य तुलसी का उल्लेख किये बिना प्रवचन समाप्त नहीं करते थे। अणुव्रत आंदोलन एवं अहिंसा प्रशिक्षण मुख्य रचनात्मक कार्य थे। पूरे देश की पैदल यात्रा कर एक नया कीर्तिमान स्थापित किया था।

वे अहिंसा की प्रतिमूर्ति थे। वे करुणा के सागर थे। वे ज्ञान के अथाह भंडार थे। वे चलते-फिरते महाविद्यालय थे। हमारे देश की संत परम्परा में ऐसा महान संत सदियों में पैदा होता है। सन 2010 की 9 मई को उनका पार्थिव शरीर अनंत में विलीन हो गया। लेकिन महात्मा महाप्रज्ञ अपने महान कर्तृत्व एवं व्यक्तित्व से अमर हो गये।

महाप्रज्ञ की वाणी, महाप्रज्ञ का साहित्य, महाप्रज्ञ का विचार, महाप्रज्ञ का जीवन दर्शन सदियों तक यादगार बना रहेगा। संस्कारों, आदर्शों व सिद्धांतों को आत्मसात कर अपने जीवन को निर्मल बनाएं तथा दूसरों के जीवन के कल्याण में सहभागी बनें, यही उनके प्रति हमारी सच्च श्रद्धांजलि होगी।

मैं बहुत सौभाग्यशाली हूं कि 9 मई की मंगलप्रभात में मैंने एक सुःसज्जित कलात्मक पुस्तक ''दर्शन यात्रा' आचार्यप्रवर को भेंट की तथा उसी दिन के करीबन 1 घंटे की अणुव्रत गोष्ठी में आचार्यश्री का सान्निध्य मिला। गुरु दृष्टि से मेरा रोम-रोम पवित्र हो गया।

मैं उस युगदृष्टा, अहिंसा के अग्रदूत, करुणा के सागर ऋषि पुरुष, अणुव्रत अनुशास्ता, राष्ट्र संत और तेरापंथ धर्मसंघ के दसवें आचार्य के श्री चरणों में शत-शत नमन करता हूं।

अध्यक्ष : अणुव्रत महासमिति

अश्रुपूरित श्रद्धांजलि

परम पूज्य महाप्रज्ञजी के 'देहावसान' का समाचार पढ़कर हार्दिक दुःख हुआ। 'महाप्रज्ञजी' जैसे चिंतक-विचारक 'मृत' हो ही नहीं सकते। उन्होंने महात्मा गांधी की तरह विचारों और आचरण से देवत्व की भूमिका निभाई। वे किसी धर्म-जाति-सम्प्रदाय से ऊपर उठ चुके थे। वे देश के ही नहीं पूरे विश्व के मार्गदर्शक थे। महापुरुष किसी देश के होते ही नहीं, वे तो मानव मात्र के मानवता के पुजारी होते हैं। इसलिए उनके 'देहावसान' से आघात लगा किन्तु मुझे विश्वास है कि अब उनकी स्मृतियां और विचार ज्यादा प्रभावकारी ढंग से हमारे बीच जीवित रहेंगे। अणुव्रत एवं तेरापंथ जगत को हुए भारी आघात की इस घड़ी में हम आपके साथ हैं। मैं अश्रुपूरित श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ।

• सत्यनारायण भटनागर
रतलाम (म.प्र.)

मौन हुआ मानवता का मसीहा

देश में जब-जब धर्म व अध्यात्म की चर्चा होती है,
शिक्षा व संस्कार पर चिंतन होता है, नैतिकता व प्रामाणिकता
पर विचार होता है, अहिंसा व चरित्र पर मंथन होता है तथा
सामाजिक समरसता का जिक्र होता है, तब-तब प्रथम
पंक्ति में जो नाम उभर कर सामने आता है
वह है आचार्य महाप्रज्ञ।
दीक्षा लेने के बाद 80 वर्षों तक समाज को दिशा प्रदान
करने वाले महाप्रज्ञ हजार वर्ष में एक बार ही अवतरित होते
हैं। आचार्य महाप्रज्ञ में विद्वता व विनम्रता का अनूठा
मणिकांचन संयोग सुसमाहित था।
निस्पृह कर्मयोगी, मंगलकारी मार्गदर्शक व युगधर्म के
प्रखर प्रवक्ता श्री महाप्रज्ञ का गरिमामय जीवन अनेकांतवाद
से अनुस्यूत व विशालता का प्रतीक था। सापेक्षता आपके
जीवन की विरल विशेषता थी। सभी धर्मों के सारभूत तत्त्वों
का मंथन कर आपने सभी दर्शनों में निहित एकता को
व्याख्यायित किया। शास्त्रीय व व्यावहारिक विलक्षण से
प्रभावित होकर विभिन्न धर्मावलम्बी आचार्य आपके सान्निध्य
में एक मंच पर बैठकर सर्वभूतहित व नैतिक उत्थान का
चिंतन किया करते थे। समन्वयवादी दृष्टिकोण, व्यापक
चिंतन, बहुश्रुतता व विनयशीलता के बल पर श्री महाप्रज्ञ
राष्ट्र संत के रूप में सदैव प्रतिष्ठापित रहेंगे। मानवता का
मसीहा मौन अवश्य हुआ है पर उसकी वाणी अमर रहेगी।

• वैद्य बालकृष्ण गोस्वामी
अध्यक्ष : अणुव्रत समिति रतनगढ़

www.terapanthinfo.com

विश्व को प्रकाशित करने वाला महासूर्य अस्त

सरदारशहर में अणुव्रत अनुशास्ता का महाप्रयाण

सरदारशहर 9 मई। विश्व समस्याओं का समाधान कर सम्पूर्ण विश्व को प्रकाशित करने वाला महासूर्य स्वयं अस्त हो गया। मानवता के मसीहा आचार्य महाप्रज्ञ का आज दोपहर 2.55 बजे सरदारशहर में अचानक हृदय गति रुकने के कारण महाप्रयाण हो गया। आचार्य महाप्रज्ञ ने 25 अप्रैल 2010 को सरदारशहर में चातुर्मास हेतु मंगल प्रवेश किया था। उन्होंने प्रातः 9.55 से 10.15 बजे तक धर्मसभा को संबोधित भी किया पर दोपहर 2 बजे अचानक दिल का दौरा पड़ा और सभी चिकित्सा सुविधाओं के बावजूद 2.55 पर अपनी देह का त्याग कर दिया।

आचार्य महाप्रज्ञ के महाप्रयाण की सूचना मिलते ही हजारों श्रद्धालु श्रीसमवसरण में जुट गए। देश के कौने-कौने में सूचना पहुँच गई। आस-पास के कस्बों से श्रद्धालुओं का तांता लग गया।

आचार्य महाप्रज्ञ के महाप्रयाण के बाद उनके उत्तराधिकारी आचार्य महाश्रमण ने साप्ताहिक अनुष्ठान करने की घोषणा की इस अनुष्ठान में नमस्कार महामंत्र ''मंगलम् भगवान वीरो महाप्रज्ञोस्तु मंगलं'' पद्य का जप किया जाएगा।

आचार्यश्री महाप्रज्ञ चातुर्मास व्यवस्था समिति एवं सभा के कार्यकर्त्ताओं, साध्वीप्रमुखा सहित शिष्य समुदाय से विचार-विमर्श करने के बाद आचार्य महाश्रमण ने 10 मई दोपहर 3 बजे महाप्रयाण यात्रा प्रारंभ करने को इंगित किया। देश के कौने-कौने में बसने वाले लाखों श्रद्धालुओं को ध्यान में रखते हुए उनकी पार्थिव देह को अंतिम दर्शनों के लिए गधैया के नोहरे में स्थित विशाल श्रीसमवसरण में रखा गया है।

आचार्य महाप्रज्ञ का जन्म राजस्थान के झुंझनू जिले के टमकोर गांव में 16 जून, 1920 को चोरड़िया (ओसवाल) परिवार में हुआ था। 10 वर्ष की आयु में तेरापंथ के अष्टमाचार्य श्री कालूगणी के द्वारा उन्होंने जैन मुनि दीक्षा स्वीकार की थी। जब वे 59 वर्ष के हुए, तेरापंथ के नवम आचार्य तुलसी ने उन्हें युवाचार्य मनोनीति किया।

सन् 1995 में दिल्ली में आचार्य तुलसी ने उन्हें आचार्य पद दिया। सन् 1997 में आचार्य तुलसी के स्वर्गवास के बाद वे धर्मसंघ के सर्वोच्च धर्मनेता बने। 14 वर्ष के अपने यशस्वी आचार्यकाल में उन्होंने भारत के अनेक प्रांतों की प्रभावपूर्ण अहिंसा यात्रा की।

इस अहिंसा यात्रा में 80 लाख लोगों ने सहभागिता दर्ज करा महापुरुष के प्रति न केवल श्रद्धा अभिव्यक्त की बल्कि अहिंसा को प्रतिष्ठित करने के लिए एकजुटता का भी परिचय दिया। अहिंसा यात्रा में देश के ख्यातिलब्ध धर्मगुरुओं ने सम्मलित होकर नैतिकता एवं अहिंसा के प्रति निष्ठा प्रदर्शित की। अहिंसा यात्रा के प्रणेता आचार्य महाप्रज्ञ ने अपने 90 वर्षीय जीवन में लाखों किलोमीटर की पदयात्रा कर मानव जीवन के उत्थान का संदेश प्रसारित किया।

आचार्य महाप्रज्ञ 20वीं-21वीं शताब्दी के महान आध्यात्मिक संत होने के साथ एक ख्यातिप्राप्त साहित्यकार थे। उन्होंने 300 से अधिक विद्वतापूर्ण पुस्तकों का निर्माण किया। जैन आगमों के वे यशस्वी संपादक रहे। आगमों का आधुनिक शैली एवं विज्ञान सिद्ध तथ्यों के साथ अनुवाद और भाष्य प्रस्तुत किया। योग एवं ध्यान परम्परा के वे पुनरुद्धारक हुए। उनके द्वारा प्रणीत प्रेक्षाध्यान पद्धति आज सात समुंद्र पार भी चर्चा का विषय बनी हुई है। आज इस ध्यान पद्धति के द्वारा अनेक बड़ी बीमारियों का इलाज किया जाता है।

जीवन विज्ञान के रूप में आचार्य महाप्रज्ञ ने शिक्षा जगत को अवदान प्रदत्त कर शिक्षा के स्वरूप को परिपूर्णता प्रदान की।

आचार्य महाप्रज्ञ ने देश की नींव को खोखली करने वाली मूलभूत समस्याओं पर राजनीतिज्ञों का न केवल ध्यान आकृष्ट किया बल्कि उनका समाधान प्रदान कर मानव जाति का उद्धार भी किया। उन्होंने वर्तमान अर्थशास्त्र को समस्याओं के समाधान करने में सक्षम न मानते हुए सापेक्ष अर्थशास्त्र के रूप में एक नया प्रारूप प्रस्तुत किया।

ऐसे महापुरुष के महाप्रयाण की सूचना मिलते ही छत्तीसों कौम के श्रद्धालुओं की आँखे नम हो गई एवं मायूसी छा गई। श्रीसमवसरण में उनकी पार्थिव देह के परिपार्श्व में श्रावक समाज के द्वारा आध्यात्मिक अनुष्ठान किया जा रहा है।

आचार्य महाश्रमण का संदेश

।। अर्हम् ।।

परम पूज्य गुरुदेव आचार्यश्री महाप्रज्ञ का महाप्रयाण हो गया।

पूज्य गुरुदेव ने तेरापंथ धर्मसंघ, जैन शासन और मानव जाति की सेवा के लिए स्वयं को समर्पित किया था। इस गुरु वियोग के संदर्भ में आपने जो संवेदना/सद्भावना प्रकट की है, उसके लिए आपको साधुवाद।

भविष्य में भी आपकी मंगल मैत्रीभावना बनी रहे, शुभाशंसा।

सरदारशहर **आचार्य महाश्रमण**

9.5.2010

www.terapanthinfo.com

सरदारशहर में स्मृति सभा

अब मैं किसको अपने हाथ का सहारा दूं : आचार्य महाश्रमण

सरदारशहर 11 मई। एक रिक्तता आ गई है। जब परमपूज्य गुरुदेव आचार्य महाप्रज्ञजी प्रवचन के लिए पधारते तो मैं उनकी अगवानी में जाता और उनको हाथ का सहारा देकर प्रवचन पंडाल में लाता। यहाँ से वापिस पधारते समय भी मेरा ही सहारा लेते। पर अब मैं किसको अपने हाथ का सहारा दूं। ये विचार आचार्य महाश्रमण ने आचार्य महाप्रज्ञ की स्मृति सभा में हजारों श्रद्धालुओं को संबोधित करते हुए व्यक्त किये।

आचार्य महाश्रमण ने आगे कहा जाना एक नियति है। पर स्थूल रूप से कहूँ तो दो प्रश्न मेरे सामने हैं। पूज्यपाद क्या हमारी कोई गलती हो गई थी जिससे रूष्ट होकर आप चले गये या अति संतुष्ट हो गये थे मेरे से। आपने सोचा होगा कि महाश्रमण अच्छी तरह से काम संभाल रहा है। क्या आप इस कारण चले गये।

उन्होंने कहा कि आचार्यश्री महाप्रज्ञ ने इन दिनों कई ऐसे संकेत दिये कि लगता है उनको पहले से ही आभास हो गया था। उन्होंने अनेकों बार फरमाया कि सरदारशहर का चातुर्मास महाश्रमण के लिए है। मैं चाहता हूँ कि एक चातुर्मास अथवा प्रथम चातुर्मास महाश्रमण का सरदारशहर में हो। जब ऐसा कथन उनके मुख से सुनता तो समझ नहीं पाता, क्योंकि सरदारशहर में पहले भी मेरे चातुर्मास हो गये हैं। पर अब वह रहस्य समझ में आया है। इन दिनों गुरुदेव ने मुझे दोपहर के समय अपने पास रहने को फरमाया। वह गर्मी के कारण फरमान किया था पर उसी कारण मैं अंतिम क्षणों में उनके पास रहा।

आचार्य महाश्रमण ने कहा कि जिसने मेरी इतनी सेवा की। मुझे आगे बढ़ाया उसी शरीर को मैंने ''वोसिरे वोसिरे'' किया। उन्होंने कहा कि महापुरुष दुनिया में कभी-कभी आते हैं। आचार्य महाप्रज्ञ का भी जन्म लोगों को परित्राण देने और उनके दुःखों को दूर करने के लिए हुआ था। जैन धर्म, मानव जाति की सेवा करने के लिए उनको धरती पर भेजा गया हो ऐसा प्रतीत होता है।

आचार्य महाश्रमण ने कहा कि परम पूज्य गुरुदेव महाप्रज्ञजी स्वास्थ्य के प्रति बहुत जागरूक थे। उनका स्वास्थ्य देखकर मुझे भी संतोष होता कि गुरुदेव का शारीरिक बल काफी अच्छा है। काफी कार्य करा रहे हैं जिससे मैं निश्चिंत रहता हूँ। गुरुदेव का पिछले चातुर्मास में जैन विश्व भारती का प्रवास काफी सुखद रहा। वहाँ का वातावरण बहुत अनुकुल है। आचार्य महाप्रज्ञजी ने जहाँ संयम ग्रहण किया उसी भूमि पर संयम साधना का समापन किया है।

साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा ने स्मृति सभा में कहा कि हमने आचार्य तुलसी का, आचार्य तुलसी और आचार्य महाप्रज्ञ का, आचार्य महाप्रज्ञ और युवाचार्य महाश्रमण का युग देखा है।

आचार्य महाप्रज्ञजी ने फरमाया था कि महाप्रज्ञ में महाश्रमण को देखो और महाश्रमण में महाप्रज्ञ को देखो। साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा ने कहा कि आचार्य महाप्रज्ञ के प्रज्ञामय एवं करुणामय व्यक्तित्व ने दुनिया की पीड़ा को पहचाना और विश्व की समस्याओं का समाधान दिया। वे बहुत कुछ करना चाहते थे। उनके अधूरे रहे सपनों को पूरा करने का दायित्व आचार्य महाश्रमण पर है। आचार्य महाप्रज्ञ दार्शनिक जगत आदि सभी लोगों के मार्गदृष्टा थे।

उन्होंने आचार्य महाप्रज्ञजी द्वारा गंगाशहर प्रवास की घोषणा की चर्चा करते हुए कहा कि सारे कार्यक्रम पहले ही निश्चित कर दिये ताकि आचार्य महाश्रमण को इस दृष्टि से किसी प्रकार का चिंतन न करना पड़े। वे अपना चिंतन अन्य कार्यों में लगाये। साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा ने कहा कि हम आचार्य महाश्रमणजी के निर्देश के अनुसार अपने आपको धर्मसंघ के विकास में नियोजित करेंगे आप जहाँ ले जायेंगे वहाँ जायेंगे।

आचार्य महाप्रज्ञ तुलसीमय थे

मुख्य नियोजिका साध्वी विश्रुतविभा ने कहा कि मन में एक प्रश्न पैदा हो रहा है। आचार्य महाप्रज्ञ को विनीत साधु-साध्वियों, बाल मुनियों की टोली, कोई रोक क्यों नहीं पाये। मुझे ऐसा लगता है आचार्य महाप्रज्ञ अपने गुरु आचार्य तुलसी प्रिय थे, तुलसीमय थे। उनके रोम-रोम में आचार्य तुलसी बसे थे। आचार्य महाप्रज्ञजी बहुदा फरमाया करते थे कि मैंने जब आचार्य तुलसी के गंगाशहर में प्रथम दर्शन किये तब से ही उनसे जुड़ गया था, अद्वैत हो गया था।

उनकी वाणी में अमृत

आचार्य महाप्रज्ञ की पुस्तकों के प्रारंभ से सम्पादक रहे एवं दीक्षा लेते ही उनकी सेवा में रहे मुनि दुलहराज ने कहा कि मैं उनकी स्मृति क्या करूँ जिसने असीम स्नेह से मुझे पाला पोसा और मेरी गलतियों को नजरन्दाज कर मेरा विकास किया। उनके सम्पर्क से चेतना स्पंदित होती है। उनके दर्शन करने से सदा सुख मिलता हे। उनकी वाणी को सुनने से अमृत का स्वाद आता है।

स्मृति सभा में अणुव्रत प्रभारी मुनि सुखलाल ने गीत के द्वारा भावनाएं रखी। साध्वीवृंद ने साध्वीप्रमुखा द्वारा रचित गीत का संगान किया। मुनि रजनीशकुमार ने अंतिम क्षणों के घटनाक्रम की प्रस्तुति दी। विकास परिषद् के संयोजक लालचन्द सिंघी, महासभा के अध्यक्ष चैनरूप चिण्डालिया, दिल्ली सरकार के पूर्व मुख्य सचिव एस. रघुनाथन, आचार्यश्री महाप्रज्ञ चातुर्मास व्यवस्था समिति के संयोजक सुमतिचन्द गोठी, महामंत्री रतन दुगड़, अ.भा.तेयुप अध्यक्ष गोतम डागा, अ.भा. महिला मंडल की अध्यक्षा कनक बरमेचा, सभा के अध्यक्ष सूरज बरड़िया, आचार्य महाप्रज्ञ की संसारपक्षीय दोहिती सुषमा मणोत, मुम्बई संघ की ओर से भंवरलाल कर्णावट आदि ने श्रद्धाभावना अभिव्यक्त की। कार्यक्रम का संचालन मुनि मोहजीतकुमार ने किया।

सरदारशहर, 11 मई। आचार्य महाप्रज्ञ के महाप्रयाण के बाद जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा द्वारा 21 से 30 मई को आयोजित होने वाला राष्ट्रीय संस्कार निर्माण शिविर और 21 से 28 को तुलसी अध्यात्म नीडम् जैन विश्व भारती द्वारा आयोजित प्रेक्षाध्यान शिविर अब नहीं होगा। आचार्य महाश्रमण ने इस महीने के केवल अक्षय तृतीया के कार्यक्रम को यथावत रखने का इंगित किया है। अन्य सभी कार्यक्रमों को आयोजित न करने हेतु इंगित किया है।

www.terapanthinfo.com

स्मृति सभा का दूसरा दिन

आचार्य महाप्रज्ञ के अधूरे कार्यों को पूरा करें - आचार्य महाश्रमण

सरदारशहर, 12 मई। आचार्य महाश्रमण ने अपने गुरु आचार्य महाप्रज्ञ के अधूरे कार्यों को पूरा करने में शक्ति नियोजित करने को सच्ची श्रद्धांजली बताया। उन्होंने श्रीसमवसरण में आयोजित स्मृति सभा के दूसरे दिन कहा कि आचार्य महाप्रज्ञ को सच्ची श्रद्धांजली तभी होगी जब हम उनके इच्छित एवं अधूरे कार्यों को पूरा करने में अपने आपको नियोजित करेंगे। अपनी मनोव्यथा को कम करने के लिए इस चिंतन का प्रयोग करें कि मुझे आचार्य प्रवर के द्वारा सौंपे गये कार्यों को पूरा करना है।

आचार्य महाश्रमण ने कहा कि मुनि का कर्त्तव्य है समता का उपदेश देना। उपदेश देना सरल है पर कठिन परिस्थितियों में समता रखना कठिन है। तेरापंथ धर्मसंघ के सामने कठिन स्थितियां है। जहाँ गुरु शिष्य का आत्मीय संबध होता है वहाँ समता न रख पाना कोई बड़ी बात नहीं है। गुरु के विरह को सहना बड़ा कठिन होता है। भगवान महावीर के निर्माण होने पर गणधर गौतम भी विचलित हो गये थे। उन्होंने कहा कि जितनी समता की साधना बढेगी उतनी ही वीतरागता नजदीक आयेगी।

आचार्य महाप्रज्ञ के पास बचपन से रहने वाले एवं सरदारशहर में प्रवासित मुनियों में ज्येष्ठ मुनि सुमेरमल सुदर्शन ने कहा कि आचार्य महाप्रज्ञ की कृपा नहीं होती तो मैं जीवन में आने वाले संघर्षों में कहाँ खो जाता कुछ पता नहीं। उन्होंने कहा कि आचार्य महाप्रज्ञ ने तेरापंथ के सभी आचार्यों के कीर्तिमानों को लांघ दिया है। आगम मनीषी मुनि महेन्द्र कुमार ने कहा कि आचार्य महाप्रज्ञ अमर थे, अमर हैं और अमर रहेंगे।

जीवन विज्ञान प्रभारी मुनि किशनलाल ने भी अपनी श्रद्धांजलि व्यक्त की। मुनि कुमार श्रमण ने सम्पूर्ण देश-विदेश के प्रतिष्ठित महानुभावों की मिली संवेदनाओं का पठन किया। आचार्य महाप्रज्ञ के संसार पक्षीय पड़पोते मुनि योगेश कुमार, मुनि जितेन्द्र कुमार, बाल मुनि मश्दुकुमार, साध्वी जिनप्रभा, साध्वी पीयुषप्रभा, जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय की कुलपति समणी डॉ. मंगलप्रज्ञा, समणी नियोजिका समणी मधुरप्रज्ञा, समणी प्रतिभा प्रज्ञा, जैन विश्व भारती के अध्यक्ष सुरेन्द्र चौरड़िया, जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष चैनरूप चिण्डालिया आदि ने अपनी भावांजलियां प्रस्तुत कीं। समणीवृंद ने महाप्रज्ञ अष्टकम् के द्वारा मंगलाचरण किया। कार्यक्रम का संचालन मुनि मोहजीत कुमार ने किया।

स्मृति सभा का तीसरा दिन

सरदारशहर, 13 मई। आचार्य महाश्रमण ने कहा कि एक महान विभूति के जाने से यहाँ सबको कष्ट की अनुभूति हो रही है पर देवलोक में उनका स्वागत, अभिनन्दन हो रहा है। यह एक द्वंद्व है। इस द्वंद्वात्मक युग में समता का अभ्यास करें। आचार्यश्री श्रीसमवसरण में आयोजित आचार्य महाप्रज्ञ की स्मृति सभा के तीसरे दिन श्रद्धालुओं को संबोधित कर रहे थे।

स्थानीय विधायक अशोक पींचा ने कहा कि मानव उत्थान की सोचने वाले महामानव का जाना सबके हृदय को सूना कर गया है। उस महामानव महाप्रज्ञ की कृपादृष्टि मेरे ऊपर सदा बरसती थी। गांधी विद्या मंदिर के कुलपति मिलाप दूगड़ ने कहा कि आचार्य महाप्रज्ञ की मधुर मुस्कान विरोधियों के विरोध को चूर-चूर कर देती थी। दुगड़ ने अंतिम दिन प्रवचन के पश्चात् हुए आचार्य महाप्रज्ञ के दर्शनों की कहानी को प्रस्तुत किया। नगर भाजपा महामंत्री गिरधारी पारीक, बीकानेर के कृपापात्र श्रावक मूलचन्द बोथरा, सुमतिचन्द गोठी, कन्हैयालाल छाजेड़ ने श्रद्धांजलि अर्पित की।

मुख्य नियोजिका साध्वी विश्रुतविभा ने स्वरचित गीत को साध्वी समुदाय के साथ प्रस्तुत किया। ''महाप्रज्ञ की जय हो'' नामक गीत आचार्य महाप्रज्ञ के व्यक्तित्व को परिभाषित कर रहा था। 45 वर्षों से आचार्य महाप्रज्ञ की सेवा में रहने वाले मुनि राजेन्द्र कुमार, मुनि चैतन्य कुमार, मुनि अभिजीत कुमार, मुनि मलयज, साध्वी उज्जवलरेखा, साध्वी मुदित यशा, साध्वी गुप्तिप्रज्ञा, साध्वी संगीतप्रभा, समणी मुदितप्रज्ञा, समणी कुशलप्रज्ञा, समणी रोहितप्रज्ञा, उपासिका तारा दुगड़ ने अपने आराध्य को भावसुमन समर्पित किये। समणीवृंद ने महाप्रज्ञ अष्टकम से मंगलाचरण किया। कार्यक्रम का संचालन मुनि मोहजीतकुमार ने किया।

आचार्य महाप्रज्ञ का व्यक्तित्व महान् था

तोशाम। साध्वी यशोमती के सान्निध्य में युगप्रधान आचार्य महाप्रज्ञ की स्मृति सभा का आयोजन हुआ। साध्वी रचनाश्री ने संयोजकीय वक्तव्य में कहा वे इतने जनप्रिय इसलिए बने कि उन्होंने जन-जन का दुःख दूर करने हेतु आध्यात्मिक प्रयोग सुझाए। मुझे भी टमकोर की धरा में जन्म लेने का एवं आचार्य महाप्रज्ञ को संसारपक्षीय मामाजी कहने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। आज मैं उनकी पावन स्मृति में यही कहना चाहती हूं कि आप द्वारा प्रदत्त मार्गदर्शन जीवन में आलोक भरता रहे। राष्ट्रसंत के व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व की छाप इस दुनिया में तब तक रहेगी ''जब तक सूरज चांद रहेगा - महाप्रज्ञ का नाम रहेगा।'' अपनी अहिंसा यात्रा से विश्वशांति की अलख जगाते हुए उन्होंने आपस में भाईचारे का माहौल बनाया। वे वर्तमान युगीन समस्याओं के समाधानकर्ता थे। उनके अंतिम प्रवचन की ये पंक्तियां हैं ''जागतिक सभी समस्याओं का एकमात्र हल है अपने पर अपना संयम।'' साध्वी किरणमाला एवं साध्वी जयंतयशा ने गीत व विचार के माध्यम से श्रद्धा सुमन समर्पित किये।

ब्रह्मकुमारी बहन मंजू ने कहा महापुरुषों का जीवन प्रकाशकारी होता है, जरूरत है हम उस प्रकाश से अपने भीतर व्याप्त अंधकार को दूर करें। सनातन धर्म मंदिर के संचालक विनोद पुजारी ने कहा महाप्रज्ञजी ने जैन धर्म को जन धर्म बनाया था। विश्व का भाग्योदय था जो महाप्रज्ञ जैसे धर्मगुरु का नेतृत्व प्राप्त हुआ। स्मृति सभा में सभा के मंत्री नरेन्द्र जैन, अध्यक्ष पवन जैन, विमला जैन, ज्ञानशाला संचालिका कमलेश जैन एवं ज्ञानशाला के बच्चों ने अपनी हार्दिक श्रद्धांजलि भाषण, गीत एवं कविता के माध्यम से समर्पित की।

www.terapanthinfo.com

प्रज्ञा के महासूर्य को श्रद्धानत प्रणाम

रायकोट। साध्वी जिनबाला के सान्निध्य में आचार्य महाप्रज्ञ के आकस्मिक महाप्रयाण पर स्मृति सभा रखी गयी। इसमें रायकोट के सैकड़ों भाई-बहनों के अतिरिक्त अहमदगढ़, जगराओ, बस्सियां, बदनीकलां इत्यादि क्षेत्रों से समागत भाई-बहनों ने भाग लिया।

साध्वी जिनबाला ने कहा ज्ञानमयी गंगा, योगमयी यमुना एवं ब्रह्ममयी ब्रह्मपुत्र का त्रिवेणी संगम था आचार्य महाप्रज्ञ जी का उन्नत व्यक्तित्व। वे एक व्यक्ति नहीं, संपूर्ण संस्कृति थे, दर्शन, इतिहास और विज्ञान थे। आचार्य महाप्रज्ञ ने जिस प्रतिभा में परीक्षण प्रयोग और शिक्षा द्वारा सत्यम्, शिवम्, सौंदर्य को आत्मसात् किया था। आप सिद्धहस्त प्रवचनकार व अद्वितीय लेखक, चिंतक, दार्शनिक थे। वे करुणारस से अभिस्नात वीतराग कल्प चेतना के धारक थे। आचार्य महाप्रज्ञ ने साहित्य का अविरल स्रोत प्रवाहित किया। उनके द्वारा लिखित 300 से अधिक पुस्तकों में यदि प्रतिदिन एक पृष्ठ भी पढ़ा जाए तो जीवन की अनेक समस्याएं स्वतः समाहित हो सकती हैं।

गुरु के साथ सदा अभेद का जीवन जीने वाला वह व्यक्तित्व अष्टमाचार्य कालूगणी एवं नवमाधिशास्ता आचार्य तुलसी के कर्तृत्व का जीवंत निदर्शन था। साध्वी जिनबाला ने ''ओ प्रज्ञा के महासूर्य! तुम क्षण भर में क्यों अस्त हो गये'' कविता द्वारा पूरी सभा को आप्लावित कर दिया। इस अवसर पर साध्वीश्री द्वारा रचित ''महायोगी कहां से लाएं'' गीत का सामूहिक संगान किया।

कार्यक्रम का शुभारंभ रायकोट की गायिका साक्षी जैन के मंगलाचरण से हुआ। इस स्मृति सभा में समागत एस.एस. जैन सभा के अध्यक्ष ललित जैन ने आचार्य महाप्रज्ञ को सम्पूर्ण जैन समाज की महान हस्ती बताते हुए अनेक संस्मरणों को सुनाया। आत्मानन्द जैन मूर्तिपूजक समाज की ओर से पूर्व प्रधान अनन्त जैन ने कहा महाप्रज्ञ जैसा महापुरुष सदियों सहस्राब्दियों बाद जन्म लेता है। उनका विपुल साहित्य संपूर्ण मानव जाति को नूतन दिशाएं देने वाला है।

इस अवसर पर अहमदगढ़ से समागत संजीव जैन, जगराओं से अश्विनी जैन, ज्ञानशाला के नन्हें-मुन्ने अनेक बालक-बालिकाओं, महिला मंडल रायकोट, युवक मंडल से महावीर जैन, स्थानकवासी युवक मंडल से अनिल जैन, एस.एस. जैन सभा के मंत्री धर्मवीर जैन, आत्मानंद सभा के प्रधान प्रकाश जैन ने आचार्य महाप्रज्ञ के प्रति अपनी श्रद्धांजलि समर्पित की।

इस अवसर पर साध्वी चेतनाश्री, साध्वी लाभवती, साध्वी ज्योतियशा, साध्वी कोमलप्रभा ने अपने आराध्य को हार्दिक भावों का अर्ध्य समर्पित करते हुए भावांजलि अर्पित की।

कार्यक्रम का संयोजन डॉक्टर हरीश जैन ने किया। रायकोट के जागरूक श्रावक-श्राविका बृजलाल, मनोज जैन, विजय जैन, अरविन्द जैन, राजरानी जैन, विमला जैन, अनिता जैन, अंजू जैन इत्यादि ने कार्यक्रम को सफल बनाने में सराहनीय श्रम रहा। कार्यक्रम में सैकड़ों भाई-बहनों ने भाग लिया।

महाप्रज्ञ का आभामंडल पवित्र था

बीदासर, 13 मई। समाधि केन्द्र बीदासर में साध्वी प्रमिलाश्री, साध्वी सुदर्शनाश्री के सान्निध्य में आचार्य महाप्रज्ञ की स्मृति सभा का आयोजन विशाल जनमेदिनी के मध्य किया गया। मंगलाचरण साध्वीवृंद ने किया।

केन्द्र व्यवस्थापिका साध्वी सुदर्शनाश्री ने कहा उस महासुमेरू को मेरा प्रणाम जिन्होंने प्रेक्षाध्यान, जीवन विज्ञान, अणुव्रत के द्वारा संघ को ऊंचाइयां प्रदान की। समाधि केन्द्र व्यवस्थापिका साध्वी प्रमिलाश्री ने कहा आचार्य महाप्रज्ञ का आभामंडल पावन पवित्र था। जो भी उनकी सन्निधि में आता वह उन्हें अपना गुरु मानता था।

जिला कांग्रेस कमेटी के उपाध्यक्ष मेघराज सांखला, भाजपा मंडल अध्यक्ष पूर्व पालिका अध्यक्ष राजकुमार सोनी, सभा के अध्यक्ष सम्पतमल बैद, महिला मंडल की अध्यक्ष शांति देवी बैंगाणी, कन्या मंडल की संयोजिका समता सिंघी, डालमचंद चौरड़िया, जिला अणुव्रत समिति के अध्यक्ष चोथमल बोथरा, राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के तहसील संघ चालक जनार्दन तिवारी, ब्राह्मण समाज के अध्यक्ष श्रीराम शर्मा एडवोकेट, अणुव्रत समिति के मंत्री दीनदयाल प्रजापत, पार्षद महराज उलहसन, कांग्रेस के नेता धर्मानंद सोनी, शिवराज शर्मा, साध्वी गुणश्री, साध्वी रायकंवर, साध्वी सोम्यप्रभा, नेमाराम, साध्वी अजीतप्रभा, साध्वी मनीषाप्रभा, साध्वी आस्थाश्री, साध्वी चांदलता, साध्वी पुनीतयशा ने आचार्य महाप्रज्ञ को नैतिकता के महापुंज, शांतिदूत एवं करुणा की प्रतिमूर्ति बताया।

इस अवसर पर अध्यात्म जगत के महासूर्य को अनेक वक्ताओं ने गीतिका, भाषण व मुक्तक के द्वारा श्रद्धासिक्त भावों के साथ भावांजलि अर्पित की।

कार्यक्रम में मोहनलाल चोरड़िया, महालचंद कोठारी, शान्तिलाल बैंगाणी, संचियालाल बैद, दानमल बांठिया, खुल्फअली इत्यादि ने भाग लिया। संयोजन सम्पतमल बैद ने किया।

मानवता का पाठ पढ़ाया

जोधपुर, 10 मई। साध्वी कमलप्रभा ने आचार्य महाप्रज्ञ के महाप्रयाण पर अपनी भावांजलि देते हुए कहा आचार्य महाप्रज्ञ का महाप्रयाण सम्पूर्ण विश्व के लिए अपूरणीय क्षति है। उन्होंने योग और विज्ञान के द्वारा नई चेतना का संचार किया। वे मानव जाति के लिए मिशाल थे। इस धरती पर अवतार के रूप में आए और अकस्मात चिरनिद्रा में लीन हो गये।

आचार्य महाप्रज्ञ एक ऐसे व्यक्तित्व थे, जिन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन मानवता, साम्प्रदायिक सौहार्द और अहिंसक वातावरण बनाने में समर्पित किया। मानवीय एकता के क्रम में आचार्यश्री ने वर्ष 2001 से अहिंसा यात्रा का प्रारंभ किया। अहिंसा यात्रा के माध्यम से आचायश्री ने राजमहलों से लेकर गरीब की झोंपड़ी तक अहिंसा का संदेश देकर मानवीयता का पाठ पढ़ाया। उन्होंने प्रेक्षाध्यान एवं जीवन विज्ञान के माध्यम से मानव मस्तिष्क की धुलाई करने में अपने श्रम व समय का सार्थक प्रयोग किया। उनकी शिष्याओं ने उनके संदेश को विदेशों तक पहुँचाया। इसी का सुपरिणाम है कि आज विश्व के कई विश्वविद्यालयों में उनकी शिष्याएं अपनी सेवाएं दे रही हैं। इस अवतारी पुरुष को दुनिया युगों-युगों तक याद करती रहेगी।

www.terapanthinfo.com

प्रज्ञा महापुरुष

पुर-भीलवाड़ा, 10 मई। एक महान अध्यात्म योगी, दिव्य योग साधक, ज्ञान व ध्यान साधना के गूढ़ व सूक्ष्म तत्त्ववेत्ता आचार्य महाप्रज्ञजी का अचानक देवलोक गमन मानवता के लिए दुःखद घटना है।

प्रज्ञा के अपार धनी, शासन के सर्वोच्च शिखर, करुणा, मैत्री, सौहार्द, सद्भावना व अहिंसा यात्रा के महानतम प्रणेता जन-जन के उन्नायक, प्रेक्षाध्यान, जीवन विज्ञान व अहिंसा प्रशिक्षण के उज्जवल नक्षत्र, राष्ट्र संत, मानवता के पुजारी, भक्तों के भगवान, पिछड़ों व दलितों के मसीहा, जरूरतमंदों को संबल प्रदान करने वाले, अणुव्रत अनुशासता को अणुव्रत समिति पुर, अहिंसा प्रशिक्षण केन्द्र पुर एवं मेवाड़ क्षेत्रीय बैरवा महासभा के समस्त कार्यकर्ताओं की ओर से श्रद्धा व भावभरी कोटि-कोटि श्रद्धांजलि। ये विचार बैरवा बन्धुओं ने अहिंसा प्रशिक्षण व बैरवा समाज के मध्य आयोजित स्मृति सभा में व्यक्त किए। आचार्य महाप्रज्ञ ने अपनी धवल सेना के साथ अहिंसा यात्रा के माध्यम से हजारों-हजारों लोगों को व्यसनमुक्त बना, अस्पृश्यता निवारण के लिए मानवता व नैतिकता का संदेश दिया। गुरुदेव का यह संदेश युगों-युगों तक अमर रहेगा। बैरवा समाज के संस्कारित लोग सदैव आपके ऋणी रहेंगे।

विश्व के विलक्षण संत

रतनगढ़, 12 मई। स्थानीय गोलछा ज्ञान मंदिर में प्रातः 9 बजे साध्वी संयमश्री के सान्निध्य में राष्ट्रीय संत आचार्य महाप्रज्ञ के देवलोक गमन पर श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया।

स्थानीय विधायक राजकुमार रिणवां ने महाप्रज्ञ के व्यक्तित्व पर प्रकाश डालते हुए कहा धर्म की रक्षा एवं कल्याण के लिए संतों का अवतार होता है। आचार्यश्री न केवल जैन धर्म के अपितु सम्पूर्ण मानवजाति के आचार्य थे। स्थानीय उपखंड अधिकारी के.के. गोयल ने कहा महाप्रज्ञ के बताये गये आदर्शों पर हम स्वयं चलें तथा अपनी संतति को भी चलायें।

श्रद्धांजलि सभा में हनुप्रसाद महर्षि, संतोष बाबू इन्दौरिया, वैद्य बालकृष्ण गोस्वामी, पूनमचंद बैद, शिक्षाविद चम्पालाल उपाध्याय, साधक भंवरलाल मूंधड़ा तथा महिला मंडल की मंत्री मंजू पटावरी ने भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा अहिंसा यात्रा प्रवर्तक आचार्य महाप्रज्ञ विश्व के विलक्षण संत, प्रेक्षाध्यान के आविष्कारक, अणुव्रत अनुशासता तथा आध्यात्मिक जगत के सूर्य थे।

प्रजापति ब्रह्मकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय की स्थानीय शाखा की प्रभारी बहिन सुप्रभा ने कहा उनके सत्य व अहिंसा के सिद्धांतों को अपनाना ही सच्ची श्रद्धांजलि है।

सभा में रायचंद बैद, नथमल धारीवाल, सज्जनकुमार बैद, भीकमचंद दुगड़, रमेश बैद, रणजीत दूगड़, हनुमानमल धाडेवा, सीताराम स्वामी, ओमप्रकाश इन्दौरिया, निर्मल कुमार तातेड़, सुभाष बैद, विजय सिंह आंचलिया, उम्मेद सिंह बीका, भीखमचंद आंचलिया, ताड़केश्वर पुरोहित, लक्ष्मीपत बैद, राजेश हींगड़, राहुल व तरूण आंचलिया, हंसराज हीरावत, विजयसिंह दुगड़, राजकुमार बैद, जुगराज हीरावत, महेन्द्र बैद, नौरतमल दूगड़, गणपत पीपलवा, छतरमल बैद, महावीर प्रसाद ने श्रद्धांजलि अर्पित की। संचालन साध्वी सहजप्रभा ने किया।

महान व्यक्तित्व

खेराकलां, 11 मई। साध्वी चंद्रकला के सान्निध्य में प्रज्ञापुरुष आचार्य महाप्रज्ञ की स्मृति सभा का आयोजन किया गया।

साध्वी चन्द्रकला ने कहा आचार्य महाप्रज्ञ का व्यक्तित्व महान् था उनका कर्तृत्व ओजभरा था। वे परम पुरुषार्थी धर्मसंघ के दशवें आचार्य थे। उनका गुरु के प्रति अद्भुत समर्पण था। उन्होंने समर्पण और अनुशासन से ही इतनी महानता हासिल की। विद्वता को प्राप्त किया। अष्टमाचार्य कालूगणी से संयमरत्न प्राप्त किया। आचार्य तुलसी से अकूत ज्ञान खजाने को पाया। प्राकृत, संस्कृत, हिन्दी भाषा पर अधिकार प्राप्त कर जैन आगमों का गहन ज्ञान पाया। आगम संपादन का महान् गुरुत्तर कार्य संपादित किया। प्रेक्षाध्यान पद्धति के द्वारा आपने जैन ध्यान प्रणाली को उजागर किया। अहिंसा यात्रा के माध्यम से आपने हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई सभी को जाति सम्प्रदाय से ऊपर उठाकर भाईचारा मैत्री समता का पाठ पढ़ाया। आज उस महान आत्मा के अदृश्य हो जाने पर पूरे विश्व में एक रिक्तता का अहसास हो रहा है। हम उस परम पवित्र आत्मा को शत-शत श्रद्धांजलियां समर्पित करते हैं।

साध्वी विकासप्रभा ने आचार्यश्री की शिक्षाओं को अपनाने का संकल्प दोहराया। साध्वी प्रतिभाश्री ने कहा आचार्य महाप्रज्ञ की महानता को शब्दों में बांधना सूर्य को दीपक दिखाना होगा। अतः उनकी दिखाई राह पर जीवन समुन्नत बनाते रहें यही संकल्प करती हूँ।

पहले आओ : पहले पाओ

नई दिल्ली। आदर्श साहित्य संघ दिल्ली द्वारा प्रकाशित साप्ताहिक विज्ञप्ति संघ के गजट के रूप में जानी जाती है। यह केन्द्रीय गतिविधियों का साप्ताहिक मुखपत्र है। आचार्य महाप्रज्ञ के सान्निध्य में संपन्न होने वाले सभी कार्यक्रमों का प्रतिदिन का विवरण, संघीय आदेश-निर्देश, सूचनाएं इत्यादि को लेकर विज्ञप्ति हर सप्ताह अपने पाठकों तक पहुँचती है। विज्ञप्ति हर परिवार में पहुँचे, इस उद्देश्य से आदर्श साहित्य संघ ने सीमित समय के लिए (2500 नये सदस्य बनाने हेतु) आजीवन सदस्यता अभियान शुरू किया है। यह अभियान मर्यादा महोत्सव से प्रारंभ हो गया है। अगर आप विज्ञप्ति के सदस्य नहीं हैं अथवा वार्षिक सदस्य हैं तो मात्र 1100 रुपये देकर आजीवन सदस्य (पंद्रह वर्ष हेतु) बन सकते हैं। आजीवन सदस्यता शुल्क आदर्श साहित्य संघ के बैंक खाता संख्या 0133000100368359 (पंजाब नेशनल बैंक) में जमा कर रसीद की फोटो कॉपी अपने नाम और पूर्ण पते (पिनकोड सहित) के साथ हमारे शिविर कार्यालय अथवा केन्द्रीय कार्यालय अणुव्रत भवन, 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-110002 को भिजवाएं।

विनम्रः

बच्छराज कठोतिया — मंत्री

नोरतनमल दूगड़ — अध्यक्ष

विश्व का कल्याण करती रहेगी महाप्रज्ञ की आत्मिक ऊर्जा : स्वामी रामनिवास

लाडनूं, 12 मई। जैन विश्व भारती एवं उसके सम्बद्ध विश्वविद्यालय के तत्वावधान में जैन विश्व भारती परिसर में आचार्य महाप्रज्ञ स्मृति सभा का आयोजन किया गया। स्मृति सभा में रामस्नेही सम्प्रदाय के संत स्वामी रामनिवास महाराज ने आचार्य महाप्रज्ञ को दार्शनिक जगत का श्रेष्ठतम संत बताते हुए कहा आचार्यश्री ने आत्म-साक्षात्कार किया था। ऐसे संत के हृदय से निकली स्फुर्णाएं, ऊर्जाएं समूचे विश्व का कल्याण करने वाली होती हैं। वे सदेह हमारे बीच मौजूद नहीं हैं, लेकिन उनकी आत्मिक ऊर्जाएं हमेशा जगत का कल्याण करती रहेंगी। पाबोलाव सिद्ध हनुमान धाम के महन्त कमलेश्वर भारती ने उन्हें अहिंसा का साक्षात् स्वरूप बताते हुए कहा आचार्य महाप्रज्ञ ने जो काम किया है, वैसा कार्य अहिंसा और शांति के क्षेत्र में दूसरा नहीं कर सकता। शहर काजी सैयद मोहम्मद अयूब अशरफी ने कहा वो ऐसे चिराग थे, जिनके विचारों की रोशनी सारी दुनियां को हमेशा रोशन करती रहेंगी। सेवा केन्द्र व्यवस्थापिका साध्वी काव्यलता ने आचार्य महाप्रज्ञ को आगम विशेषज्ञ बताते हुए कहा कि वे बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। अहिंसा, शांति, सद्भाव और करुणा की वे साक्षात मूर्ति थे। उपखंड अधिकारी नारायणलाल रेवाड़ ने आचार्य महाप्रज्ञ को महामानव की उपमा देते हुए कहा वे शांति के दूत थे, आतंकवाद व भौतिकवाद की समस्याओं से जूझते इस युग में उनके उपदेशों और बताए हुए मार्ग को अपनाना आवश्यक बन गया है।

जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय की कुलपति समणी डॉ. मंगलप्रज्ञा ने कहा आचार्यश्री का मानना था कि भूखे को अहिंसा का उपदेश देना पाप है। आचार्य महाप्रज्ञ के मन में कभी भी निषेधात्मक भाव नहीं आ पाते थे। वे क्षमा की प्रतिमूर्ति थे।

जैन विश्व भारती के अध्यक्ष सुरेन्द्र चौरड़िया ने आचार्य महाप्रज्ञ की भावनाओं को अभिव्यक्त करते हुए उन्हें पूरा करने की जरूरत जताई।

प्रारंभ में जिला कलेक्टर डॉ. समित शर्मा के संदेश का वाचन जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय के कुलसचिव जे.पी.एन. मिश्रा ने किया। स्मृति सभा में प्रकाश बैद, जैन विश्व भारती के उपमंत्री विजयसिंह चौरड़िया, थानाधिकारी राजेन्द्र सिंह बेनीवाल, ऑल इंडिया लॉयर्स यूनियन के जिला संयोजक एडवोकेट बजरंगलाल चोयल, जैविभा विश्वविद्यालय के अहिंसा एवं शांति विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. बच्छराज दूगड़, पूर्व पालिकाध्यक्ष बच्छराज नाहटा, प्रो. जगतराम भट्टाचार्य, विश्व हिन्दू परिषद् के अध्यक्ष सीताराम गौतम, राजस्थान पत्रकार परिषद के जिला महामंत्री जगदीश यायावर, ओसवाल पंचायत के सरपंच नवरतनमल बैद, युवक परिषद के मंत्री ललित वर्मा, डॉ. शांता जैन, माधव महाविद्यालय के राजेन्द्र चारण, राजस्थान तकनीकी विश्वविद्यालय के डॉ. गुलाबनबी सिसोदिया, नागौर केन्द्रीय सहकारी बैंक के अध्यक्ष जगन्नाथ बुरड़क, नगरपालिका उपाध्यक्ष विजयकुमार भोजक, साध्वी राकेशकुमारी, साध्वी रामकुमारी इत्यादि ने स्मृति सभा को संबोधित करते हुए आचार्य महाप्रज्ञ के विचारों को निरंतर क्रियान्वित करने की एवं अपने जीवन में उतारने की आवश्यकता को उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि बताया। जैन विश्व भारती के उपमंत्री विजयसिंह चौरड़िया, पूर्व मंत्री भागचंद बरड़िया एवं नगर की विभिन्न संस्थाओं के प्रतिनिधि, क्षेत्र के सभी विद्यालयों, शैक्षणिक संस्थानों, चिकित्सालयों आदि के प्रतिनिधि भी उपस्थित थे एवं दिवंगत आत्मा के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित की। जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय के दूरस्थ निदेशालय के निदेशक डॉ. आनंदप्रकाश त्रिपाठी ने आचार्य महाप्रज्ञ के जीवन के महत्त्वपूर्ण पहलुओं पर प्रकाश डालते हुए अंत में सभी के प्रति आभार ज्ञापित किया।

मानव जाति के मसीहा

रतिया, 12 मई। साध्वी तेजकुमारी के सान्निध्य में आचार्य महाप्रज्ञ की स्मृति सभा का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में स्थानकवासी समाज के अनेक गणमान्य महानुभाव उपस्थित थे। एस.एस. जैन सभा के मंत्री ने कहा आचार्य महाप्रज्ञ केवल तेरापंथ के ही आचार्य नहीं थे अपितु पूरे जैन समाज के आचार्य थे, इतना ही नहीं पूरी मानव जाति के मसीहा थे। ऐसी महान आत्मा का चले जाना एक अपूरणीय क्षति है।

आचार्य सुदर्शन मुनि की शिष्याएं साध्वी सुचारु म.सा., साध्वी सुवृति म.सा, स्थानीय रतिया सभा भवन में पधारीं एवं अपनी संवेदना प्रकट की। साध्वी दार्शनिक प्रभा व मननशीला (गणमुक्त) ने पधारकर खेद प्रकट किया और कहा कि हमारे भी गुरु आचार्य महाप्रज्ञ हैं। जैन-अजैन आदि अनेक लोगों ने इस अवसर पर अपने विचारों की अभिव्यक्ति दी। साध्वी नीतिप्रभा ने अपनी स्वरचित कविता के द्वारा अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की।

साध्वी शशिप्रज्ञा ने कहा हम आचार्य महाप्रज्ञ से दीक्षित हैं। आचार्य महाप्रज्ञ ही हमारे दीक्षा व शिक्षा गुरु हैं। हमें अपने गांव के गौरव पर नाज है, किन्तु अचानक ऐसा सुनकर वाणी मूक हो गयी, कानों को सहसा विश्वास नहीं हुआ। ऐसे महान् आचार्य की स्मृति करते हुए रिक्तता की अनुभूति हो रही है। दिवंगत आत्मा के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए मंगल कामना करते हैं कि उनकी आत्मा सिद्धत्व को प्राप्त हो।

साध्वी पुण्यदर्शना ने गीतिका के माध्यम से विचार रखते हुए कहा आचार्य महाप्रज्ञ जन्मजात योगी थे। अतीन्द्रिय ज्ञान के धारक थे। उनकी कर्तृत्व क्षमता बेजोड़ थी। ऐसे आचार्य जिनके बारे में गुरुदेव तुलसी ने लिखा है कि सात पीढ़ियों में जो काम नहीं हुआ वह काम महाप्रज्ञ ने किया। ऐसी महान आत्मा की आज हम स्मृति कर रहे हैं। उनकी आत्मा परमात्मा बने।

साध्वी सत्यवती ने अपने भाव व श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा तेरापंथ का महान सूर्य अस्त हो गया। जिन्होंने सम्पूर्ण विश्व को प्रकाशित किया, दुनियां उनके अवदानों को याद करेगी। साध्वी तेजकुमारी ने भी अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की।

दिव्य पुरुष के श्रीचरणों में शत्-शत् नमन

बैंगलोर, 13 मई। मुनि जिनेशकुमार के सान्निध्य में अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य की 'स्मृति सभा' पैलेस ग्राउण्ड स्थित प्रिन्सेस अकादमी में आयोजित की गयी। इस स्मृति सभा में अनेक राजनैतिक, धार्मिक व सामाजिक गणमान्य व्यक्तियों ने आचार्य महाप्रज्ञ को श्रद्धांजलि अर्पित की।

मुनि जिनेशकुमार ने अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा काल के भाल पर स्वस्तिक उकेरने वाले सिद्धपुरुष का नाम है आचार्य महाप्रज्ञ। वे भारतीय संस्कृति के द्योतक व साधना की जीवंत मूर्ति थे। उनमें भगवान् महावीर की समता, बुद्ध की करुणा, ईसा मसीह का प्रेम, भिक्षु की वाणी, जयाचार्य की स्थिरता, महात्मा गांधी का शरीर व आचार्य तुलसी की आत्मा थी। उनके व्यवहार में मानवीय मूल्यों का समावेश था। वे योगी, मनस्वी, कुशल प्रशासक व महान् साहित्यकार थे। उनकी सन्निधि में हिन्दू, मुस्लिम, सिख ईसाई सभी जाति, धर्म, वर्ग के लोग समान रूप से आते थे। ऐसे शिखर पुरुष के महाप्रयाण से राष्ट्र को बहुत बड़ी क्षति हुई है, उनके द्वारा दी गयी शिक्षाओं को अपने जीवन में उतारेंगे तथा उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी। मुनिश्री ने कर्नाटक सरकार से आग्रह किया कि महाप्रज्ञ के जीवन विज्ञान को पाठ्यक्रम में शामिल किया जाए।

आदिचुनचुनगिरि मठ के मठाधीश जगदगुरु श्रीश्री बालगंगाधर स्वामी ने श्रद्धांजलि देते हुए कहा कि आचार्य महाप्रज्ञ का मार्गदर्शन पूरे राष्ट्र के लिए था। आचार्य महाप्रज्ञ को समूची मानवता के कल्याण हेतु विभिन्न अवदानों के लिए युगों तक याद किया जाएगा।

श्रमण संघीय उपप्रवर्तक मुनि सुरेशकुमार ने कहा आचार्य महाप्रज्ञ ने समाज को तोड़ना नहीं जोड़ना सिखाया। वे संत के साथ दार्शनिक व युगदृष्टा भी थे।

मानव उत्थान सेवा समिति के शाखा प्रभारी महात्मा सौम्यानन्द ने कहा आचार्य महाप्रज्ञ के बताए मार्ग पर चलने से ही मानवता को बचाया जा सकता है। यही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी। मुनि सुबोधकुमार ने श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए आचार्य महाश्रमण द्वारा दिये गये संदेश का वाचन किया। शिवरात्री देशी केन्द्र के स्वामी द्वारा भेजी संवेदना का भी वाचन किया गया।

कर्नाटक सरकार के गृहमंत्री श्री वी.एस. आचार्य ने कहा आचार्य महाप्रज्ञ की प्रगतिशील विचारधारा ने राष्ट्र के समग्र विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। वे भारतीय संस्कृति के अग्रदूत थे। आचार्यश्री के विचारों में अध्यात्म एवं विज्ञान का अद्भुत समन्वय था। 90 वर्ष की उम्र में भी वे सक्रिय होकर धार्मिक क्षेत्र में वैचरिक क्रांति के लिए प्रयासरत थे। वे सही मायने में सच्चे राष्ट्र संत थे।

समाज कल्याण मंत्री डी सुधाकर ने कहा आचार्य महाप्रज्ञ की शिक्षाएं सम्पूर्ण मानव जाति के लिए थी। उन्होंने सभी के कल्याण के लिए काम किया। लोकसभा सदस्य पी.सी. मोहन ने कहा कि आचार्य महाप्रज्ञ ने मानव कल्याण व अहिंसा के क्षेत्र में अनेक कार्य किए। इस अवसर पर प्रदेश भाजपा कोषाध्यक्ष ने मुख्यमंत्री के संदेश का वाचन किया।

इस अवसर पर प्रो. राधाकृष्णन, राजस्थान पत्रिका के संपादकीय प्रभारी नंदकिशोर तिवारी, दिगंबर समाज के सुरेन्द्र हेगड़े, अमृतलाल भंसाली, जुगराज सोलंकी सहित सैकड़ों महानुभावों ने अपनी भावांजलि व्यक्त की। आभार व्यक्त हीरालाल मांडोत ने एवं संचालन मुनि परमानन्द ने किया।

श्रद्धा सुमन

आचार्य महाप्रज्ञ न केवल एक जैनाचार्य थे अपितु तत्त्व-दृष्टा, परम विशिष्ट ध्यान योगी एवं सूक्ष्म जगत के अन्वेषक थे। वे प्रतिक्षण जाग्रत थे तथा भीतर स्थित जीवन के गहन रहस्यों से लबालब विशाल समुद्र में गोता लगाते रहे। उन पर राष्ट्रसंत तुलसी जैसे प्रखर एवं तेजस्वी आचार्य का वरदहस्त था। उनकी गुरुभक्ति अद्वितीय, गहनतम एवं अनुकरणीय थी। ध्यान द्वारा वे आत्मा की गहराई तक पहुंचे, उन्होंने सत्य का स्पर्श किया और अनुभूतियों को अभिव्यक्त किया। हमने भारतीय परंपरा के एक युगद्रष्टा को खो दिया है। विद्वता और विनम्रता से ओत-प्रोत आचार्यश्री ने प्रेक्षाध्यान, जीवन विज्ञान और अहिंसा दर्शन से सम्पूर्ण मानव समाज को नवीन दिशा बोध दिया। आचार्य महाप्रज्ञ ने गहन ज्ञान, दूरदृष्टि एवं प्रज्ञा से सम्पूर्ण विश्व को आलोकित किया। अहिंसा प्रणेता के जीवन में विनय और समर्पण का अपने गुरु आचार्य तुलसी के प्रति अद्भुत संयोग था। ऐसे महामानव का अनायास चले जाना जैन समाज की ही नहीं, अपितु सम्पूर्ण मानव जाति के लिए अपूरणीय क्षति है।

कांकरोली (राजसमंद)
10-05-2010

मुनि आनंदकुमार 'कालू'

www.terapanthinfo.com

मुनि सुधाकर की केन्द्रीय मंत्रियों से भेंट वार्ता : आचार्य महाप्रज्ञ दिव्य संत

दिल्ली, 7 मई। अणुव्रत प्रभारी मुनि राकेशकुमार के निर्देशन में मुनि सुधाकर की कई विशिष्ट व्यक्तियों के साथ महत्वपूर्ण चर्चाएं हुईं। जिनमें मुख्य रूप से केन्द्रीय ग्रामीण राज्य मंत्री प्रदीप जैन, पूर्व केन्द्रीय जल संसाधन मंत्री व जम्मू कश्मीर से राज्यसभा के सदस्य शैफुद्दीन सोज, पूर्व केन्द्रीय कोयला मंत्री व राजस्थान से राज्यसभा सदस्य संतोष बागड़ोदिया, मध्यप्रदेश कांग्रेस के प्रभारी व राजस्थान से राज्य सभा सदस्य नरेन्द्र बुढाणिया, दिल्ली प्रदेश कांग्रेस के अध्यक्ष व लोकसभा सदस्य जयप्रकाश अग्रवाल, एडिशनल सेक्रेटरी मिनिस्ट्री ऑफ सांख्य क्रियान्वयन पंकज जैन।

पूर्व केन्द्रीय मंत्री शैफुद्दीन सोज ने आचार्य महाप्रज्ञ द्वारा लिखित 'परिवार के साथ कैसे रहें' पर चर्चा करते हुए कहा कि पश्चिमी संस्कृति के बढ़ते प्रभाव के कारण संयुक्त परिवार प्रणाली छिन्न-भिन्न हो रही है। पारिवारिक हिंसा के आंकड़े तेजी से बढ़ रहे हैं। ऐसी परिस्थिति में आचार्यजी ने इस पुस्तक को लिखकर मानव जाति की महान् सेवा की। मैं स्वयं इसे पढूंगा व दूसरों को पढ़ने की प्रेरणा दूंगा। मुनि सुधाकर ने केन्द्रीय मंत्री को जानकारी देते हुए आचार्य महाप्रज्ञ के अवदानों, अहिंसा व अणुव्रत आंदोलन द्वारा चलायी जा रही गतिविधियों की जानकारी दी।

मुनि सुधाकर ने पूर्व कोयला मंत्री संतोष बागडोदिया से मुलाकात कर अणुव्रत आंदोलन द्वारा चलाए जा रहे पर्यावरण सुरक्षा अभियान पर चर्चा करते हुए कहा पर्यावरण में बढ़ता दूषित प्रदूषण मानव जाति के लिए खतरे का सूचक है। जंगलों की कटाई, जल प्रदूषण, वायु प्रदूषण विकास की नहीं बल्कि विनाश की निशानी है। बागडोदिया ने मुनिश्री के विचारों पर सहमति प्रकट करते हुए कहा मैं आचार्य महाप्रज्ञ को दिव्य संत के रूप में देखता हूं। जब-जब उनसे मिला हूं, तब-तब मुझे नई शक्ति और ऊर्जा मिली है। मैं पर्यावरण की सुरक्षा पर केन्द्रीय सरकार का ध्यान जरूर खींचूंगा। दिल्ली प्रदेश अणुव्रत समिति के सदस्यों ने अणुव्रत साहित्य, पानी-बिजली-पर्यावरण के पोस्टर एवं स्टीकर भेंट किए।

इसी दिन दिल्ली प्रदेश कांग्रेस के अध्यक्ष जयप्रकाश अग्रवाल के निवास पर मुनि सुधाकर ने मुलाकात की। मुनिश्री ने आचार्य महाप्रज्ञ एवं डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम द्वारा लिखित पुस्तक 'दी फैमिली एंड नेशन'' की पृष्ठभूमि पर प्रकाश डाला। जयप्रकाश अग्रवाल ने अणुव्रत आंदोलन के जन-जागरण के अभियान की जानकारी पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा आप लोग आचार्यश्री के निर्देशन में देश की महान सेवा कर रहे हैं। अणुव्रत ही हमें अणुबम की विभीषिका से बचा सकता है।

राज्यसभा सदस्य नरेन्द्र बुढानिया ने कहा अणुव्रत आंदोलन इंसान को सही इंसान बनाना सिखाता है। अणुव्रत का कार्य प्रशंसनीय व अनुमोदनीय है। पानी एवं बिजली के छोटे-छोटे संदेशों से ही इनकी सुरक्षा व संवर्धन संभव है। बुढ़ाणिया ने कहा यह मेरा सौभाग्य है कि मुनिश्री मेरे निवास स्थान पर पधारे हैं। संतों का मार्गदर्शन हमारे पथ को प्रशस्त व सुगम बनाता है। सभी स्थानों पर आचार्य तुलसी एवं आचार्य महाप्रज्ञ के नाम का अतिशय प्रभाव देखने को मिला। इन संगोष्ठियों में मीडिया प्रभारी शीतल बरड़िया, अणुव्रत समिति दिल्ली प्रदेश के कार्यकर्ता उपस्थित थे।

दिल्ली प्रदेश अणुव्रत समिति का जन-जागरण अभियान

दिल्ली। दिल्ली प्रदेश अणुव्रत समिति के कार्यकर्ताओं ने मोमासर में गुरुदर्शन किये। आचार्यश्री ने कार्यकर्ताओं को अपना आशीर्वाद प्रदान किया था।

पश्चिम विहार में 21 रेजिडेंट वेलफेयर एशोसिएशन की फेडरेशन बैठक में अणुव्रत आचार संहिता का बोर्ड दिल्ली प्रदेश अणुव्रत समिति द्वारा फेडरेशन के पदाधिकारियों को सौंपा गया। फेडरेशन के अध्यक्ष सुरेन्द्र चौधरी, महामंत्री सी.पी. अवस्थी, उपाध्यक्ष डी.आर. वर्मा और अन्य पदाधिकारियों ने इस अभियान से जुड़ने की बात कही। प्रकाश भंसाली एवं डालमचंद बैद ने अणुव्रत की जानकारी दी। गजेन्द्र दुधेड़िया व ललित सामसुखा का सराहनीय श्रम रहा।

विश्व पृथ्वी दिवस पर दिल्ली प्रदेश अणुव्रत समिति के कार्यकर्ताओं ने पश्चिमी दिल्ली के व्यस्ततम चौराहा पीर (पश्चिम विहार) व मधुबन चौक (पीतमपुरा) पर अणुव्रत आचार संहिता के लगभग 500 पेम्फ्लेट, पृथ्वी बचाओ व पानी बचाओ के लगभग 600 स्टीकर और पर्यावरण, अर्थशास्त्र के फोल्डर बांटे तथा एक बड़ा बैनर शाम तक चौराहे पर लगाकर लोगों को जागरूक किया। पीरागढ़ी चौक पर प्रकाश भंसाली, कमल बैंगानी, श्यामलाल जैन, ललित सामसुखा, देशराज जैन, विपिन जैन, विवेक बैंगानी, रायकंवर बैद, सरोज भंसाली, समता भंसाली की सहभागिता रही। वहीं मधुबन चौक पर राजेश खींवसरा, अभय सिंघी, सुरेश बरमेचा, निर्मल सेठिया, सुरेन्द्र नाहटा, सुरेन्द्र मालू, हरीचन्द जैन, मंजू बोथरा, गुलाब बैद का सराहनीय श्रम रहा।

इसी क्रम में सनातन धर्म मंदिर बी-ब्लॉक में आयोजित भागवत कथा के बीच अणुव्रत आचार संहिता का बोर्ड अणुव्रत प्रतिनिधियों ने मंदिर समिति के प्रधान एवं सचिव आई.के. मिनोचा को सौंपा। भागवत कथा वाचक केशवजी महाराज ने अणुव्रत समिति को अपनी बात रखने का मौका दिया। अणुव्रत महासमिति के पूर्व अध्यक्ष डॉ. महेन्द्र कर्णावट ने अणुव्रत की विस्तार से जानकारी दी। केशवजी महाराज ने अणुव्रत के संकल्पों को सम्पूर्ण प्राणी जगत के लिए उपयोगी बताते हुए अपनी कथाओं में भी इनका उल्लेख करने की बात कही। कार्यक्रम में जी.एल. नाहर, डॉ. बी. एन. पांडेय, बाबूलाल दूगड़, प्रकाश भंसाली, कमल बैंगानी की प्रमुख उपस्थिति रही।

साध्वी यशोधरा के सान्निध्य में विद्या भारती स्कूल सूर्यनगर में 2000 बच्चों की उपस्थिति में अणुव्रत आचार संहिता बोर्ड विद्यालय के प्रधानाचार्य को सौंपा गया। साध्वीश्री ने बच्चों को अणुव्रत के संकल्प कराये एवं प्रेक्षाध्यान के प्रयोग करवाये। इस अवसर पर बाबूलाल दूगड़, प्रकाश भंसाली, आचार संहिता बोर्ड के प्रायोजक विकास डागा एवं डॉ. कुसुम लूणिया उपस्थित थे।

www.terapanthinfo.com

www.terapanthinfo.com

मानवीय एकता एवं साम्प्रदायिक सौहार्द का संदेश

कोलकाता 12 मई। विश्व के महान संत आचार्य महाप्रज्ञ के महाप्रयाण पर कोलकाता सभा के तत्वावधान में साध्वी कनकश्री के सान्निध्य में श्रद्धांजलि सभा का आयोजन हुआ।

साध्वी कनकश्री ने अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा ऋषि-मुनियों के पवित्र देश भारत में बीसवीं सदी के दूसरे दशक में दो-दो आध्यात्मिक विभूतियों ने जन्म लिया। सन् 1914 में आचार्य तुलसी और सन् 1920 में आचार्य महाप्रज्ञ जन्मे। इन दोनों युग-पुरुषों ने अपनी साधना, तपस्या और आध्यात्मिक चिंतन से विश्व चेतना को प्रभावित किया। सत्य, अहिंसा, नैतिकता, मानवीय एकता और साम्प्रदायिक सौहार्द का संदेश दिया। आचार्यश्री महाप्रज्ञ ने अपने अलौकिक नौ जीवन वसंतों से दो-दो सदियों को उपकृत और आलोकित किया है।

साध्वी कनकश्री ने प्रज्ञा पुरुष आचार्य महाप्रज्ञ को एक कालजयी महापुरुष बताते हुए कहा मैंने अपने आराध्य गुरु से जीवन दृष्टि, अध्ययन दृष्टि, साहित्य सृजन की दृष्टि और अध्यात्म के रहस्यों को पहचानने की दृष्टि प्राप्त की है। ऐसे गुरुओं का मिलना परम सौभाग्य का विषय है। आचार्य महाप्रज्ञ के यशस्वी उत्तराधिकारी आचार्य महाश्रमण धर्मसंघ के 11वें आचार्य हैं। वे तुलसी महाप्रज्ञ की अनुपम कृति हैं। उनकी आध्यात्मिक अनुशासना संघ, समाज और मानवता के लिए वरदायी सिद्ध होगी।

साध्वीवृंद ने साध्वी कनकश्री द्वारा रचित भावपूर्ण गीतिका ''प्रज्ञा की ज्योति जलाई रे, महाप्रज्ञ भगवान..... मैत्री की धार बहाई रे महाप्रज्ञ भगवान' का संगान कर काव्यात्मक रूप से अपनी भावांजलि अर्पित की। कार्यक्रम का शुभारंभ साध्वी कनकश्री एवं साध्वीवृंद द्वारा महामंत्र नवकार के उच्चारण के साथ हुआ। सूरत-नवसारी से आई मैत्री बैद द्वारा 'महाप्रज्ञ अष्टकम्' का संगान किया गया।

कार्यक्रम में सुनिता झंवर (बी.जे.पी.), निर्मला पांडे (तृणमूल), रतन बैद (बी.जे.पी.), साधुमार्गी जैन संघ के अभयराज सेठिया, प्रो. नारायण जैन एवं समाज की केन्द्रीय व स्थानीय संस्थाओं के पदाधिकारियों ने अपनी भावांजलि प्रस्तुत की। महासभा के प्रधान ट्रस्टी राजेन्द्र बच्छावत, , जय तुलसी फाउंडेशन के प्रधान न्यासी सुरेन्द्र दूगड़, ट्रस्टी गुलाबमल भंडारी, कोलकाता सभा के भोजराज बैद, भंवरलाल बैद, बनेचंद मालू, नारीरत्न तारादेवी सुराणा, जतन बैंगानी, नवरतनमल सुराणा, जंवरीलाल नाहटा, बिमल बैद, सुशील चोरड़िया, दिलीप मरोठी, ईश्वरचंद छल्लाणी, हंसराज बैंगानी, मूलचंद डागा, महावीर प्रताप दूगड़, तरुण सेठिया ने महाप्रज्ञ को भावभीनी श्रद्धांजलि दी। संचालन कुलदीप मणोत ने किया।

करुणा-समर्पण के पर्याय

राजसमंद 10 मई 2010। अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाप्रज्ञ के महाप्रयाण पर गांधी सेवा सदन में साध्वी कंचनकुमारी 'उदयपुर' के सान्निध्य में स्मृति सभा का आयोजन हुआ। साध्वीश्री ने श्रद्धा सुमन समर्पित करते हुए कहा आचार्यप्रवर ने समाज को जो दिशा दी है वह सदैव स्मरणीय रहेगी। वे समर्पण, करुणा एवं निर्मलता के पर्याय थे।

गांधी सेवा सदन के संचालक आबिद अली ने कहां- साम्प्रदायिक एकता की दिशा में आचार्यश्री ने जो कार्य किया उससे भारत देश मजबूत बना। प्रधानाचार्य प्रभेन्द्र त्रिपाठी ने शोक प्रस्ताव का वाचन करते हुए कहा नैतिक मूल्यों को आगे बढ़ाने की दिशा में महाप्रज्ञजी के प्रयास स्तुत्य है। स्मृति सभा अणुव्रत गीत से प्रारंभ हुई । सभा उपरांत बाल निकेतन में अवकाश रहा।

आध्यात्मिक-वैज्ञानिक व्यक्तित्व के प्रणेता

लाडनूं, 14 मई। अणुव्रत समिति, लाडनूं के तत्वावधान में विजयसिंह बरमेचा की अध्यक्षता में अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाप्रज्ञ स्मृति सभा का आयोजन किया गया। अणुव्रत समिति के अध्यक्ष ओमप्रकाश सोनी ने स्वरचित कविता के माध्यम से महाप्रज्ञ के बहुआयामी व्यक्तित्व पर प्रकाश डालते हुए उन्हें इस सदी का गांधी बताया।

समिति के मंत्री डॉ. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने कहा महाप्रज्ञ अध्यात्म के शिखर पुरुष होते हुए उन्होंने आध्यात्मिक एवं वैज्ञानिक व्यक्तित्व के निर्माण पर बल दिया। उनका मानना था कि नये मानव का जन्म आध्यात्मिक एवं वैज्ञानिक रूप में होना चाहिए। उनके इस विचार से प्रभावित होकर पूर्व राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम ने कई बार आचार्यश्री के दर्शन किए थे। दोनों महान विभूतियों ने मिलकर 'फेमिली एण्ड नेशन' पुस्तक लिखी। डॉ. त्रिपाठी ने आगे यह भी बताया कि आचार्य महाप्रज्ञ ने युग को अहिंसा प्रशिक्षण का एक अनूठा मॉडल प्रदान किया है। उपाध्यक्ष अली अकबर रिजवी ने कहा कि महाप्रज्ञ पूर्णतया असाम्प्रदायिक थे और मानव धर्म अणुव्रत को विस्तारित करने का जीवन पर्यंत प्रयत्न किया। उपमंत्री सीताराम टेलर ने महाप्रज्ञ के वैश्विक अवदानों की चर्चा करते हुए उन्हें वैश्विक विभूति की संज्ञा दी। जगमोहन माथुर ने भी एक गीत के माध्यम से अपने विचार व्यक्त किए। जे.पी. सिंह ने आचार्यश्री के सामाजिक अवदानों का उल्लेख करते हुए इन अवदानों के लिए उन्हें अमर बतलाया। विजयसिंह बरमेचा ने कहा आचार्यश्री की साधना, समता, संयम का कोई सानी नहीं। उनके जाने से एक युग का अवसान हो गया।

अध्यात्म की अनमोल धरोहर

राजसमंद, 11 मई। भिक्षु बोधि स्थल में मुनि तत्वरूचि 'तरूण' व साध्वी कंचनकुमारी के सान्निध्य में आचार्य महाप्रज्ञ स्मृति सभा का आयोजन हुआ। इसमें सर्व समाज तथा संस्थाओं के प्रमुख व्यक्तियों ने आचार्य महाप्रज्ञ को अपनी भावांजलि एवं श्रद्धांजलि अर्पित की। मुनि तत्वरूचि 'तरूण' ने कहा 'वो शमां क्या बुझे जिसे रोशन खुदा करे' आचार्य महाप्रज्ञ अहिंसा और करुणा के आलोक स्तंभ थे। वे विश्व अध्यात्म की अनमोल धरोहर थे। उन्होंने अपने क्रियाकलापों से समग्र विश्व को उपकृत किया। अणुव्रत, प्रेक्षाध्यान, जीवन विज्ञान, अहिंसा समवाय आदि मानवीय अवदानों से विश्व मानव युगों-युगों तक लाभान्वित होता रहेगा। सचमुच वे धरती के सच्चे सपूत और महामानव थे।

डॉ. महेन्द्र कर्णावट ने कहा आचार्य महाप्रज्ञ मानवीय संवेदना करुणा पुंज थे। उनके जाने से एक युग का अंत हो गया। पूर्व विधायक बंशीलाल खटीक ने कहा आचार्यश्री इंसान के रूप में देव और भगवान थे। शिक्षाविद् यमुनाशंकर दसोरा ने कहा आचार्य महाप्रज्ञ ऋतंभरा प्रज्ञा के धनी थे। उनका तीसरा नेत्र उद्घाटित था।

इस अवसर पर साहित्यकार चतुर कोठारी, सुंदरलाल लोढ़ा, गणपत धर्मावत, मांगीलाल, वीरेन्द्र महात्मा बिहारीलाल कावड़िया, मंजू बड़ोला, रमेश कुमार चपलोत, लता मादरेचा, अशोक डूंगरवाल, मदनलाल धोका, डॉ. मदनलाल सोनी, अनिल कुमार बड़ोला ने अपनी भावांजलि अर्पित की। आभार ज्ञापन मांगीलाल मादरेचा ने एवं संचालन लता मादरेचा ने किया

www.terapanthinfo.com

www.terapanthinfo.com

आचार्य महाप्रज्ञ स्मृति सभा

नई दिल्ली, 15 मई। मानवता के मसीहा, प्रेक्षाप्रणेता, अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाप्रज्ञ का 9 मई 2010 अपराह्न 2.55 पर सरदारशहर में महाप्रयाण हो गया। 15 मई 2010 को अणुव्रत भवन में मुनि राकेशकुमार के सान्निध्य में स्मृति सभा का आयोजन किया गया। इसमें दिल्ली की मुख्यमंत्री शीला दीक्षित, डॉ. श्याम सिंह 'शशि', डॉ. धर्मपाल सिंह मैनी, स्वामी चक्रपाणी, ज्ञानी रणजीत सिंह, प्रो. रतन जैन, कवि राकेश चैतन्य, धनराज बोथरा, सुशील जैन, चक्रेश जैन, विजयराज सुराणा, डॉ. बी.एन. पांडेय, डालमचंद बैद, वरिष्ठ पत्रकार सुदेश भूषण जैन, टोडरमल लालाणी की प्रमुख उपस्थित रही। मंगलाचरण साध्वीवृंद ने किया। संयोजक प्रमोद घोड़ावत ने प्रसंगवश एक घटना का उल्लेख किया। उन्होंने सभी वक्ताओं से अपने भावों को अतिसंक्षेप में प्रकट करने का अनुरोध किया। स्मृति सभा में विभिन्न वक्ताओं ने अपने भाव प्रकट किए उसकी संक्षिप्त झलक निम्न है

मुनि राकेशकुमार ने कहा जिन चरणों से हम विदाई लेकर आये, आज उनकी स्मृति सभा मना रहे हैं। यदि तुलसी नहीं होते, महाप्रज्ञ इस रूप में नहीं होते और यदि महाप्रज्ञ नहीं होते तो शायद तुलसी के स्वप्न इस रूप में साकार नहीं होते। गुरु-शिष्य इस तरह की विलक्षण जोड़ी इतिहास में देखने को नहीं मिलती।

मुनि ताराचंद स्वामी ने कहा 14 वर्ष का आचार्य काल अपूर्व रहा। आचार्यश्री शुरू से ही प्रयोगधर्मा रहे। उन्होंने अनेक विषयों पर प्रयोग किया। आचार्यश्री करुणा के अवतार थे। अपनी प्रज्ञा से पूरे धर्मसंघ को आप्लावित किया। अपने साधना काल में उन्होंने मुझे भी सहयोगी बनाया व आशीर्वाद दिया। ''महात्मा महाप्रज्ञ'' पुस्तक का आप सभी स्वाध्याय करें एवं उनके जीवन को आत्मसात करें, यही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

साध्वी यशोधरा ने कहा आज का यह माहौल बहुत गमगीन है। हम उस अमृत महापुरुष की स्मृति कर रहे हैं, जिनके व्यक्तित्व को किसी भी पैमाने से नापा नहीं जा सकता। उन्होंने जो अवदान दिये एवं अनन्त-अनन्त उपकार किये, उनकी गणना नहीं की जा सकती है। मेरु पर्वत पर जाने वाला पक्षी जैसे स्वर्णिम हो जाता है, वैसे ही महाप्रज्ञजी की आभा में आने वाला आभामंडित हो जाता है।

दिल्ली की मुख्यमंत्री शीला दीक्षित ने कहा सभी दिल्ली निवासियों की ओर से मैं आचार्यश्री को नमन करती हूं। उनके जाने से शून्यता आई है। उनके द्वारा दिये गये उपदेशों पर चलने से व्यक्तिगत, सामाजिक व राजनीतिक जीवन में हमारा विकास होगा। उनकी स्मृति स्थायी बनाने हेतु, कोई विचार, सुझाव आया तो दिल्ली सरकार चिंतन व निर्णय लेगी।

पद्मश्री डॉ. श्यामसिंह 'शशि' ने कहा आचार्यश्री प्रज्ञा पुरुष, महापुरुष व विश्व पुरुष थे, उनके उपदेशों को आचरण में उतारकर धन्य हो जायेंगे। वे जीवन भर मानव मूल्यों को बढ़ाने का प्रयास करते रहे। अणुव्रत का सिद्धांत एवं महाप्रज्ञ साहित्य विश्व की सभी भाषाओं में प्रकाशित होना चाहिए।

ज्ञानी रणजीत सिंह मुख्य ग्रंथी ने कहा आचार्य महाप्रज्ञ का साहित्य मानवता का मार्गदर्शन करता रहेगा। मैं समस्त सिख समुदाय की ओर से श्रद्धा सुमन अर्पित करता हूं।

प्रो. रतन जैन महामंत्री जैन महासभा ने कहा मैंने जब शाम को आचार्यश्री के महाप्रयाण का समाचार सुना तो मेरे पैरों तले की जमीन खिसक गई। सूर्य आज मध्याह्न में ही छिप गया। इतिहास में वर्णित उन महान आचार्यों को नहीं देखा, परन्तु उस शृंखला के आचार्य महाप्रज्ञ को देखा। आचार्य तुलसी ने जो सपने देखे, आचार्य महाप्रज्ञ ने उन्हें पूरा किया। आने वाली सदियां उन्हें याद करेंगी।

स्वामी चक्रपाणी अध्यक्ष हिन्दू महासभा ने कहा आचार्य महाप्रज्ञ के देवलोक गमन का समाचार सुनकर दिल दहल गया। उन्होंने केवल जैन समाज को ही नहीं, अपितु विश्व समाज को संदेश देने हेतु अवतरण किया।

कवि राकेश चेतन्य ने कहा 10 वर्ष की उम्र में संन्यास लेना और 80 वर्षों के तप भरे जीवन में जीवंत प्रतीक बने रहे।

मुनि सुमतिकुमार ने कहा हम भाग्यशाली हैं, जिन्होंने आचार्य तुलसी व आचार्य महाप्रज्ञ के युग को देखा। आचार्य महाप्रज्ञ एक योग्य उत्तराधिकारी आचार्य महाश्रमण के रूप में दे गये हैं, जिनको दो आचार्यों के अनुभव का अटूट खजाना प्राप्त है।

वरिष्ठ पत्रकार सुदेश भूषण जैन ने कहा जैन समाज ने अपना सबसे बड़ा स्तंभ व दार्शनिक चिंतक, महान व्यक्तित्व खो दिया है।

चक्रेश जैन ने कहा आचार्य महाप्रज्ञ ने जितना बड़ा कार्य किया है, उसकी तुलना नहीं की जा सकती। वह जैन समाज के अम्ब्रेला थे।

धनराज बोथरा अणुव्रत न्यास के मुख्य ट्रस्टी ने कहा आचार्यश्री ने विपुल साहित्य देकर ज्ञान की गंगा बहाई, जो एक अद्भुत देन है।

मांगीलाल सेठिया ने कहा आचार्यश्री ने शांति के धर्मोपदेश से वास्तविक धर्म को बड़ी सरलता से प्रस्तुत किया। उनके सान्निध्य में बैठने मात्र से शांति का अनुभव होता था।

विजयराज सुराणा महामंत्री अणुव्रत महासमिति ने कहा सूर्य हर रोज अस्त होता है, लेकिन 9 मई को महासूर्य अस्त हो गया, जो मानवता को सच्ची राह दिखाता था।

प्रकाश भंसाली मंत्री दिल्ली प्रदेश अणुव्रत समिति ने कहा अपने अंतिम समय से 3 घंटे पूर्व ही उन्होंने अणुव्रत के लिए विशेष संदेश व चिंता प्रकट की। हम सभी अणुव्रत के कार्य को आगे बढ़ायेंगे, यही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

टोडरमल लालाणी अध्यक्ष जैन महासभा ने कहा आचार्य यशोविजयजी एवं आचार्य उमा स्वाती के बाद ऐसा महान यशस्वी आचार्य महाप्रज्ञ कई शताब्दी बाद पैदा हुआ जिनके अनेक अवदान मानवता को महान देन है।

तेजकरण सुराणा अध्यक्ष अणुविभा ने कहा सागर में नहीं उसकी गहराइयां, झुक गया गगन, ऐसे महापुरुष धरा पर आये।

संजय खटेड़ उपाध्यक्ष अभातेयुप ने कहा प्रज्ञा के प्रखर महासूर्य ने जन-जन को आलोकित किया। अभय सिंघी, निर्मल कुमार सेठी ने भी भावभीनी श्रद्धांजलि व्यक्त की।

इस अवसर पर मुनि देवार्यकुमार, मुनि दीपकुमार, मुनि आदित्य, साध्वी आनन्दप्रभा, मुनि सुधाकर, के.के. जैन, डालमचंद बैद, सलेखचंद जैन, सुशीला पटावरी ने अपनी भावनाएं गीत एवं भाषणों के माध्यम से व्यक्त कीं। बहुत से संभागियों को समयाभाव के कारण अवसर नहीं मिला। आभार ज्ञापन नरपत मालू ने व संयोजन प्रमोद घोड़ावत ने किया।

www.terapanthinfo.com